सिन्धुपति महाराजा दाहिरसेन के १३०० वें बलिदान दिवस पर

शत् शत् नमन

शंकरलाल नेभूमल उत्तम चन्दानी

अन्जु विला, बंगला नं.15

आदर्श सोसायटी, आठवां गेट, सूरत

दूरभाष-2660106 मो. 98251 30337

ॐ

सुशिक्षा ! सुस्वास्थ्य !! सुसंस्कार !!!

भारतीय शिक्षा समिति, जयपुर से सम्बद्ध एवं आदर्श शिक्षण संस्थान चूरू द्वारा संचालित विद्यालय –

श्री जेठमल जीवराज सेखानी माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर
श्री जेठमल जीवराज सेखानी प्राथमिक आदर्श विद्या मन्दिर
श्री संजय - वर्षा सेखानी शिशुवाटिका आदर्श विद्या मन्दिर

बीदासर - 331501 (चूरू) 01560-262742/262221

जो संस्कार युक्त व राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत शिक्षा एवं शानदार परीक्षा परिणाम देने वाली संस्थाएं हैं जहाँ –

1. अनुभवी, प्रशिक्षित एवं समर्पित आचार्यों द्वारा अध्यापन।
2. निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा व दुर्बल-अभावग्रस्त समूह के लिए 25% निःशुल्क।
3. अंग्रेजी शिक्षण की उत्तम व्यवस्था व स्पोकन इंग्लिश की अतिरिक्त कक्षाएं।
4. विद्यालय वाहन की उत्तम व्यवस्था।
5. अत्याधुनिक खेल उपकरणों द्वारा खेल एवं खेल मैदान की श्रेष्ठ व्यवस्था।
6. आधुनिक तकनीकी प्रोजेक्टर एवं कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण।
7. वर्तमान युग की माँग एवं भारतीय संस्कृति से युक्त व्यावहारिक जीवन शिक्षा।
8. मनमोहक उद्यान सहित आकर्षक भव्य एवं सुविधा युक्त भवन।
9. बस्ते के बोझ रहित खेलमय शिशु शिक्षा।
10. आधुनिक नवाचारों सहित मनोवैज्ञानिक तरीके से शिक्षण।

सत्र 2012-13 हेतु सीमित स्थानों पर प्रवेश प्रारम्भ

अध्यक्ष
जनार्दन तिवारी

व्यवस्थापक
महेश शर्मा
वैद्य गोपाल मिश्रा

प्रधानाचार्य
पदेन मंत्री
सुनील महर्षि

प्रबन्ध कारिणी समिति, बीदासर

श्री गुरुजी छात्रावास

उ.मा.आदर्श विद्या मन्दिर, राजापार्क, जयपुर

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

दूरभाष : 2615249, 2616971, 9799394656

छात्रावास प्रवेश सूचना सत्र 2012–13

कक्षा 9 वीं एवं 10 वीं में रिक्त स्थानों की पूर्ति हेतु छात्रावास में प्रवेश परीक्षा के आधार पर दिये जायेंगे तथा कक्षा 11 में अंकों के आधार पर प्रवेश किये जायेंगे। पंजीयन शुल्क 300 रु तथा छात्रावास शुल्क 41,000/– वार्षिक।

हमारी विशेषताएँ

1. उच्च योग्यता प्राप्त अनुभवी आचार्य।
2. संस्कार युक्त शिक्षा पर विशेष आग्रह।
3. नियमित खेलकूद, एवं योग कक्षायें।
4. खेल कूद हेतु विस्तृत मैदान एवं योग्य प्रशिक्षक।
5. सुरूचिपूर्ण एवं पौष्टिक अल्पाहार एवं भोजन।
6. स्नेह पूर्ण पारिवारिक वातावरण
7. वन विहार एवं देश दर्शन कार्यक्रम।
8. एक एक बड़े कक्ष में 4 छात्रों को आवास सुविधा।
9. शैक्षिक उन्नयन हेतु अतिरिक्त कक्षाएँ।
10. स्पोकन इंगलिश की विशेष कक्षाऐं।
11. एन.सी.सी., एन.एस.एस. एवं अन्य सह शैक्षिक गतिविधियाँ।
12. श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम।

सत्र 2011–12

कक्षा	कुल छात्र	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	परिणाम
दशमी	108	54	44	9	99%
द्वादशी कला	43	23	20	–	100%
द्वादशी वाणिज्य	120	64	47	4	96%
द्वादशी विज्ञान	106	67	35	–	96%

सत्र 2011 कक्षा 10 में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र

भैया संजय चौधरी 93.00 %

भैया विवेक शर्मा 91.67 %

भैया शंकर लाल चौधरी 93.83 %

सन् 2010 के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा 10 में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र

भैया गौरव जोशी 94.33 %

भैया हर्षित सिंहल 94.00 %

भैया भारत सैनी 92.33 %

हर्षित लक्ष्यकार 90.50%

प्रधानाचार्य
रामानन्द चौधरी

अध्यक्ष
दामोदर दास मोदी

पाथेय

कण (पाक्षिक)

आषाढ़ (कृ.) १२ , २०६८

युगाब्द ५११४

१६ जून २०१२

वर्ष २८ अंक ५

सम्पादक

कन्हैया लाल चतुर्वेदी

❖

सहयोगी

मातादीन सिंह

मनोज गर्ग

❖

प्रबन्ध सम्पादक

माणकचन्द

सहायक

ओमप्रकाश

❖

व्यवस्थापक

रमाकान्त शर्मा

❖

पृष्ठ संयोजन

[illegible]शल रावत

❖

आवरण

राज ब्लॉक

❖

प्रकाशक

पाथेय कण संस्थान

'पाथेय भवन', बी-१९, न्यू कॉलोनी, जयपुर-३०२ ००१

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	₹ १००/-
१५ वर्षीय	१०००/-

प्रबन्धकीय कार्यालय

' पाथेय भवन', बी-१९,न्यू कॉलोनी, जयपुर- ३०२००१

दूरभाष : ०१४१-२३७४५९०

फैक्स : ०१४१-२३६८५९०

Website : www.patheykan.in

E-mail:- patheykan@gmail.com

।।ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते।। संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

इस अंक में...

११. भारतीय सीमा का सजग प्रहरी - *जानकी नारायण श्रीमाली*

१४. अरब खलीफाओं से सिन्ध का संघर्ष -*डॉ. रामगोपाल मिश्र*

१८. सिन्धु सम्राट वीर दाहिरसेन - *तेजभान शर्मा*

२५. पाकिस्तान में स्थित हिन्दू आस्था स्थल - *ओंकार सिंह लखावत*

३३. आग्नेय तीर्थ हिंगलाज -*सदाजीवत लाल चन्दूलाल*

३७. अमरवीर झूलेलाल - *गोवर्धन कृष्णानी*

४१. सिन्ध के प्रमुख संत एवं समाज सुधारक - *मातादीन सिंह*

४५. स्वतंत्रता संग्राम में सिंध का योगदान - *हीरो ठकुर*

४८. अमरी शहीद हेमू कालाणी - *सरल झाप्रटे*

५१. हर सिन्धी को संघी माना जाता था - *नवलराय बचाणी*

५४. सिन्ध की वर्तमान स्थिति - *ज्ञानदेव आहूजा*

अन्य

इतिहास गा रहा है

दाहरसेन स्मारक है राष्ट्र रक्षा का केन्द्र

भारतीय सिन्धु सभा

अखण्ड भारत-स्वप्न और यथार्थ

हे सिंधु ! माँ सुरसेविनी सिन्धु ! तेरे ही पवित्र तट पर हमारे प्राचीनतम वैदिक ऋषि-महर्षियों ने वेदों की प्रथम ऋचाओं का साम-गायन किया था। जिसके पुण्य पवित्र सलिल से हमने संध्या-वन्दन की, अर्घ्य दिया और जिसे असीम आदर से देवताओं में स्थान दिया , उस पर सुंदर-सुंदर काव्य-सुमनों की अंजलि अर्पित की, ऐसी पुण्य सलिला माँ सिन्धु-तुझे हम कैसे भुला दें? तीन चौथाई भारत स्वतंत्र हुआ है, मुक्त हुआ है। परन्तु मेरी सिन्धु नदी तथा सिन्धु प्रान्त छीन लिये गये। हम अपनी सिन्धु को भूल नहीं सकते। सिन्धु-रहित हिन्दू, अर्थात् अर्थ-रहित शब्द, निष्प्राण देह- यह सब असंभव है, व्यर्थ है।

- स्वातंत्र्यवीर सावरकर

A commercial hub
in the heart of
Pinkcity

Bharat
APARTMENT

SWAMI SHANTI PRAKASH BUILDERS (P) LTD.
SINCE 1993

Gordhan Asnani

PROMOTORS

Swami Shanti Prakash Builders (P) Ltd.

Site Office : G-1, Bharat Apartment,
New Colony, M.I. Road, Jaipur
Phone : 0141-4039102
Mobile : 98290-63888
E-mail : asnanibk@yahoo.com
Website : www.sspbuilder.com

मनोगत

वर्तमान में श्वेतवाराह कल्प के वैवस्तत मन्वन्तर का अट्ठाईसवाँ कलियुग चल रहा है और इस कलियुग का यह ५११४ वाँ वर्ष है। सृष्टि की उत्पत्ति से लगभग दो अरब वर्ष के विराट इतिहास में से अत्यंत अल्प काल का पाश्चात्य शैली में विधिवत् इतिहास लिखा गया है। पश्चिम के इतिहासकार तो दस हजार वर्ष से पहले पहुँच ही नहीं पाते और इन दस हजार वर्षों के इतिहास में भी भ्रामक धारणायें अधिक हैं और तथ्य कम हैं। भारत का इतिहास तो अधिकांश इतिहासकारों ने गलत और जान-बूझ कर गलत लिखा है। त्रासदी यह है, कि हीन-भावना से ग्रस्त तथाकथित भारत के भी ज्यादातर इतिहासज्ञों ने बिना अकल लगाये उसी इतिहास की नकल कर दी है। फिर भी कतिपय प्रयास सही दिशा में हुए हैं। जाने-माने विद्वान् आचार्य भगवतदत्त ने भारत का वृहत् इतिहास लिखा है और उसके पहले खण्ड में कलियुग प्रारम्भ होने के तेरह हजार वर्ष पहले अर्थात् आज से अठारह हजार वर्ष पूर्व से भारत का प्रामाणिक और तथ्यपरक इतिहास प्रस्तुत किया है।

महाभारत काल से आज तक का तो असंदिग्ध रूप से प्रामाणिक इतिहास अब उपलब्ध है। इस इतिहास के अनुसार लगभग छह हजार साल पहले भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में काम्बोज, बाह्लीक, मद्र, सिन्धु-सौवीर, गान्धार आदि राज्य वर्तमान काल के ईराक तक फैले हुए थे और ये सब वृहत्तर और सांस्कृतिक भारत के अभिन्न अंग थे। कुरुक्षेत्र के महासमर में उत्तर-पश्चिमी भारत के प्रत्येक राज्य ने भाग लिया था। सिन्धुराज जयद्रथ तथा मद्रराज शल्य तो जाने-पहचाने नाम हैं जो कौरव-पक्ष में थे। इस महासमर के बाद यादव-कुल में घमासान और उनका विनाश भी ऐतिहासिक घटना है। यादवों के आत्म-घाती संग्राम के बाद हलधर बलराम कच्छ के समुद्र तट से नौकाओं पर सवार हो पश्चिम की ओर निकल गये। सम्बन्धित कथा में बताया गया है कि शेषनाग के अवतार बलराम पुनः समुद्र में अपने नियत स्थान पर चले गये।

अब इस बात के पर्याप्त साक्ष्य मिले हैं कि दाऊ बलराम अपने साथियों के साथ समुद्री मार्ग से सऊदी अरब जाकर वहीं बस गये। मूसलों से हुए युद्ध से यादव कुल के पराभव के कारण बलराम के वंशज 'मूसल-मानव' कहलाये जो बाद में 'मुसलमान' बना। पैगम्बर हजरत के प्रादुर्भाव से पहले तक सऊदी अरब, ईराक और ईरान में शिव एवं विष्णु की पूजा होती थी और इन क्षेत्रों में बहुत बड़ी संख्या में श्री विष्णु और महादेव के मंदिर थे। पैगम्बर मोहम्मद के परिवार-जन भी मक्का में स्थित एक विशाल शिव-मंदिर में पुजारी थे। वही मन्दिर अब पवित्र काबा है जिसकी दीवारों पर अभी भी वैदिक संस्कृति के चित्र उकेरे हुए हैं। मन्दिरों की बहुतायत और मूर्तिपूजा से उपजे पाखण्ड के विरोध में ही हजरत मोहम्मद ने मूर्ति-पूजा का घोर विरोध किया था। बुत-परस्ती के जबर्दस्त विरोध के बाद भी इस्लाम में काबा के 'संगे अस्वद' अर्थात् पवित्र काले पत्थर की पूजा होती है। 'संगे अस्वद' को कुछ इतिहासकार विशाल शिवलिंग का एक हिस्सा मानते हैं, जब कि कुछ अन्य इसे शालिग्राम का रूप मानते हैं।

निष्कर्ष यह निकलता है कि आज से पाँच हजार वर्ष पहले तक उत्तर-पश्चिम में भारतीय सीमा ईराक तक थी तथा सऊदी अरब और पूर्वी अफ्रीका तक का क्षेत्र भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत था। जब सांस्कृतिक बंधन कुछ कमजोर हुआ तथा राक्षसी शक्तियाँ सर उठाने लगी तो हमारे देश की सीमा का संकुचन शुरु हो गया। स्थिति यहाँ तक हो गई कि ढाई हजार वर्ष पहले हमारी वायव्य सीमा काम्बोज और सीस्तान (आज के अफगानिस्तान तथा बलूचिस्तान) तक सिकुड़ कर रह गई। इन क्षेत्रों पर भी हमारे ही रक्त संम्बन्धियों के आक्रमण शुरु हो गये। पहले फारस का हमला हुआ, जिसका मुंह-तोड़ जवाब दिया गया। लेकिन दो सौ सालों में हमारा कुछ क्षेत्र हाथ से निकल गया। तत्पश्चात सिकंदर विश्व विजय के जनून में भारत में घुस आया। भारत की एकात्मता का ह्रास होने से उसे कुछ गान्धार नरेश आम्भि जैसे राष्ट्रद्रोही मिल गये, फलस्वरूप वह पंजाब तक आगे बढ़ आया। झेलम के तट पर महाराज पुरू ने सिकन्दर को धराशायी कर दिया और उसे वापस बेबीलोन लौटने को बाध्य होना पड़ा। लौटते हुए भी भारतीय तलवारों ने उसे ऐसा सबक सिखाया कि वह जीवित अपने घर नहीं लौट पाया।

यूनानियों के बाद शक, हूण और कुषाणों ने भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ का दुस्साहस किया। इन बर्बर हमलावरों का भी उत्तर-पश्चिमी सीमा पर जबर्दस्त प्रतिरोध हुआ। उक्त हमलावर कुछ आगे भी बढ़े, किसी-किसी ने मजबूत राज्य भी स्थापित किया, किन्तु प्रत्येक हमलावर को दाँत में तिनका दबाकर भारत से भागना पड़ा। जो नहीं भाग सके वे सदैव के लिये भारत के होकर रह गये। शक, हूण, कुषाण सभी ने हिन्दू संस्कृति की गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता को स्वीकारते हुए इसे अंगीकार किया और स्वयं को भारत का पुत्र कहलाने में गर्व का अनुभव किया।

इस्लाम के उदय के साथ परिस्थिति कुछ बदली। पैगम्बर हजरत मोहम्मद की शिक्षाओं का सशक्त कवच ओढ़ कर अरब के लोगों ने अपने साम्राज्य का विस्तार शुरु किया। प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान अनवर शेख ने इस्लाम को अरब राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद का वाहक माना है, जो यह है भी। एक साम्राज्यवादी ताकत के रूप में इस्लाम का तेजी से विस्तार □

□ हुआ और कुछ दशकों में ही सीरिया, ईराक, ईरान, मिस्र, पूर्वी और उत्तरी अफ्रीका, स्पेन आदि विशाल राज्य इस्लामी ताकतों के सामने नतमस्तक हो गये। इस प्रकार भारत की वायव्य दिशा की सीमा तक अरब साम्राज्य ने अपने पैर पसार लिये। उस समय भी आज के मकरान और सिन्ध तथा उत्तर में कपिशा और जाबाल याने गान्धार और कम्बोज (आज का पूरा अफगानिस्तान) तक भारत की सीमा थी।

भारत पर विदेशी आक्रमण इस वायव्य सीमा के उत्तर में हिन्दुकुश पर्वत श्रृंखला की ओर से हुए या मकरान और सिन्ध की ओर से हुए। सिन्ध पर जल मार्ग तथा स्थल मार्ग दोनों ओर से हमले किये गये। खलीफा के सिपहसालारों ने भी पहले हिन्दुकुश को पार कर काम्बोज प्रदेश की ओर से भारत पर आक्रमण की धृष्टता की और वहाँ कोई सफलता न मिलने पर सिन्ध की ओर रुख किया। सिन्ध में उस समय मौर्य वंश के पराक्रमी नरेश राय सहासी का शासन था। उनके निधन के बाद उनके निस्संतान होने के कारण उनके ब्राह्मण मंत्री चचराय ने शासन के सूत्र हाथ में लिये और उनके बाद पहले उनका अनुज तथा बाद में पुत्र धरषेण सिन्धु-सम्राट बने। धरषेण अर्थात् दाहिर सेन के समय खलीफा के बन्दे मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध की ओर आँख उठाई। वैसे राय सहासी के समय से ही सिन्ध पर अरबों के आक्रमण शुरु हो गये थे। **राय सहासी से दाहिर सेन के समय तक खलीफाओं के चौदह हमले सिन्ध पर हुए लेकिन हर बार खलीफाओं की शर्मनाक पराजय हुई।** सिन्ध के देवल (आज का कराची) बन्दरगाह के मार्ग से हुए प्रत्येक आक्रमण का भी मुँह-तोड़ उत्तर दिया गया तथा स्थल मार्ग से मकरान (बलूचिस्तान) की ओर से हुए हर हमले का भी करारा जवाब दिया गया।

जिन खलीफाओं के सामने बड़े-बड़े साम्राज्यों ने आठ-दस सालों में घुटने टेक दिये उनको सन् ६३६ से आगे ७५ वर्षों तक सर टकराने के बाद भी भारत में रंच मात्र भी सफलता नहीं मिली। आखिर ईस्वी सन् ७१२ में मोहम्मद बिन कासिम को छल-कपट तथा भारतीय बौद्धों के राष्ट्रद्रोह के कारण सिन्ध फतह करने में सफलता मिली। यह सफलता भी अल्पकालीन थी। दाहिर सेन के पुत्र जयसिंह ने बिखरी सेना को इकट्ठी कर कासिम को धर दबाया तथा युद्ध में उसके मारे जाने पर उसका शव खलीफा के पास भेज दिया।

कुछ ही वर्षों बाद कश्मीर के महाराजा ललितादित्य मुक्तापीड़ तथा मेवाड़ के बाप्पा रावल ने सम्पूर्ण सीमा प्रदेश से अरब हमलावरों का सफाया कर मकरान-अफगानिस्तान तक फिर से भारत का केसरिया ध्वज फहरा दिया। इसके बाद तीन सौ वर्षों तक किसी हमलावर की भारत की ओर देखने की हिम्मत नहीं हुई। यह सम्पूर्ण काल-खण्ड भारतीय इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ठ है। सिन्ध का जबर्दस्त संघर्ष तथा सिन्धुपति महाराजा दाहिर सेन का बलिदान इतिहास का प्रेरणादायी प्रसंग है। १६ जून सन् ७१२ को खलीफा के सैन्य से सिन्ध का युद्ध प्रारम्भ हुआ तथा २० जून को अपनों के विश्वासघात के कारण दाहिर-सेन वीरगति को प्राप्त हुए। उनके अप्रतिम बलिदान को तेरह सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं।

इसी अवसर पर पाथेय-कण का यह विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। जो इतिहासकार पूर्ण निष्ठा एवं प्रामाणिकता के साथ भारत के इतिहास को दुरस्त एवं तथ्यपरक करने में लगे हैं उन्हीं को यह अंक सादर समर्पित है।

–कन्हैया लाल चतुर्वेदी

कैलाश गोयल
महाराजा दाहिर सेन विशेषांक
के प्रकाशन पर
के.के. ग्रुप की ओर से
सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाऐं
9/56 गाँधी कैंपस, इचलकरंजी, महाराष्ट्र

मो. 9414323811
9460233911
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाऐं
वैद्य रामावतार भारती (आयुर्वेद चिकित्साधिकारी)
15, जगदम्बा कालोनी, 'अ' आगरा रोड, जयपुर 302031
विशेष अनुरोधः- गठिया वात, पत्थरी, गर्भाशय फाइब्रोइड (गाँठ), यौनरोग, उ.रक्तचाप, पौरुषग्रन्थिशोथ, एलर्जी इत्यादि रोगोंकी सफलता सेचिकित्सा

एक महारानी के अद्‌भुत आत्मोत्सर्ग की तेजस्वी गाथा
अब रंगीन चित्रकथा के रूप में
पाथेय कण संस्थान का प्रकाशन
हाड़ीरानी का बलिदान
लेखन व चित्रांकन- ब्रजराज राजावत
मूल्य २० /–
वितरक– ज्ञान गंगा प्रकाशन, बी १९, पाथेय भवन, जयपुर
दूरभाष :– ०१४१–२३७१५६३

सौर ऊर्जा उपकरणों के लिये सम्पर्क करें
सौलर स्ट्रीट लाईट, सौलर होम लाईट, सौलर पावर पैक, सौलर इन्वर्टर, सौलर पम्प,सौलर फैन,सौलर वाटर हीटर इत्यादि
ओ.पी.त्रिपाठी
आदित्य सोलर शॉप
''श्रीजी विला'' 5 H 18 महावीर नगर विस्तार योजना, सुभाष सर्किल, कोटा राजस्थान
Ph. 2332763 Fax-0744-2381612 Mob. 9829035763
Email: adityasolarshope@gmail.com
D.G.S.&.D Rate and सब्सिडी उपलब्ध है
राजस्थान के सभी जिला व तहसील स्तर पर डीलर बनाने हेतु सम्पर्क करें।

इतिहास गा रहा है

इतिहास गा रहा है,
दिन-रात गुण हमारा।
दुनियाँ के लोगों, सुन लो
यह देश है हमारा॥

इस पर जनम लिया है,
इसका पिया है पानी;
माता है यह हमारी,
यह है पिता हमारा॥

वह देवता हिमालय
हमको पुकारता है।
गुण गा रही है निशि-दिन
गंगा की शुभ्र धारा॥

पोरस की वीरता को
झेलम तू ही बता दे;
यूनान का सिंकदर
था तेरे तट पे हारा॥

उज्जैन फिर सुना दे,
विक्रम की वह कहानी,
जिसमें प्रकट हुआ था
संवत् नया हमारा॥

आता है याद रह-रह,
गुप्तों का वह जमाना-
सारे जहाँ पर छाया
वह स्वर्ण-युग हमारा॥

चित्तौड़, रायगढ़ और
चमकौर फिर गरज उठ।
सदियों लड़ा निरंतर
आजाद खूं हमारा॥

दी क्रांतिकारियों ने
अंग्रेज को चुनौती,
पल-पल प्रकट हुआ था
स्वातंत्र्य वह हमारा॥

हम इनको भूल जायें,
संभव नहीं कभी यह;
इनके लिए जियेंगे,
यह धर्म है हमारा॥

होगा भविष्य उज्ज्वल,
संसार में अनोखा,
बतला रहा है हमको,
यह संगठन हमारा॥

B.L.Poddar
(B.E.Chem)
M. 94224 15383

Satyam Lime Industries
Mfg.& Supplier of Burnt & Hydrated Lime
Prithvi-3, Sarvodaya Nagar
ICHALKARANJI-416 115 Dist : Kolhapur (M.S.)
Ph. 0230-2427774 Fax : 2438045, R 2434383

Ramavatar diliya 09448112837
Anilkumar diliya 09448128329
Dhanraj diliya 0 9448124134
Radhamohan diliya 09448137621

Shri Ambika Granites
Export & Manufacturers of
all type of granite Slabs & Tiles
K.I.A.D.B,N.H.-13, KUSHTAGI-584121 Dt. Koppal Tel: 08536-263295 (Fact.)
Near Shrinivas Talkies 77/3B, Hanamasagar Road, ILKAL-587125, Dt.: Bagalkot (Karnataka)
Email : ambika-granite@rediffmail.com

16 जून
2012

सिन्धुपति महाराजा दाहिरसेन के 1300 वें बलिदान दिवस

शत् शत् नमन

भगवान मनवानी

पार्षद वार्ड नं. 37 , जयपुर नगर निगम

भारतीय सीमा का सजग प्रहरी सिन्ध

जानकी नारायण श्रीमाली

(सिन्ध और उसके आगे के क्षेत्र रामायण काल से भारत के अंग रहे हैं। लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व विदेशियों के आक्रमण इस भू-भाग पर प्रारम्भ हुए। कुछ को मामूली सफलता भी मिली और सीमा क्षेत्र के कुछ भागों पर उनका अल्पकालीन शासन भी रहा। समय बीतने के साथ सभी हमलावर हिन्दू संस्कृति में आत्मसात हो गये तथा उनका पूर्ण भारतीयकरण हो गया। प्रस्तुत लेख में इसी इतिहास का लेखा-जोखा है -सं.)

रामायण काल में पश्चिम भारत के सीमा प्रदेश (वर्तमान अफगानिस्तान) में कैकय राज्य था जो भरत की माता कैकेयी का गृह प्रदेश था। राजा दशरथ के मरणोपरान्त भरत को लेने गए दूतों के साथ कैकय से वापसी की भरत की यात्रा में सम्पूर्ण पश्चिमी भारत का विशद वर्णन है। बाद में कैकय के समीप स्थित गांधार क्षेत्रवासियों द्वारा कैकय क्षेत्र को अस्थिर करने के प्रयत्न होने पर भरत ने वहां सुव्यवस्था स्थापित की और अपने दोनों पुत्रों पुष्कल और तक्ष के नाम पर क्रमशः पुष्कलावती (पेशावर) और तक्षिला (तक्षशिला) की स्थापना की। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के राजकुमारों लव और कुश के नाम पर इस क्षेत्र में लवपुर (लाहौर) तथा कुशपुर (कूसूर) स्थापित हुए। लक्ष्मण के पुत्र मधु के नाम पर मधुपुरी (मथुरा) बसाई गई। स्पष्ट है कि श्रीराम ने भारत के पश्चिमी सीमान्त की स्थिरता और समृद्धि को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की। **ऊपर उल्लिखित इन पांचों प्राचीन नगरों का वर्तमान के इतिहास में भी असाधारण महत्व है। ये पांचों पेशावर, तक्षशिला, लाहौर, कुसूर और मथुरा आज भी विश्व विख्यात हैं।**

महाभारत काल में मद्र (आज का बलूचिस्तान) नरेश शल्य की बहिन माद्री का विवाह हस्तिनापुर के सम्राट पांडु से हुआ था। माद्री से पांडु को नकुल और सहदेव दो पुत्र प्राप्त हुए थे। शल्य ने कौरवों के पक्ष में युद्ध किया था। गांधार नरेश शकुनि महाभारत के नीतिकार और योद्धा थे। शकुनि की बहिन गांधारी हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्र की पत्नी थी। गांधारी के दुर्योधन, दुःशासन आदि सौ पुत्र थे। **धृतराष्ट्र के जामाता सिन्धु-सौवीर नरेश जयद्रथ थे** (सौवीर सिन्ध से सटा अहिच्छत्रपुर अर्थात् नागौर तक का क्षेत्र माना जाता था)। जयद्रथ एक प्रसिद्ध योद्धा था। अन्य अनेक योद्धा इस क्षेत्र से युद्ध में उतरे थे। पश्चिमी सीमान्त से आगे के क्षेत्रों से भी योद्धाओं के महाभारत युद्ध में भाग लेने के उल्लेख प्राप्त होते हैं। इस प्रकार इस उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की भारत की मुख्य भूमि से प्रगाढ़ एकात्मता प्रमाणित होती है।

विदेशियों की आश्रय स्थली

यहां हम उथल-पुथल भरे उस कालक्रम में प्रवेश करना चाहते हैं जिसने आज से करीब तीन हजार वर्ष पूर्व से भारत के पश्चिम सीमा क्षेत्र को अस्थिर करना शुरु कर दिया था। इन तीन हजार वर्षों में हमें क्रमशः पीछे हटना पड़ा जिसकी परिणीति आज अफगानिस्तान, पाकिस्तान के निर्माण व कश्मीर समस्या के रूप में हमारे सामने है।

हमारे महाकाव्यों, पुराणों और पारसी ग्रंथ अवेस्ता में इस इतिहास के पर्याप्त प्रमाण प्राप्त होते हैं। हर्ष की बात है कि इन सन्दर्भ ग्रंथों का पाश्चात्य विद्वानों ने तर्क और विज्ञान सम्मत अध्ययन प्रारंभ कर दिया है। हमारे प्रमाणों के अनुसार वर्तमान ईरान, एशिया माइनर तथा आयोनियन ग्रीक धरा पर हिन्दूजन और उनकी संस्कृति छाई हुई थी। अवेस्ता के प्राचीनतम भाग **गाथा** में जरथुस्त्र कहते हैं- *'मुझे इन दुष्ट राजाओं से त्राण के लिए कौन देश शरण देगा।'* पश्चिमी विद्वान कर्जन कहते हैं-निश्चय ही जरथुस्त्र और उसके साथियों ने भारत में शरण ली। उल्लेखनीय है कि जरथुस्त्र फारस (वर्तमान ईरान) का महान् सुधारक था।

जरथुस्त्र से प्रारम्भ शरण का यह क्रम निरन्तर जारी रहा और इस्लाम के उदय के बाद तो शरणार्थियों की बाढ़ ही आ गई। सर्वस्व न्यौछावर करके भी अभ्यागत को शरण दी गई। फलतः युद्ध अनिवार्य होते चले गए।

भारत और फारस

भारत पर प्रथम आक्रमण फारस (वर्तमान ईरान) द्वारा किया गया था। अतः उस समय के भारत-फारस (पर्सिया) संबंधों को समझना उचित होगा। उस प्राचीन काल में हिन्दुस्थान और ईरान के बीच कोई स्पष्ट सीमा रेखा नहीं थी। मात्र कतिपय मान्यताएं थीं। दोनों क्षेत्रों में वैदिक संस्कृति और संस्कृत भाषा प्रतिष्ठित थे। पश्चिमोत्तर भारतीय क्षेत्र के कुभा, क्रमु और गोमती नदी घाटियों के प्रति भारतीयों के मन में वही श्रद्धा थी जो सरस्वती, सिन्धु और गंगा-यमुना के प्रति थी। दूसरी ओर फारसी (ईरानी) भी इन तीन नदी क्षेत्रों के प्रति श्रद्धा भाव रखते थे। अतः इस

अविभक्त भारत-ईरान सीमा और राज्य क्षेत्र का वर्णन अवेस्ता तथा प्राचीन पर्सियन साहित्य में प्राप्त होता है। वर्तमान कंधार का वर्णन भी अवेस्ता में प्राप्त होता है। सुदूर क्षेत्र, हरायावा (हेरात) और झारांका (सीस्तान का एक भाग) भी वैदिक संस्कृति से ओतप्रोत थे।

सम्राट साइरस (५५८-५३० ईसा पूर्व) का आक्रमण

हमारे पास इस आक्रमण के विश्वस्त अभिलेख हैं। वैदिक भारतीय और अवेस्ता के भारतीयों के बीच इस मध्यवर्ती सीमा क्षेत्र को लेकर संघर्ष हुआ। फारस के सम्राट साइरस ने इस क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया। स्वयं सम्राट ने सेना का नेतृत्व किया और प्रसिद्ध नगरी कपिशा (काफसान, काओशान या कुसान) को नष्ट कर दिया जो कि आज के काबुल के उत्तर में स्थित थी। साइरस ने बैक्ट्रिया (बाल्हीक प्रदेश) को भी जीता। फिर उसने राजपूताना के मरुस्थल को स्पर्श किया और दक्षिण पंजाब को जीता। साइरस के विरुद्ध सहायता करने के लिए पश्चिमोत्तर के हिन्दू शासकों ने तत्कालीन मगध सम्राट बिम्बसार को पत्र व दूत भेजा था।

पश्चिमोत्तर में युद्ध के दौरान एक भारतीय योद्धा के तीर से लगे घाव के कारण साइरस की मृत्यु हो गई। उल्लेखनीय है कि उस समय उस क्षेत्र में अष्टक, अश्वक और क्षुद्रक क्षत्रियों का शासन था। उसकी मृत्यु होते ही उस क्षेत्र के भारतीयों ने विदेशी जुए को उतार फैंका।

कुछ वर्षों बाद डेरियस के पुत्र जिरेक्सेस ने विशाल सैन्य दल के साथ भारत पर आक्रमण कर दिया। वह भारतीयों को फारसी मज़हब अपनाने के लिए बाध्य करने लगा । किन्तु शीघ्र ही सम्राट जिरेक्सेस के समक्ष बाधाओं का समुद्र लहराने लगा। भारतीयों ने दसों दिशाओं से उस पर आक्रमण प्रारंभ कर दिया तथापि अपने क्षत्रपों की सहायता से उसने अपने पिता के भारतीय साम्राज्य को फिर से अपने अधीन लेने में सफलता प्राप्त की।

कमोबेश चौथी शताब्दी तक फारसी साम्राज्य का पश्चिमोत्तर भारत के कुछ छोटे-मोटे क्षेत्रों में दबदबा बना रहा। पारसी सम्राटों के दरबार में भारतीयों की सम्मानित उपस्थिति और उपहार भेंट करने के उल्लेख प्राप्त होते हैं, किन्तु भारतीय जन अपनी संस्कृति और धर्म का निर्बाध पालन करते थे।

इन तीन-चार सौ वर्षों में साइरस या उसका कोई वंशज सिन्धु नदी के पार नहीं पहुंच सका। इसी प्रकार यूनानी विजेता सिकन्दर भी भारतभूमि में केवल उन स्थानों तक ही पहुंच सका, जहां तक पहले पारसी पहुँचे थे।

यूनान का सिकन्दर

भारत के उत्तर-पश्चिम भूभाग में स्थापित फारसी (पारसी अर्थात ईरानी) शासन को उखाड़ फेंकने के लिए सम्राट शिशुनाग के पुत्र काकवर्ण ने आक्रमण किया और वह गांधार तक जा पहुंचा। काकवर्ण ने गांधार के पारसी क्षत्रप को पराजित कर दिया किन्तु नगर (नगरकोट) दुर्ग पर अभियान के समय युद्ध में उसको अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी । किन्तु काकवर्ण के इस प्रबल आक्रमण से फारस साम्राज्य का विघटन प्रारंभ हो गया और स्थानीय जनजातियों और निवासियों ने अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में स्वयं को स्वतंत्र-संप्रभु घोषित कर दिया। काकवर्ण के बाद उसके ६ उत्तराधिकारी भी सीमा रक्षा में सजग रहे।

३२६ ईसा पूर्व (युगाब्द २७७६) में खैबर दर्रे को पार करते हुए सिकन्दर भारत में घुस आया। जब सिकन्दर भारत में पहुंचा तो तक्षशिला (पंजाब में रावलपिंडी के पास) के राजा आम्भि ने उसका स्वागत किया किन्तु मात्र एक-दो ही अन्य रजवाड़ों ने इस हेय उदाहरण का अनुकरण किया। जबकि गांधार (अफगानिस्तान), पंजाब और सिंध के अन्य राजाओं, गणराज्यों तथा छोटे-छोटे शासकों ने सिंकदर का डटकर मुकाबला किया। ये योद्धा भलीभांति जानते थे कि उनके जीतने की संभावना रंच मात्र भी नहीं है फिर भी उन्होंने हरसंभव उपाय से संघर्ष किया तथा घुटने नहीं टेके। यूनानी लेखकों ने इनकी वीरता और देश भक्ति की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

पुरू से युद्ध

झेलम और चिनाब के मध्यवर्ती क्षेत्र के शासक पुरू के साथ सिकन्दर का युद्ध एक महागाथा है। पौरव ने सिकन्दर के दूतों को सगर्व उत्तर दिया कि *'मैं आपसे अवश्य मिलूंगा किन्तु युद्धस्थल में।'* भीषण संघर्ष हुआ। रात के अंधेरे में धोखे से सिकन्दर की सेना ने नदी पार की। पौरव और उसका पुत्र बड़ी बहादुरी से लड़े। स्वयं पौरव के शरीर पर कई घाव लगे और वहं बन्दी बना लिया गया।

(अब यह प्रमाणित हो चुका है कि युद्ध में सिंकदर की हार हुई तथा उसे पुरू से सन्धि करनी पड़ी-सं.)

व्यास नदी की ओर बढ़ते समय सिकन्दर का कठ गण से युद्ध हुआ। इस भीषण युद्ध में १७००० कठ सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए और ७०,००० बन्दी बना लिए गए। इस युद्ध की भीषणता से सिकन्दर की सेना विचलित हो गई। सिकन्दर ने वापस लौटने का निर्णय किया। स्वदेश की ओर लौटते हुए सिकन्दर को पग-पग पर जूझना पड़ा । झेलम और चिनाब के संगम पर उसे मालव और क्षुद्रक गण संघों से लड़ना पड़ा। जम्मू में झेलम तट पर प्राप्त कतिपय प्रमाणों से भारतीय विद्वानों का मत बना है कि झेलम युद्ध के प्राणान्तक आक्रमण में सिकन्दर की मृत्यु हो गई और उसके सैनिकों ने सम्पूर्ण नरसंहार के भय से इस तथ्य को छुपा कर स्वदेश लौटना जारी रखा।

३२३ ई. पू. (युगाब्द २७७९) में सिकन्दर की मृत्यु होते ही चन्द्रगुप्त ने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से एक बड़ी सेना तैयार की और विजय अभियान पर निकल पड़ा। उसने सभी स्थानीय जन-जातियों, गणों आदि की सहायता से संपूर्ण पश्चिमोत्तर से मात्र तीन माह में यूनानी क्षत्रपों को उखाड़ फेंका। इसके बाद चंद्रगुप्त ने मगध विजय की और शेष भारत में साम्राज्य विस्तार

और सुव्यवस्था की स्थापना की।

३०५ ई. पू. (युगाब्द २७९६) में पुनः सिकन्दर के पूर्वी भाग के शासक सेल्यूकस ने आक्रमण किया। भारत सम्राट चंद्रगुप्त ने उसे पराजित किया और सेल्यूकस ने कंधार, काबुल, हेरात और बलूचिस्तान के प्रदेश चन्द्रगुप्त को सौंपे। बाद में यूनानी शासक मिनांडर (युगाब्द २९३७-५७) ने शाकल (स्यालकोट) को राजधानी बनाकर पूरे अफगानिस्तान पर २० वर्ष राज्य किया किन्तु बाद में वह बौद्ध-मिलिन्द बन गया। अन्य भी यूनानी शासक कालान्तर में पूर्ण रूप से भारतीय बन गए।

शक-कुषाण

युगाब्द २९३७ (१६५ ई.पू.) में मध्य एशिया की शक जनजाति ने भारत में प्रवेश किया। ये पांच शाखाओं में बंटे हुए थे (१) **अफगानिस्तान** (२) **तक्षशिला** (३) मथुरा (४) महाराष्ट्र-सौराष्ट्र और पांचवी उज्जैन में स्थापित हो गई। इन्होंने लगभग ५०० वर्ष शासन किया। इनमें रूद्रदमन प्रतापी शासक हुआ। कुछ संघर्षों के बाद ये भारतीय हो गए। इनमें उज्जैन के रूद्रदमन ने संस्कृत व शिक्षा का प्रसार किया। ३९० ई. (युगाब्द ३४९२) में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को अंतिम रूप से परास्त कर दिया। ये भारतीय जन में घुल-मिल गए, अंगीभूत हो गए।

चीन के इतिहासकारों के अनुसार यू-ची एक यायावर (घुमक्कड़) जनजाति थी। इन्हें सफेद हूण भी कहते हैं, यह चीन की पश्चिमोत्तर सीमा पर रहती थी। १६५ ई. पू. में यू-ची जनजाति का पड़ौसी जनजाति हिङ्गं-नू (हूण) से युद्ध हुआ जिसमें यू-ची हार गए। वे पूर्व की ओर नहीं जा सकते थे क्योंकि चीन की दीवार बन चुकी थी। अतः यह महाप्रलय भारत की ओर बढ़ा। बैक्ट्रिया में शकों को हराकर वे अफगानिस्तान के शासक बन गए। पहला यू-ची राजा कैडफाइसिस स्वयं को महाराजा कहता था जिससे ज्ञात होता है कि वह बौद्ध था। उसी के वंश में **कनिष्क** ई. ७८ (यु. ३१८०) में सिंहासन पर बैठा। इसके विशाल साम्राज्य की **राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) थी।** कनिष्क की सभा में नागार्जुन, अश्वघोष और चरक जैसे विद्वान शोभा पाते थे। उसने तक्षशिला और मथुरा को कला व संस्कृति के महान् केन्द्र बनाए। कनिष्क ने चीन के सेनापति को पराजित किया और चीनी शासक की उपाधि 'देवपुत्र' स्वयं धारण की थी।

इसका वंशज वासुदेव मथुरा का शासक था जो शैव था। इस वंश में विरुपाक्ष और महेश्वर जैसे नाम पाए जाते हैं जो इनके पूर्ण भारतीयकरण को दर्शाते हैं।

एक मत है कि एक प्रसिद्ध नरेश कुषण के नाम से यह जाति कुषाण कहलाई। कुषाणों ने मध्य तथा पूर्वी एशिया में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रचार किया। पुराणों में इन्हें **तुषार** कहा गया है। नागवंश और वाकाटक वंश के शासकों ने कुषाण साम्राज्य के अधिकांश भागों पर अधिकार कर लिया।

इस्लाम का उदय विश्व इतिहास की एक युगान्तरकारी घटना है। हजरत मुहम्मद की मृत्यु के बाद प्रत्येक खलीफा ने मज़हब के शस्त्र का साम्राज्य विस्तार हेतु प्रयोग किया। ईरानी साम्राज्य पर अरबों का अधिकार हो जाने से उनकी सीमा भारतीय सीमा से आ टकराई, जिससे दोनों में संघर्ष अनिवार्य हो गया। उस समय भारतीय पश्चिम सीमा पर तीन प्रमुख राज्य थे- काबुल, जाबुल (जाबुलिस्तान) और सिन्ध।

सिन्ध का शक्तिशाली राज्य

प्राचीन काल में सिन्ध को सिन्धु कहा जाता था। कभी-कभी सिन्धु-सौवीर शब्द प्रयोग भी मिलता है। ये दोनों क्षेत्र सिन्धु नदी के दोनों तटों पर स्थित थे। अलबेरूनी ने बृहत्संहिता और पुराणों के आधार पर मुल्तान और जहरबार को सौवीर माना है। ह्वेनचांग ने सिन्धु के पश्चिम में सिन्धु क्षेत्र की तथा सिन्धु को पार करके पूर्व क्षेत्र में मुल्तान की यात्रा की थी। 'कामसूत्र' के रचियता आचार्य वात्स्यायन ने स्पष्ट रूप से सिन्धु नदी के पश्चिम क्षेत्र को सिन्धु देश कहा है।

कालान्तर में सिन्धु और सौवीर मिलकर एक राजनैतिक सत्ता बन गए। ७वीं शती में अरब आक्रमण के समय इसकी सीमा उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में समुद्र तट और बलूचिस्तान तक थी और पूर्व में कन्नोज राज्य की सीमा को स्पर्श करती थी। इस विशाल राज्य की राजधानी अलोर (वर्तमान रोहड़ी या अरोड़) थी। सातवीं सदी के मध्य में सिन्ध में मौर्य वंशी राय सहासी का शासन था।

प्रतापी सम्राट चचराय

इन मौर्य शासकों की राजधानी अलोर (अरोर या अरोड़) सिन्धु नदी के पूर्व तट पर स्थित एक विशाल और हृदयग्राही नगर था। यहां के प्राचीन निवासी भारत वर्तमान में अरोड़वंशी या अरोड़ा क्षत्रिय (खत्री) कहलाते हैं। राय सहासी ने अपने विशाल राज्य को चार प्रान्तों में बांटा था और प्रत्येक प्रान्त का शासन एक मलिक (गवर्नर) के हाथ में होता था। इनमें से प्रथम प्रान्त की राजधानी ब्राह्मणाबाद थी और इस प्रान्त में नैरूँ(वर्तमान हैदराबाद) देवल, लोहाना, लाखा और सम्मा के प्रसिद्ध दुर्ग थे। इस क्षेत्र की सीमा समुद्र तक विस्तृत थी। दूसरा सिविस्तान था। पहाड़ियों से घिरा यह प्रान्त मकरान (वर्तमान बलूचिस्तान) तक फैला था। तीसरा प्रान्त असकलन्द और पबिया से लेकर बुधपुर (बुधिया) तक विस्तृत था। चौथा प्रान्त मुल्तान और सिक्का सहित कश्मीर सीमा तक विस्तृत था।

राय सहासी के निधन के बाद उनके प्रधानमंत्री चचराय ने शासन की बागडोर सम्भाली। चच ने ४० वर्षों तक शासन किया। उनकी आकस्मिक मृत्यु के बाद उनके अनुज चन्द्र ने ८ वर्ष तक सत्ता संभाली तथा उसके बाद चच का पुत्र धरषेण या दाहिर सेन सिन्ध-सम्राट बना। खलीफा के सरदार मोहम्मद बिन कासिम की चुनौती का उत्तर महाराज दाहिर ने ही दिया। □

-ब्रह्मपुरी चौक, बीकानेर

अरब खलीफाओं से सिन्ध का संघर्ष

□ डा. रामगोपाल मिश्र

पैगम्बर हजरत मोहम्मद के जन्नत-नशीन होने के बाद इस्लाम अरब साम्राज्यवाद का एक शस्त्र बन गया। मज़हब से उत्पन्न अभूतपूर्व एकता एवं कट्टरता का उपयोग अरब के खलीफाओं ने साम्राज्य के विस्तार के लिये किया और देखते देखते पश्चिम एशिया और यूरोप का भी पश्चिमी भाग इस्लाम के झण्डे के नीचे आ गया। अब खलीफाओं की कुदृष्टि भारत पर पड़ी। भारतीय सीमा पर उस समय कपिशा, जाबाल और सिन्ध के शक्तिशाली राज्य आक्रान्ताओं को चुनौती देते खड़े हुए थे। हमलावरों ने पहले कपिशा और जाबाल पर निशाना साधा। वहाँ जब उनका प्रबल प्रतिरोध हुआ तो खलीफाओं ने सिन्ध की ओर रुख किया। लेकिन सिन्ध में भी उन्हें लोहे के चने चबाने पड़े। आठ दशकों तक सिन्धु देश इस्लामी ताकतों से अकेला टक्कर लेता रहा। सिंध के इस प्रतिरोध का प्रामाणिक विवरण विख्यात इतिहासकार डा. रामगोपाल मिश्र ने प्रस्तुत लेख में दिया है-सं.

ईसवी ६३२ में मदीना में अपनी मृत्यु से पूर्व इस्लाम के पैगम्बर हजरत मोहम्मद ने अरब जाति के सारे कबीलेवाद और अलगाव को मिटा दिया था और उन्हें एक मज़हब के बंधन में बांध कर एक राज्य के रूप में स्थापित कर दिया था। यह मदीना में केन्द्रित हुआ और जिसने अपने कानून और संस्थान रचे। इस नए राज्य में अरब के अधिकांश क्षेत्र सम्मिलित हो गए। ६३२ ईसवी में पैगम्बर के निधन के बाद, उनके चार साथियों ने मुस्लिम जाति का नेतृत्व संभाला। उन्होंने खलीफ़ा की उपाधि ग्रहण की । खलीफ़ा का शाब्दिक अर्थ ही होता है किसी अधिनायक का अनुसरण करने वाला। सर्वप्रथम खलीफ़ा अबू बक्र (६३२ से ६३४ ईसवी) ने उन विभिन्न अरब कबीलों के लिए, जो इस्लाम को कबूल कर चुके थे और जिन्होंने अपनी पूर्व मान्यताओं को त्याग दिया था, मदीना में सत्ता का केन्द्र स्थापित किया।

इस्लाम का वास्तविक विकास दूसरे खलीफ़ा उमर (६३४ से ६४४ ई.) के समय में आरम्भ हुआ। उसके प्रबल नेतृत्व में मदीना का राजकीय शहर एक प्रभुता-सम्पन्न सार्वभौमिक राज्य का दर्जा ले चुका था। उसने अरबों की सैन्य शक्ति को उस समय की दो बड़ी शक्तियों- बिजान्टीन और सासानिद साम्राज्यों के विरुद्ध संगठित किया।

इस्लाम की आँधी

पैगम्बर के निधन की एक पीढ़ी के अन्दर ही मज़हब के अदम्य विश्वास से उद्दीप्त और मौत के ख़ौफ़ से मुक्त हुआ आदिम अरब बिजान्टीन राज्यों के सीरिया, फिलस्तीन और मिस्र तथा सासानिद राज्यों के फारस और ईराक का स्वामी बन गया। मज़हब और राजनैतिक सत्ता के ऐसे द्रुत फैलाव की विश्व इतिहास में कोई अन्य मिसाल नहीं मिलती।

पैगम्बर के निधन की एक सदी के भीतर ही ख़लीफ़ाओं का साम्राज्य एक विश्व-शक्ति के रूप में उभर आया। उन्होंने मध्य एशिया और उत्तरी अफ्रीका से लेकर पश्चिम में अटलांटिक महासमुद्र के तट तक और पूर्व में भारत के दरवाजे तक अपनी आहट दे दी।

यह विस्मय की बात है कि अरबों ने आठवीं सदी तक जिन देशों पर विजय प्राप्त की, उनमें से किसी ने भी कोई सफल या दीर्घ प्रतिरोध इन अरब आक्रान्ताओं के सामने खड़ा नहीं किया। अबू बक्र के अरब के एकीकरण के बाद इस्लाम अन्य क्षेत्रों की ओर बढ़ने के लिए तैयार था। बिजान्टीन क्षेत्र का सीरिया अरबों का पहला निशाना बना। वहाँ के निवासियों ने मान लिया कि अरबी घोड़ों और ऊंटों ने अरबों को अदम्य शक्ति और गति से सम्पन्न किया है। संसार के सबसे पुराने शहर दमिश्क की छह महीने के घेराव के बाद हार हुई और पूरा सीरिया प्रदेश एक साल में जीत लिया गया।

अगले साल 'अल्लाह के युद्धवीर' फारस (ईरान) के सामने आ खड़े हुए। पारसी सेना आतंकित होकर बिखर गई। बादशाह और उसकी सेना राजधानी छोड़ भागे और मुस्लिम उस शहर में 'बिना किसी प्रतिरोध के' प्रवेश कर गए। पूरे फारस को जीतने में कुछ अधिक वक्त लगा और ६४३ ईसवी तक ख़लीफ़ा साम्राज्य की हदें भारत की सीमाएं छूने लगीं।

मुस्लिम सेना के विजय अभिमान की यही कथा पश्चिम में दुहराई गई। खलीफ़ा की सेना ने मिस्र जो कि उत्तरी अफ़्रीका का सिंहद्वार था, की प्राचीन सरजमीं पर आक्रमण किया। मिस्र की राजधानी अलेक्जेन्ड्रिया पर भी एक ही वर्ष (६४०-६४१ ई.) में कब्जा हो गया।

पूर्ण समर्पण

विस्तार के इस पहले चरण के बाद मुस्लिम, तुर्की भाषा बोलने वाले बाहरी मंगोलिया, बुखारा, ताशकंद आदि क्षेत्रों तक केन्द्रित रहे। 'मध्य एशिया में इस्लाम की धाक ऐसी मजबूत हो चुकी थी कि चीन ने भी उसे चुनौती देना तज दिया था।'

मुस्लिम विस्तार के अगले चरण का आरम्भ हुआ ईसवी

७११-७१२ में। उस वर्ष मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध और मुल्तान को झुकाया और भारत में अपना पहला कदम जमाया। साथ ही साथ पश्चिम में अरब सेनापति मूसा के नायकत्व में मुसलमान उत्तरी अफ्रीका को फतह करते हुए अतलांतिक सागर के तट तक पहुँच गये। ७११ ईसवी में मूसा ने मोहम्मद तारीक़ को जिब्राल्टर की खाड़ी से होते हुए स्पेन भेजा। स्पेन का राजा रोड्रिक उसी साल परास्त हो गया और सात सालों में पूरा स्पेन जीत लिया गया।

इस भांति ७३२ ईसवी याने पैगम्बर के निधन की एक सदी पूरे होते-होते अरब के विजेताओं ने विश्व का एक सबसे बड़ा और शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित कर लिया था।

इस्लामी सेनाओं की ऐसी विजय-श्रृंखला विस्मयकारी तो थी ही, उतना ही विलक्षण था विभिन्न आस्थाओं और जातियों के लोगों को इस्लामी प्रवाह में एकाकार कर लेना। सीरियाई, पारसी, नीग्रो, तुर्क और अन्य भी- सभी का तेज गति से इस्लामीकरण कर दिया गया और उनकी भाषा और संस्कृति का अरबीकरण हो गया।

जीवन्त आस्था से सामना

भारत के मामले में, जहाँ पैगम्बर मुहम्मद के निधन के तुरन्त बाद ही इस्लाम का राजनैतिक एवम् सांस्कृतिक संघर्ष आरम्भ हो गया, कहानी बहुत अन्य प्रकार की है। यहां मानव सभ्यता के आदिकाल से चली आ रही जीवन्त आस्था से इस्लाम का सामना हुआ। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आस्था के निर्वाह में पूर्ण स्वतंत्रता देने के कारण ही हिन्दू धर्म का चमत्कारिक विस्तार हुआ।

भारतीयों ने अपनी श्रेष्ठता और अपने देश और संस्कृति में गर्व का आभास जीवन्त रखा। इसका अतीव सुन्दर चित्रण अलबरूनी ने इस प्रकार किया है, *''हिन्दू मानते हैं कि विश्व में उनके देश जैसा कोई और देश नहीं है और उनके जैसा अन्य कोई समाज भी नहीं है।''* अलबरूनी के तीन सदियों बाद आया अमीर खुसरो भी हिन्दुओं की उस अनुशासित आस्था पर मुग्ध रह गया जिसे कोई राजनैतिक सत्ता कभी नहीं झुका सकी।

वास्तव में इस्लाम की प्रारंभिक सफलता उन पंथों के विरुद्ध थी जो लोगों के मस्तिष्क से अपनी पकड़ खो चुके थे। किन्तु भारत में, हिन्दुओं का जीवन दर्शन उच्च नैतिक मूल्यों, सहिष्णुता, सत्यप्रियता और न्याय पर अवलम्बित था और एक विशाल जन-मानस के मानसिक एवं भौतिक जीवन का अविभाज्य अंग था।

शाश्वत और नैतिक जीवन मूल्य जो हिन्दुत्व की आत्मा हैं, अगली मुस्लिम शासन की पांच सदियों और अंग्रेजी शासन की दो सदियों के बावजूद कायम रहे। कोई भी प्राचीन संस्कृति और विश्व का समाज विषम परिस्थितियों में ऐसा विलक्षण जीवट नहीं दर्शा सका। हिन्दुओं की राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था व्यष्टि पर नहीं अपितु समष्टि पर आधारित रही है। अपने सामाजिक संस्थानों के प्रति ऐसी अविचल भक्ति के कारण ही यहां संयुक्त परिवार; जाति, ग्राम, पंचायत, श्रमिक संघ और अन्य संस्थानों के प्रति समर्पण का आदर्श स्थापित हुआ। इसी कारण हिन्दुत्व बाहरी आक्रमणों के विरुद्ध ठोस एकीकृत शक्ति बन कर डटा रहा।

एक के बाद एक पराजय

अपनी एक के बाद एक सैन्य सफलताओं के बाद पैगम्बर मुहम्मद के निधन के बाद की केवल एक पीढ़ी ने विश्व-शक्ति बनते हुए अरबों की आंखें भारत की ओर लगा दी । अरबों का पहला समुद्री अभियान जिसका ध्येय मुम्बई के पास ठाणे की विजय का था, वह खलीफा उमर के काल (६३४-६४४ ई.) में ६३६ ई. में हुआ किन्तु वह खदेड़ दिया गया। इसके बाद दो और समुद्री धावे एक के बाद एक किये गए जिनमें पहला बडवास (भड़ौच) और दूसरा सिंध में देवल के बंदरगाह पर हुआ।

सिंध में देवल पर समुद्री धावा अरबों का सिंध पर पहला आक्रमण था। 'तारीख-ए-हिन्द-वा-सिंध' अथवा 'चचनामा' के अनुसार यह धावा असफल हुआ। देवायजी का बेटा समाह उस स्थान का शासक था। जब अरब सेना देवल में पहुंची तब वह किले से बाहर आया और उसने उनसे युद्ध किया। अरब सेना का नायक, मुघाइरा हार गया और मारा गया।

'चचनामा' के लेखक के अनुसार अरबों के इन प्रारंभिक

उत्कृष्ट हिन्दू जीवन पद्धति

अरब के पुराने सभी यात्री हिन्दुओं की आस्था के विषय में सहिष्णुता और दृष्टि की व्यापकता के जन्मजात गुणों की चर्चा करते रहे हैं। अलबरूनी ने लिखा है, ''हिन्दू दार्शनिकों के अनुसार, मोक्ष सभी जातियों और पूरी मानवता के लिए समान है यदि उनके इसे प्राप्त करने के इरादे पूरी तरह से सही हैं। यह दृष्टिकोण व्यास के कथन पर आधारित है जिसने कहा, 'पच्चीस सिद्धान्त भली भांति समझ लो, उसके बाद जिस पंथ को चाहे अपनाओ, तुम्हारा गंतव्य मोक्ष ही होगा।''

आस्था के मामले में इस्लाम के अभ्युदय से बहुत पहले ही, भारत के व्यापक दृष्टिकोण को विभिन्न जाति और मान्यताओं वाले लोगों ने भारतीय संस्कृति की उदारता के कारण सहर्ष स्वीकार कर लिया था और यहां शान्तिपूर्ण सद्भाव और समन्वय से बिना किसी प्रकार की प्रतिद्वंद्विता और वैमनस्य के रहते थे। अपनी प्रकृतिस्थ उदारता के साथ साथ हिन्दुत्व ने तो पहले आने वाले शांतिप्रिय मुस्लिमों का भारत में स्वागत किया था। व्यापारी सुलेमान (८५१ ईसवी), अल-मसूदी (९१५ ईसवी), अल-इस्ताखी (९५१ ईसवी) और इब्न हौकल (९७६ ईसवी) से लेकर पहले के अरब यात्रियों ने स्वीकार किया कि शांतिप्रिय मुस्लिमों के साथ भारत के राजाओं ने बड़ा उदार व्यवहार किया।

हमलों के समय सिंध का राजा ब्राह्मण चचराय था। सारे विवरणों के अनुसार चच एक प्रतापी राजा था जिसका राज्य पूर्व में कश्मीर, पश्चिम में मकरान और दक्षिण में समुद्र तट और देवल तथा उत्तर में कुर्दान और किकनान के पहाड़ों तक फैला था। मुघाइरा की हार ने, सो भी उस समय जब अरब सेनाएं अन्य जगहों पर बराबर विजय हासिल कर रही थी, खलीफ़ा उमर को विस्मय में डाल दिया और उसने जमीन के रास्ते एक सेना सिंध के हिस्से मकरान (अब के बलूचिस्तान) की ओर कूच करा दी। किन्तु यह सेना भी बुरी तरह हार गई।

साहस नहीं जुटा सका

अगले ख़लीफ़ा उस्मान (६४४-६५६ ई.) ने भी पहले तो अब्दुल्ला को सिंध पर हमला करने के लिए तय किया था किन्तु बाद में उसने सिंध पर हमले का विचार ही त्याग दिया।

ख़लीफ़ा अली के काल में (६८० ई. में) सिंध पर एक और जमीनी हमला हरास के नेतृत्व में किया गया। वह कीकन तक पहुंच पाया जो चचनामा के अनुसार सिंध के राजा के प्रत्यक्ष आधीन मध्य भाग था। यहां के लोगों ने डट कर मुकाबला किया जिसके कारण मुस्लिम सेना को बहुत नुकसान के साथ लौटना पड़ा।

ख़लीफ़ा मौविया (६६१-६८० ई.) के समय में अरबों ने पक्के इरादे के साथ सिंध के सीमान्त क्षेत्र कीकन को जीतने की कम से कम ६ कोशिशें की, किन्तु सभी में मुंह की खानी पड़ी । इस सारी अवधि में अरबों को जो एक मात्र स्थाई बढ़त हासिल हुई वह थी ६६८ ई. में मकरान पर सिनान की जीत। किन्तु इसके तुरंत बाद हमें रशीद इब्न उमर की हत्या का समाचार मिलता है जो मेडों के हमले में खेत रहा। अल-मंधीर भी इसी क्षेत्र में मारा गया । ईराक के प्रशासक ज़ियाद ने जब सिनान की मदद के लिये अल-बाहिली को भेजा तभी संभव हुआ कि घमासान लड़ाई के बाद ६८० ई. में मकरान की फ़तह हुई।

ख़लीफ़ा की हिचकिचाहट

ख़लीफ़ा मौविया के बाद सिंध पर अगले २० सालों तक कोई हमला नहीं हुआ। किन्तु ६९५ ई. में अल हज्ज़ाज के ईराक के प्रशासक बनने के बाद, भारत के विरुद्ध हमलों की एक सुदृढ़ नीति बनाई गई। उसने पहले काबुल और जाबुल को जीतने का प्रयत्न किया किन्तु जब उसके प्रयत्न बुरी तरह से नाकामयाब रहे तो उसने ७०८ ई. में सिन्ध की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

उस साल लंका से एक जहाज उस देश में जन्मी मुस्लिम लड़कियों को लेकर हज्जाज के लिए लेकर जा रहा था, देवल के मेडों'' द्वारा पकड़ लिया गया। जब हज्ज़ाज ने दाहिर से उन स्त्रियों की रिहाई की मांग की तो दाहिर ने जवाब दिया, *''यह डाकुओं की कारस्तानी है... वे हमारी कोई भी परवाह नहीं करते।''*

हज्ज़ाज ने सारी बात ख़लीफ़ा वालिद तक पहुंचाई और हिंद और सिंध के विरुद्ध एक जिहाद की आज्ञा मांगी किन्तु वालिद ने आज्ञा देने में हिचकिचाहट की। हज्ज़ाज ने फिर लिख कर अनुरोध किया तो ख़लीफ़ा ने अपनी इजाज़त दे दी।

खलीफा की हिचकिचाहट का कारण समझना कोई मुश्किल नहीं है। संघर्ष तो पिछले सत्तर से कुछ ज्यादा सालों से चला आ रहा था। संसार की सभ्यताओं के नायकों ने जिन अरबों के सामने सर झुका दिया था वे अब भारत के किसी भी सीमान्त प्रान्त यथा काबुल, ज़ाबुल और सिंध पर विजय पाने में असफल ही रहे थे।

खलीफा से इजाज़त मिलते ही हज्ज़ाज ने उबैदुल्ला को देवल (बन्दरगाह) पर धावा करने भेजा। युद्ध में उबैदुल्ला के मर जाने पर हज्ज़ाज ने ओमान में रहने वाले बुदैल को देवल की ओर कूच करने का निर्देश दिया।

जयसिंह का करारा वार

बुदैल समुद्र के रास्ते से बढ़ा और सिंध के तट पर उतरा। नेरूँ (आज के सिन्ध का हैदराबाद) में हारूँ की एक बड़ी सेना सहायता के लिये आने पर, वह देवल की ओर अग्रसर हुआ। देवल के निवासियों ने सिंध की राजधानी अलोर में दाहिर के पास एक व्यक्ति को उसे यह बताने के लिए भेजा कि बुदैल नेरूँ तक आ गया है। दाहिर ने अपने बेटे जैसिया (जयसिंह) को ४ हजार घोड़े और ऊंटों पर सवार सैनिकों के साथ भेजा जो तेज गति से देवल पहुंचे। जैसिया ने द्रुत गति से मुस्लिम सेना पर आक्रमण किया। सुबह से लेकर दिन ढलने तक घमासान युद्ध होता रहा।

अन्त में मुस्लिम सेना परास्त हुई और बुदैल मारा गया। अरबों की इस करारी हार से ख़लीफ़ा को जबर्दस्त धक्का पहुंचा। जब हज्ज़ाज ने फिर एक अभियान की इजाज़त मांगी, तो ख़लीफ़ा ने लिख भेजा, *''इससे हमारी परेशानियाँ और बढ़ेंगी इसलिये अभी इसे टाल दो । क्योंकि जब भी सेना को उधर धावे पर भेजा जाता है, काफी तादाद में मुसलमान मारे जाते हैं। इसलिये अब इस बात को दिमाग से निकाल दो।''*

किन्तु हज्ज़ाज अपनी दुर्गति से बहुत आहत था और ऐसी शर्मनाक हार का बदला लेने की कसम खा चुका था। उसने अब मुहम्मद बिन कासिम को, जो उसका चचेरा भाई भी था और दामाद भी था, को सिंध के विरुद्ध एक बड़ी अरब सेना का नेतृत्व सौंपा।

बौद्धों का राष्ट्रद्रोह

इन सारी सैन्य तैयारियों के बावजूद भी यह संदिग्ध लगता है कि ७१२ ई. में सिंध मुहम्मद बिन कासिम द्वारा जीत लिया जाता यदि सिंध के सारे लोग और सेना-नायक, अपने राजा के प्रति वफ़ादार होते। नेरूँ में शहर के प्रमुख, बौद्ध **'भंडारकर' सामानी** ने अपने देश के प्रति ख़िलाफ़त ही नहीं की अपितु मुहम्मद कासिम को इतना अनाज भी दिया जिससे उसके सारे सिपाहियों का पेट भर गया।

शिविस्तान पर जब राजा दाहिर के चचेरे भाई, बछेरा ने युद्ध जारी रखने की जिद ठान ली तो बौद्ध सामानी ने मुहम्मद को गुप्त संदेश भेजा, कि लोग बछेरा का साथ छोड़ चुके हैं और

बछेरा के पास न तो पर्याप्त संख्या में लोग हैं और न ही युद्ध सामग्री।

जोर्ता में मोकाह ने भी मुहम्मद के आगे समर्पण कर दिया था और अपनी नौकाएं उसे सिंधु नदी पार करने के लिए दे दी। इन सारी हताशाओं के बावजूद राजा दाहिर, उसकी रानियों तथा राजकुमार जैसिया का उत्साह और प्रतिरोध विलक्षण ही था। विषमताओं से अकम्पित दाहिर ने मुहम्मद को संदेश भेजा, *''तुम यह जान लो कि देवल का जो कस्बा तुमने जीता, वह तो एक साधारण सा कस्बा है जहां केवल सौदागर और कारीगर बसते हैं। यदि मैंने अपने समय के सबसे शक्तिशाली योद्धाओं को धूल चटाने वाले राजकुमार जैसिया को तुमसे लड़ने भेजा होता... तो तुम उनका रंचमात्र भी नुकसान नहीं कर सकते थे।''*

जब उसके वज़ीर ने दाहिर को प्रस्ताव दिया कि वह अपने अनुयायियों और सम्पदा को हिंद के किसी और हिस्से में ले जाए तो दाहिर का उत्तर था, *''मेरी मंशा तो अरबों से एक खुली जंग की है और सो भी पूरे हौसले और हिम्मत के साथ। यदि मैं उन्हें परास्त कर सका तो उन्हे मौत की खाक में मिला दूंगा और यदि सम्मान से मैं ही मर गया तो यह बात अरबों और हिन्द की किताब में अंकित हो जाएगी...'था एक ऐसा राजा भी जिसने अपने देश की इज्ज़त की ख़ातिर दुश्मन से लड़ते हुए अपनी जान गंवा दी।''* ❑

Mr. RAMESH KUMAR

A-Bachlar Real comfort

PLASMA

FRIDO SPORTS

Addoxy STYLE & COMFORT

Hitcolus FOOTWEAR

AVERY

Safety

Aircity

RAMP

RELAX

Nagra & Chappal Store

Wholesale Dealers

Gents Sports and Leather Shoes

2 nd Floor, Madan Mansion,
Opp. Link Road, Bapu Bazar, Jaipur
Phone -0141-2578240 (S) 2521926 (R)
Mob.: 98290 29485

स्वच्छ उदयपुर, स्वस्थ उदयपुर, सुन्दर उदयपुर

नगर परिषद उदयपुर (राज.)

–: परिषद द्वारा दी जाने वाली सेवाएंः–

निर्माण कार्य: –
- शहर में विभिन्न स्थानों पर सड़कों, नालियों, सामुदायिक भवनों, सामुदायिक शौचालयों, पार्कों, खेल मैदानों, स्कूल भवनों, चिकित्सालय भवनों, आश्रय स्थल, बस शैल्टर्स, पनघट, हैण्डपम्प, पेयजल की पाईप लाईन्स का निर्माण।

सफाई व्यवस्था: –
- विभिन्न गलियों, मोहल्लों में प्रतिदिन कचरा निस्तारण का कार्य। सामुदायिक शौचालयों के माध्यम से सुलभ सुविधा उपलब्ध कराते हुए उनकी सफाई व्यवस्था, पर्यटकों एवं आम नागरिकों की सुविधों को दृष्टिगत रखते हुए रात्रि कालीन सफाई व्यवस्था, शहर की सिवरेज लाईनों का रख-रखाव एवं सिवरेज वाहन के माध्यम से आम नागरिकों के सैप्टिक टैंक सफाई कार्य।

सामाजिक उत्थान: –
- स्वयं सहायता समूहों का निर्माण, आर्थिक सम्बल प्राप्त करने हेतु स्व-रोजगार प्रशिक्षण का कार्य, बैंकों के माध्यम से ऋण उपलब्ध करवाने का कार्य, विधवा वृद्धावस्था पेंशन गंभीर रोगियों को सहायता उपलब्ध कराना एवं सरकार की विभिन्न योजनाओं के अनुसार पेंशन स्वीकृति के कार्य।

पंजीयन कार्य: –
- जन्म-मृत्यु की घटनाओं का पंजीयन कर प्रमाण पत्र उपलब्ध कराना, विवाह पंजीयन, विवाह स्थलों का पंजीयन, लघुयन्त्रालयों का पंजीयन, होटल, खाद्य लाईसेन्सों का पंजीयन।

प्रदूषण नियंत्रण: –
- प्लास्टिक केरी बेग की रोकथाम करना, ठोस कचरा निस्तारण का कार्य।
- पार्कों का रख रखाव एवं सौन्दर्यकरण, डिवाईडर एवं सड़कों के किनारे पर वृक्षारोपण का कार्य एवं रोड फोरेस्ट्री।

जनता से आग्रह
- शहर व विभिन्न चौराहे एवं मुख्य मार्गो पर अवैध होर्डिंग न लगाएं।
- झीलों के अन्दर एवं इर्दगिर्द गन्दगी न करें।
- प्रतिबंधित पोलिथीन का उपयोग न करें।
- अपने पालतू पशुओं को सड़कों पर खुला न छोड़ें।
- कचरा सड़क व नालियों में ना डालकर कन्टेनर में डालें।
- जन्म-मृत्यु की घटनाओं का पंजीयन 21 दिवस में कराएं।
- परिषद की समस्त देय राशियों का समय पर भुगतान करें।
- विवाह पंजीयन अवश्य करायें।

रजनी डांगी
सभापति

एवं समस्त पार्षदगण

महेन्द्र सिंह शेखावत
उपसभापति

पाथेय कण पाक्षिक के
सभी पाठकों का
महाराजा दाहिरसेन विशेषांक
के प्रकाशन पर हार्दिक
अभिनन्दन

अनिल दीपचंद गोपलानी

बी-55, सर्जन सोसायटी,
सरगम शॉपिंग सेन्टर के सामने, सूरत-07

भूतपूर्व पाणी समिति अध्यक्ष एवं कोर्पोरेटर,
सूरत महानगर पालिका, सूरत
मो.-099251 94969

॥ ॐ ॥

विद्या भारती से सम्बद्ध

नवीन आदर्श विद्या मंदिर माध्यमिक

सूरतगढ़,(श्री गंगानगर)

जिले का सर्वोत्कृष्ट परिणाम देने वाला विद्यालय

12 वीं विज्ञान व IIT में वे विद्यार्थी ही नगर में प्रथम रहते हैं, जिन्होंने 10 वीं तक नवीन आदर्श विद्या मंदिर में अध्ययन किया था।

इस सत्र का
10वीं बोर्ड परिणाम
आयुष जोशी
(96.33)

10 वीं में तीसरी बार

राज्य मेरिट में पाँचवां स्थान

बीकानेर सम्भाग में प्रथम

कुल विद्यार्थी-101 **प्रथम श्रेणी-74**

शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास पर विशेष ध्यान

-: मुख्य आकर्षण :-

भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम,
विज्ञान मेला व स्पोकन इंग्लिश

दूरभाष: 01509-221219, 223469

ॐ

उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर

आदर्श नगर, जयपुर

आवश्यकता है

पद		योग्यता
व्याख्याता गणित	:	M.Sc, B.Ed
व्याख्याता जीव विज्ञान	:	M.Sc, B.Ed
व्याख्याता कम्प्यूटर विज्ञान	:	M.C.A./ A Level Diploma

अभ्यर्थी अपना प्रार्थना-पत्र सादे कागज पर लिखकर तथा आवश्यक प्रमाण पत्रों की छायाप्रति साथ लेकर साक्षात्कार हेतु दिनांक 24.06.2012 को प्रातः 10 बजे उ.मा.आदर्श विद्या मन्दिर, आदर्श नगर जयपुर पहुँचें।

अध्यक्ष — दामोदर दास मोदी

सचिव — डा. जगन्नाथ भुटानी

ॐ

श्री गुरुजी छात्रावास

(उ.प्रा.आ.वि.म. प्रांगण आदर्श नगर, जयपुर)

आवश्यकता है

छात्रावास प्रभारी : दो पद

योग्यता: स्नातक

(खिलाड़ी, घोष वादन में दक्ष तथा सामाजिक संगठनों से जुड़े कार्यकर्ता को प्राथमिकता)

वेतन : 7000/- प्रतिमाह,

(भोजन एवं आवास निःशुल्क)

अभ्यर्थी दिनांक 25.06.2012 को अपना प्रार्थना पत्र तथा आवश्यक प्रमाण पत्रों सहित उ.प्रा.विद्या मन्दिर, रामगली नं. 5, राजापार्क प्रातः 10 बजे पहुँचे।

व्यवस्थापक

श्री गुरूजी छात्रावास समिति

सिन्धु सम्राट–वीर दाहिरसेन

 तेजभान शर्मा

आठवीं सदी में महाराजा दाहिर व उसके परिवार का अरबों से संघर्ष और पूरे परिवार का अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान भारत के इतिहास का गौरवपूर्ण पृष्ठ है।

सिन्ध के विभाजन पूर्व के शिक्षा मंत्री तथा सिन्ध की आजादी के लिए ३२ वर्षों तक जेल में रहे जी.एम.सैयद ने दाहिर को सिन्ध का हीरो कहा है। १९९० में उन्होंने कहा था,

'' मैं ४३ वर्षों से पाकिस्तानी हूँ तथा ९०० वर्षों से मुसलमान, लेकिन सिन्धी तो मैं ५००० वर्षों से हूँ। दाहिरसेन मेरे पूर्वज थे और मुहम्मद बिन कासिम लुटेरा था।''

इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु (६३२ ई.) के बाद उनके उत्तराधिकारी खलीफाओं ने इस्लाम धर्म के नाम पर मध्य एशिया के ईरान, ईराक, उत्तरी अफ्रीका आदि देशों को रौंद डाला और उनका पूरी तरह से इस्लामीकरण कर दिया। ६३६ ई. से ७१० ई. के दौरान अरबों ने सिन्ध या उसके अधीन प्रदेशों पर १२ बार छोटे-बड़े आक्रमण किये, जिनका सिन्ध के वीरों ने मुँहतोड़ जवाब दिया। इस संघर्ष में अरबों के कई सिपहसालार, सरदार और सैनिक भारतीय तलवारों की भेंट चढ़ गए।

उस समय सिन्ध पर चचराय नाम का ब्राह्मण राजा शासन कर रहा था जो बहुत वीर, साहसी और कुशल प्रशासक था। उसके राज्य की सीमाएं पूर्व में कश्मीर, पश्चिम में मकरान(बलूचिस्तान), उत्तर में कुरदान और कीकान पर्वत तथा दक्षिण में कच्छ व समुद्र तक फैली हुई थी। यह राज्य लगभग वर्तमान पाकिस्तान जितना विस्तृत था। चच सिन्ध के राजघराने के अन्तिम राजा राय सहासी (द्वितीय) का मंत्री था। राय सहासी की मृत्यु के बाद ६३० ई में चच उसकी गद्दी पर बैठा। राय सहासी की विधवा रानी सुहंदी से उसने विवाह कर लिया। चित्तौड़ का राजा 'महरत' राय सहासी का रिश्ते में भाई लगता था। उसे चच और रानी सुहंदी का रिश्ता ठीक नहीं लगा। वह चच की राजधानी 'अलोर' पर चढ़ आया। चच ने उसे द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारा और द्वंद्व युद्ध में चित्तौड़ का राजा मारा गया।

दाहिर का राज्याभिषेक

दाहिर उसी वीर चचराय का वीर पुत्र था। ६७२ ई. में चचराय का देहान्त हो गया। चच की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई चन्दर सिन्ध का शासक बना। आठ वर्ष बाद उसकी भी मृत्यु होने के बाद चचराय का पुत्र दाहिरसेन इस विशाल साम्राज्य का स्वामी बना। दाहिर का एक भाई धीरसेन था जिसकी चेचक रोग से मृत्यु हो गई थी। वह सिन्ध के ब्राह्मणाबाद प्रदेश का शासक था। दाहिर ने अपने पिता के राज्य को अच्छी तरह सम्भाला। उनके राज्य में प्रजा खुशहाल थी। प्रदेश धन-धान्य से समृद्ध था। दाहिर के राज्य की राजधानी 'अलोर' (अरोड़) थी। यह बहुत सुन्दर और समृद्ध शहर था। उनके राज्य में बौद्ध मतावलम्बियों की बहुत बड़ी संख्या थी। वे राज्य में कई स्थानों पर प्रशासक के महत्वपूर्ण पदों पर भी आसीन थे। इसी अलोर या अरोड़ के निवासी कालान्तर में सिन्ध, पंजाब व राजस्थान में फैल गये और 'अरोड़ा' कहलाए।

मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण और उसका प्रतिरोध

छठे खलीफा वलीद (७०५-७१५) के समय में ईराक का गवर्नर हज्जाज नाम का एक क्रूर व्यक्ति था। उसने दाहिर के राज्य पर चार बार आक्रमण किये। चारों बार उसे मुँह की खानी पड़ी। उसके सेनापति सैद, मन्जाह, उबैदुल्ला तथा बुदेल (बुजेल) आदि इन हमलों के दौरान मारे गए। हज्जाज ने पांचवीं बार सिन्ध पर आक्रमण की अनुमति वलीद खलीफा से मांगी। अरबों की लगातार हुई हार और धन-जन की हानि के कारण वलीद और आक्रमण नहीं चाहता था परन्तु हज्जाज के बहुत आग्रह करने पर उसे इस शर्त पर अनुमति दे दी कि वह युद्ध में होने वाले खर्च की दुगनी राशि राजकोष में जमा करायेगा।

७५ वर्षों तक अरब के खलीफाओं ने १४ बार सिन्ध पर असफल आक्रमण किये। इन आक्रमणों में उनको जन-धन की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। १५ वीं बार हज्जाज ने अपने भतीजे और दामाद १७ वर्ष के मुहम्मद बिन कासिम को आक्रमण हेतु तैयार किया। कासिम के नेतृत्व में एक बड़ी सेना, जिसमें छह हजार घुड़सवार, इतने ही ऊँट सवार तथा साठ हजार सीरियाई लडाकू सैनिक थे, 'शीराज' से रवाना हुई। मार्ग में मकरान, कन्नाजबुर तथा अरमाइल (अरमाबेल) पर विजय प्राप्त करता हुआ कासिम २७ अक्तूबर ७११ ई. में सिन्ध के सुप्रसिद्ध बंदरगाह नगर देवल (वर्तमान कराची) पर आ धमका। सात दिन तक उसने नगर का घेरा डाले रखा पर उसे सफलता नहीं मिली। देवल परकोटे में एक विशाल मंदिर था, उसके गुंबद पर एक केसरिया पताका (ध्वज) लहरा रही थी। यह पताका देवल के सैनिकों और नागरिकों की

प्रेरक शक्ति थी। दुर्भाग्यवश मंदिर के ही एक पुजारी ने यह रहस्य कासिम को जाकर बताया कि जब तक यह पताका नहीं गिरेगी तब तक देवल की पराजय असम्भव है।

कासिम के पास बड़े-बड़े पत्थर फैंकने वाले 'मंजनीक' नाम के अस्त्र थे। कासिम के आदेश से पत्थरों की मार से पताका गिरा दी गई। अपशगुन की आशंका से जनता और सेना का मनोबल गिर गया। देवल का शासक 'जाहीन' भाग कर नेरुन दुर्ग (वर्तमान हैदराबाद सिन्ध) चला गया। लालच में कुछ देशद्रोहियों ने कोट के दरवाजे खोल दिये। देवल को कासिम की बड़ी सेना के आगे समर्पण करना पड़ा। कासिम के सैनिकों ने वहां तीन दिन तक मारकाट व लूटपाट की। सैकड़ों लोगों को गुलाम बनाया गया और उनका मतपरिवर्तन कर इस्लाम मत ग्रहण करने को मजबूर किया गया। महिलाओं का मान-मर्दन किया गया, मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाई गई।

महाराजा दाहिर का बड़ा बेटा जयसिंह बहुत ही वीर-योद्धा था। कुछ समय पूर्व ही उसने हज्जाज द्वारा भेजे गये सेनापति उबैदुल्ला और बुदैल को इसी देवल की भूमि पर उसके हजारों सैनिकों के साथ धराशायी किया था। इस बार महाराजा दाहिर ने उसके शरणागत अरब सेनापति मुहम्मद अलाफी की गलत सलाह पर जयसिंह को देवल में कासिम के प्रतिकार हेतु न भेजने का निर्णय किया था। इस निर्णय ने इतिहास बदल दिया।

घर के भेदी

कासिम ने देवल विजय के बाद नेरुन का घेरा डाल दिया। वहां का शासक एक बौद्ध 'भांडारकर सामानी' था। उसने बिना युद्ध किये आत्म समर्पण कर दिया। यहां तक कि उसने अरब सेना के लिए खाद्यान्न की आपूर्ति भी की। उसने कासिम के लिये मार्गदर्शक का भी काम किया। नेरुन विजय के बाद कासिम क्रमशः शीस्तान (शिव स्थान), बुधिया के सीसम दुर्ग, इश्मा का दुर्ग आदि को विजय करता हुआ रावर के दुर्ग की तरफ बढ़ा। यह दुर्ग सिन्धु नदी के पार दूसरे किनारे पर था, जहां महाराज दाहिर तथा उनका बड़ा बेटा जयसिंह कासिम के साथ युद्ध के लिये सन्नद्ध थे।

कासिम बेत-गढ़ के पास सिन्धु नदी पार कर रावर जाना चाहता था । बेत का शासक 'मोकाह' तथा 'जासेन' कासिम से मिल गये। उन्होंने नावों का प्रबन्ध कर कासिम की सेना को सिन्धु नदी पार करने में मदद की। इन्हीं दिनों सिन्ध के एक प्रमुख ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि तारों की गणना के अनुसार युद्ध में मुहम्मद बिन कासिम की जीत होगी और महाराजा दाहिर की पराजय होगी। इस भविष्यवाणी के कारण धर्मभीरु जनता एवं सैनिकों पर मनोवैज्ञानिक असर हुआ। हार की आशंका से उनका मनोबल गिरा। देवल से रावर पहुँचने तक कासिम को ८ माह का समय लगा। विभिन्न दुर्गों पर अरब सेना की अपेक्षा बहुत कम सैनिक होने पर भी भारतीय सेना ने अरबों का जबरदस्त प्रतिरोध किया था। देशद्रोहियों और भेदियों के कासिम से मिल जाने के कारण भारतीय सैनिकों को हार का सामना करना पड़ा। कासिम की सेना ने जीतूर नामक स्थान पर अपना पड़ाव डाल दिया। महाराजा दाहिर ने भी रावर के किले से निकल कर कासिम के पड़ाव से एक कोस की दूरी पर अपना डेरा डाला।

अहसान फरामोश अलाफी

कुछ वर्ष पूर्व एक अरब सरदार मुहम्मद बिन अलाफी ने हज्जाज के अत्याचारों से परेशान होकर अपने कबीले के ५०० साथियों के साथ महाराजा दाहिर के पास शरण ली। यह जानकर हज्जाज ने महाराजा को पत्र लिखकर मांग की कि अलाफी को उसके साथियों के साथ वापिस उनके हवाले करे। महाराजा दाहिर ने इन्कार करते हुए लिख भेजा कि भारतीय परम्परा के अनुसार शरणागत की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

वरिष्ठ साहित्यकार डा. मुरलीधर जेटली के अनुसार एक बार महाराजा दाहिर ने हजरत इमाम हुसैन को भी (जब अन्य अरब कबीले उनको परेशान कर रहे थे) बहुत स्नेह से आमंत्रित किया था कि वे सिन्ध में आकर आराम से रहें। इस पर इमाम हुसैन ने सपरिवार सिन्ध में शरण लेने के लिए प्रस्थान किया परन्तु मार्ग में ही यजीद ने उन पर आक्रमण कर दिया। संघर्ष में हजरत इमाम हुसैन को उनके परिवार समेत कत्ल कर दिया गया।

जब दाहिर को मालूम हुआ कि कासिम ने अपनी सेना के साथ सिन्धु नदी पार कर ली है और वह रावर दुर्ग की ओर बढ़ रहा है तो उन्होंने अलाफी को बुलाकर कहा- *'' अलाफी! हमने तुम्हें संकट के समय संरक्षण दिया और सम्मानित पद पर रखा है। अरब सेना रावर दुर्ग की ओर बढ़ रही है, तुम अरब सेना के बारे में अच्छी तरह परिचित हो इसलिए तुम हमारी सेना के साथ आगे रहो।''* इस पर अलाफी ने महाराजा को उत्तर दिया ***''महाराजा मैं आपका ऋणी हूँ, आपकी मेरे ऊपर बहुत महरबानियाँ रही हैं किन्तु हम मुसलमान हैं, हमारी तलवार मुसलमान सेना के विरुद्ध नहीं उठेगी। अगर मैं मुसलमानों द्वारा मारा गया तो मेरी मौत एक अपवित्र नीच आदमी की होगी। अगर मैं उनकी मौत का कारण बनता हूँ तो दोजख की आग मेरी सजा होगी। अगर मैंने आपको कोई उचित सलाह दी तो अरब सेना मुझे नहीं छोड़ेगी। इसलिये मुझे शांतिपूर्वक जाने दें।''*** महाराजा ने उदारता दिखाते हुए उसे जाने दिया। इतिहासकार बताते हैं कि बाद में उसने अलोर दुर्ग का दरवाजा अरब सेना के लिए खुलवाने का नीच कार्य किया था।

महाराजा दाहिर का बलिदान

१६ जून ७१२ ई. को युद्ध प्रारम्भ हुआ और इतिहासकारों के अनुसार गुरुवार २० जून, ७१२ ई. तक पांच दिन चला। पहले तीन दिन तक दोनों ओर के अग्रिम दस्तों में सुबह से शाम तक युद्ध चला। चौथे दिन महाराजा दाहिर पाँच हजार सैनिकों और हाथियों के साथ युद्ध स्थल पर आये। युद्ध प्रारम्भ होने पर दाहिर की सेना ने अरबों को पीछे धकेल दिया। शाम को युद्ध बंद हो

गया। पांचवें दिन अर्थात् २० जून को दाहिर अपने दो पुत्रों जयसिंह और घरसिया तथा अनेक इष्टजनों के साथ १० हजार घुड़सवारों एवं हाथियों के साथ युद्ध करने आये। भयंकर युद्ध छिड़ गया। दोपहर बाद यह प्रतीत होने लगा कि हिन्दू सेना की विजय सन्निकट है , अरब सेना रण स्थल से पलायन करने लगी। कासिम ने इस्लाम का वास्ता देकर फिर से सैनिकों को इकट्ठा किया। सायंकाल तक युद्ध होता रहा। युद्ध के अन्तिम समय में 'नफथा' (आग का गोला फैंकने वाला अस्त्र)की चोट से दाहिर का हाथी घायल होकर पास के तालाब में घुस गया। अकेला पाकर अरब सैनिकों ने दाहिर को घेर लिया। तालाब में अकेले महाराजा दाहिर अरब सैनिकों से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

महारानी का संघर्ष और जौहर

महाराजा की मृत्यु के बाद जयसिंह, महारानी ,मंत्री सियाकर तथा बचे हुए सैनिक रावर दुर्ग में इकट्ठे हुए। दाहिर के मंत्री की सलाह पर जयसिंह नई कुमुक और नई शक्ति बटोरने के लिये सुदृढ़ दुर्ग ब्राह्मणाबाद चले गये।

रावर दुर्ग में महारानी के नेतृत्व में पन्द्रह हजार सैनिकों ने अरब सेना का मुकाबला किया। अरबों ने दुर्ग को घेर लिया। उनके पास पत्थर बरसाने वाले 'मंजनीक' अस्त्र थे। किले को ध्वस्त होते देखकर महारानी ने अपना तथा सैकड़ों अन्य स्त्रियों का सतीत्व बचाने के लिये 'जौहर' कर लिया। **मुसलमानों के भारत पर किये गए आक्रमणों में, स्त्रियों द्वारा अपने सतीत्व की रक्षा के लिए किये जाने वाला यह पहला जौहर था।**

कासिम ने रावर पर कब्जा कर लिया। अब वह ब्राह्मणाबाद की ओर मुड़ा जहां दाहिर का बड़ा बेटा जयसिंह अपनी शक्ति बटोरने में लगा था। कासिम ने जयसिंह को संगठित होने का अवसर नहीं दिया तथा ब्राह्मणाबाद पर घेरा डाल दिया गया। जयसिंह वीर था उसने पहले भी अरबों से युद्ध जीते थे। छः माह तक ब्राह्मणाबाद का घेरा चलता रहा। जयसिंह कई बार दुर्ग से निकलकर अरबों पर छापामार आक्रमण कर उन्हें तंग करता रहा। जयसिंह को आखिर ब्राह्मणाबाद छोड़कर रेगिस्तान की ओर (कुरिज की ओर) पलायन करना पड़ा। जयसिंह कासिम की मृत्यु तक भूमिगत रहकर अपनी शक्ति बढ़ाता रहा। शक्ति संगठित कर कासिम की मृत्यु के बाद उसने अरबों पर धावे बोलने शुरू कर दिये। इस प्रकार जयसिंह ने सिन्ध का काफी हिस्सा वापिस जीत लिया ।

कासिम ने अब सिन्ध की राजधानी अलोर को विजय करने के लिये प्रस्थान किया। वहां का शासक दाहिर का एक पुत्र 'कूफी' था। उसे महाराजा दाहिर की मृत्यु का पता नहीं था। उसने कई दिनों तक अरबों से कड़ा मुकाबला किया। यहां जब महाराजा की मृत्यु का संदेश मिला तो अलोर की जनता हतोत्साहित हो गई। कूफी और उसकी सेना में भी निराशा छा गई। फिर भी वह अरब सेना के विरुद्ध संघर्ष करता रहा। इतिहासकार पी.एन.ओक के अनुसार एक दिन मुहम्मद अलाफी (जिसे दाहिर ने शरण दी थी) ने धोखे से दुर्ग का दरवाजा खुलवा दिया। अरब सेना दुर्ग में धुस गई। कूफी ने अलोर त्याग दिया और अलोर पर भी अरब सेना का अधिकार हो गया।

मुलतान में अन्तिम संघर्ष

अरब सेना अब अन्तिम महत्वपूर्ण नगर मुलतान की ओर बढ़ी। रास्ते में धोलकुण्ड के दुर्ग पर ७ दिन युद्ध चला। यह दुर्ग फतह कर अरब सिक्काह पहुँचे जहां का शासक दाहिर परिवार का योद्धा 'बझरा' था। उसने अरब सेना का मुकाबला किया। १७ दिन चले संषर्घ में अरबों के २० प्रसिद्ध सेनापति तथा २१५ सीरियाई यौद्धा मारे गये। यहां अरब सेना को नाकों चने चबाने पड़े। हिन्दू सेना दुर्ग से अरबों पर निरंतर तीर और पत्थर बरसाती रही। मुस्लिम शिविर में खाद्यान्न की इतनी कमी हो गई कि तीन गधे अनाज का मूल्य ५०० दिरहम तक हो गया। यहां भी एक देशद्रोही ने दुर्ग में पानी पहुँचाने के स्रोत का पता कासिम को बता दिया। पानी का मार्ग रोक दिया गया। फलस्वरूप प्यास के मारे दुर्ग रक्षकों को अन्त में आत्म समर्पण करना पड़ा। इस प्रकार सिन्ध का अन्तिम सुदृढ़ दुर्ग भी अरबों के हाथ लग गया। यहाँ ६ हजार व्यक्तियों का वध किया गया। मुसलमानों को अपार सम्पत्ति यहां से मिली।

सिन्ध की लूट

कासिम को पूरा सिन्ध जीतने में लगभग १५ माह लग गये। छोटे-बड़े ७० शासकों से उसको संघर्ष करना पड़ा। हर विजित स्थान पर हत्याएं, औरतों-बच्चों को गुलाम बनाना, उनका मत परिवर्तन, महिलाओं का शीलभंग, हिन्दू व बौद्ध मंदिरों को ध्वस्त कर मस्जिदें खड़ी करना, यह कार्यक्रम समान रूप से चला।

धन की लूट भी खूब हुई। मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण में ६० लाख दिरहम खर्च हुए थे। उसने सिन्ध की लूट के हिस्से के रूप में एक करोड़ बीस लाख दिरहम हज्जाज को भिजवाये। यह लूट का पांचवां हिस्सा था जो वायदे के अनुसार (खर्च का दुगना) खलीफा को भेजा जाना था।

इतना सब होने के बाद भी हिन्दुओं ने ५०-६० वर्ष के अन्दर सिन्ध में अरब राज्य को लगभग समाप्त कर दिया। अरबों का सिन्ध में केवल नवनिर्मित शहर 'मंसूरा' में अस्तित्व रह गया। हजारों मुसलमान बने लोगों को वापिस हिन्दू बनाया। इसके पश्चात आगामी ३०० वर्षों तक सिन्ध पर इस्लाम अनुयायियों का कोई बड़ा आक्रमण नहीं हुआ। □

- ३/१५३, मालवीय नगर, जयपुर

(कई इतिहासकारों के अनुसार जिस समय कासिम अलोर में विध्वंस कर रहा था, उसी समय राजकुमार जयसिंह वहाँ आ पहुँचे। एक वीरों की टुकड़ी भी उनके साथ थी । उन्होंने द्रुत गति से आक्रमण कर कासिम का वध कर दिया। कासिम की सेना भाग खड़ी हुई। जयसिंह ने कासिम का शव एक बैल की खाल में बन्द कर हज्जाज के पास भेज दिया -सं.)

दाहरसेन स्मारक है राष्ट्र–रक्षा का प्रेरणा केन्द्र

हिंदुस्तान शूरवीरों की धरती है। राष्ट्र, धर्म और मातृ शक्ति पर होने वाले प्रत्येक हमले का हिंदुस्तानी योद्धाओं ने मुंह तोड़ जवाब दिया है। इसलिए कहा गया है कि-

धर जातां, जातां धरम, त्रियां पड़ंता ताव।
ऐ तीनों दिन मरण का, का रंक का राव॥

यही कारण है कि शताब्दियों से विदेशी-विधर्मियों के आक्रमणों ,षड़यंत्रों एवं जन-धन की हानि के बावजूद भारत को कोई स्थायी रूप से गुलाम बनाकर नहीं रख सका। अलेक्जेण्डर ने जब भारत पर हमला किया तो पौरव ने मुंह तोड़ उत्तर दिया और उसकी सेना के हजारों सैनिकों को मकरान के रेगिस्तान में भटक कर अपने प्राण गंवाने पड़े और भारत छोड़ने को विवश होना पड़ा।

अरबों और तुर्कों ने लूट-खसोट की नीयत से भारत में घुसपैठ कर हमला किया और उनमें से अधिकांश अपने प्राण गंवा बैठे। अरबी सरदार हज्जाज ने अपने दामाद मुहम्मद बिन कासिम को भारी सैन्य-बल एवं शस्त्रों के साथ भारत के सिंध पर हमलावर बनाकर भेजा। भौगोलिक दृष्टि से सिंध ऐसा प्रांत था जो समुद्र से लगा हुआ था और हिंदुस्तान के दुश्मनों के लिए सिंध को पार पाये बिना आगे बढ़ना मुश्किल था। सिंध प्रदेश ही भारत का सुरक्षा प्रहरी था।

मुहम्मद बिन कासिम का सिंध के महाराज दाहर सेन ने प्राण प्रण से मुकाबना किया। हिन्दुत्व से विलग होकर हिन्दुत्व से बड़ी जीवन पद्धति बनाने का स्वप्न देखने वाले लोगों का हश्र बहुत बुरा हुआ। ऐसे स्वप्न देखने वालों को अपने अस्तित्व को मिटाना पड़ा , क्योंकि हिंदू जीवन दर्शन शाश्वत है, सनातन है और कालजयी है। बौद्धों ने हिन्दुत्व को क्षति पहुँचाने की नीयत से मुहम्मद बिन कासिम का साथ दे दिया।

युद्ध के मैदान में भी राजा दाहर धर्म, नारी एवं गौ-रक्षा के प्रति संवेदनशील थे। मुहम्मद बिन कासिम ने दाहर सेन की इसी गुणवत्ता का लाभ उठाकर कुछ बंदी बनाई गई महिलाओं और अरबी सैनिकों को महिलाओं का वेश धारण करा कर एक कोने से हाहाकार प्रारंभ करवाया कि -**'बचाओ–बचाओ, अरब अस्मत लूट रहे हैं।** यह आवाज सुनकर नारी-रक्षा के धर्म का पालन करते हुए दाहरसेन अकेले उस दिशा में चले गए।

इस प्रकार उनके साथ धोखा हुआ और दुश्मन मुहम्मद बिन कासिम और उसकी सेना ने दाहिर को घेरकर तीर-कमानों से घायल कर दिया । अग्नि बाणों से घायल सिंधु गज नदी में घुस गया और नदी के मध्य अपने शस्त्रों से मुकाबला करते हुए महाराजा दाहरसेन अमर-शहीद हो गये। इसके बाद उनकी महारानी लाडी बाई ने नेतृत्व सम्भाला और अरब सेना का मुकाबला किया। परंतु चारों तरफ से अरब सेना से अपने को घिरा

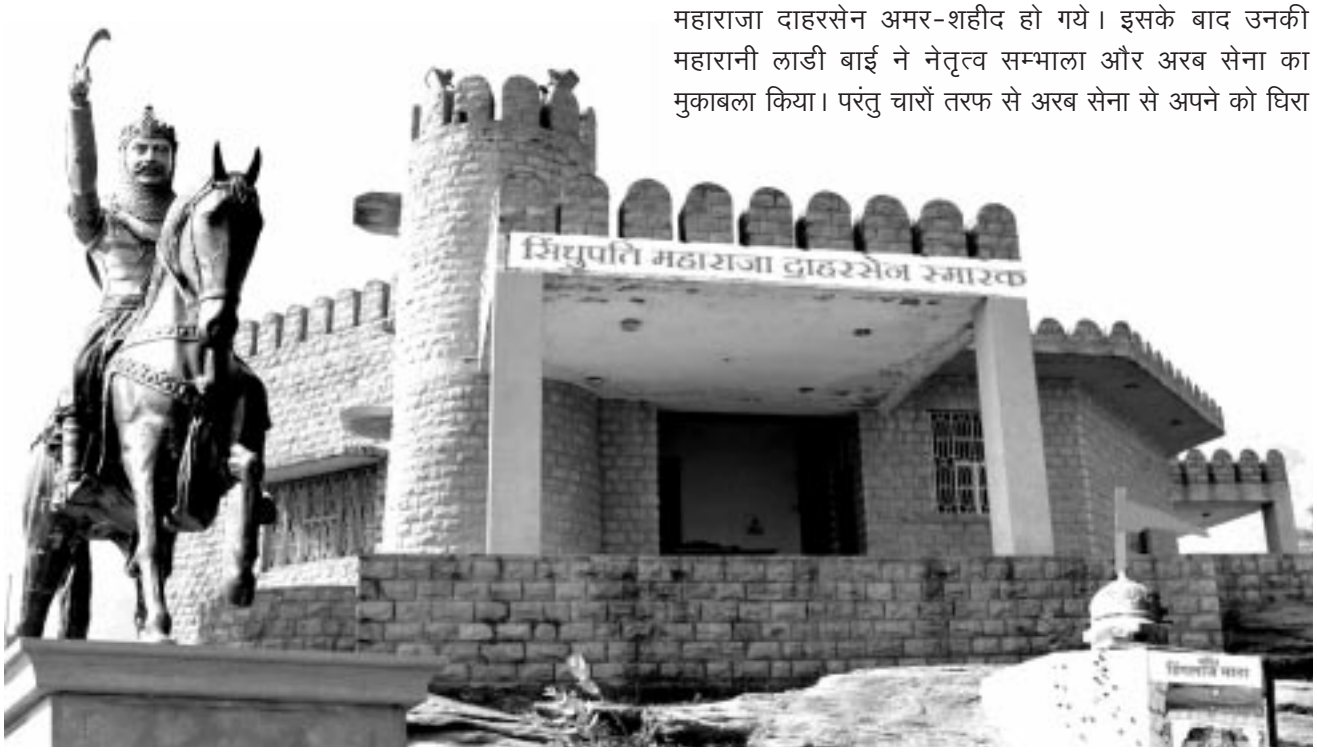

हुआ देखकर उन्होंने वीरव्रती ललनाओं के साथ जौहर को अंगीकार किया।

राजकुमारी सूर्यकुमारी और परमाल को जब बंदी बनाकर खलीफा के पास भेंट स्वरूप भेजा गया तो उन्होंने अपनी बुद्धि और त्वरित चतुरता का उपयोग किया। उन्होंने एक कहानी गढ़ी और खलीफा से निवेदन किया कि आपके पास हमें भेजने से पहले मुहम्मद बिन कासिम ने हमें तीन रात अपने हरम में रखा था। इस कारण हम पवित्र नहीं हैं। यह बात सुनकर खलीफा आग-बबूला हो गया। उसने मुहम्मद बिन कासिम को सांड की खाल में सिलकर उसके समक्ष प्रस्तुत करने का आदेश दिया। खलीफा के आदेश की पालना हुई और मुहम्मद बिन कासिम को जिंदा ही सांड की खाल में सिलकर खलीफा के समक्ष पेश किया गया, तब तक उसके प्राण पखेरु उड़ चुके थे।

हिंदुस्तान की इस साहसिक घटना को आम आदमी के लिए प्रेरणा का चिर स्थायी केन्द्र बनाने के उद्देश्य से लेखक को नगर सुधार न्यास अजमेर के अध्यक्षीय कार्यकाल में दाहरसेन का स्मारक बनाने का सुअवसर मिला। इस राष्ट्रीय महत्व के स्मारक बनाने के लिए सभी न्यासियों एवं अधिकारियों की सहमति बनी और प्रारम्भ हुआ स्मारक का निर्माण।

दाहरसेन स्मारक लगभग २५ हजार वर्ग गज भूमि पर एक विशाल श्याम वर्ण चट्टानों के समूह पर निर्मित हुआ। स्मारक में सिंधुपति दाहर और मुहम्मद बिन कासिम के युद्ध, लाड़ी बाई एवं राजकुमारी सूर्यकुमारी और परमाल की बहादुरी को सुंदर चित्रों की दीर्घाओं में सुसज्जित किया गया। स्मारक परिसर में एक किलानुमा भव्य स्मारक भवन बनाया गया, जिसमें सिंध से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ और प्रमुख स्थलों की छायाकृति को प्रदर्शित किया गया । विश्व की प्राचीनतम सभ्यता के चिन्हों को भी प्रदर्शित किया गया। यहीं पर हिंगलाज माता का एक गुफा में मंदिर भी बनाया गया। दाहर सेन, झूलेलालजी, संत कंवर राम जी, हेमू कालानी, स्वामी विवेकानन्द एवं भारत माता की मूर्तियां स्थापित की गई। स्मारक में गुरुनानकदेव जी का स्मृति स्थल भी निर्मित हुआ।

पर्यावरण की दृष्टि से पूरे स्मारक परिसर में विभिन्न प्रजातियों के सैकड़ों पेड़ लगाये गए। वर्तमान में स्मारक में सभा भवन एवं समारोह स्थल भी उपलब्ध हैं। आज यह स्मारक आमजन के लिए राष्ट्र रक्षा की प्रेरणा देने वाला प्रमुख केन्द्र बन चुका है। □

- ओंकार सिंह लखावत

जय झूलेलाल

शोभाराम गुलाबवानी

पूर्व चेयरमेन

नगर पालिका, बूँदी (राज.)

जी-1 सुन्दर नगर, नंदन रोड़, सूरत

0261-2762506

मो. 9376927482

पंजीयन सं.-5/चित्तौड़गढ़/94-95 ॥ ॐ ॥ 0145-2603524

विद्या भारती, चित्तौड़ प्रांत

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान एवं, विद्या भारती राजस्थान से सम्बद्ध)

'माधव स्मृति' आदर्श विद्या निकेतन (माध्यमिक)

परिसर, पुष्कर- मार्ग अजमेर, 305004

विद्या भारती चित्तौड़ प्रांत का उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक, आध्यात्मिक, चारित्रिक गुणों का विकास कर राष्ट्र समर्पित जीवन का निर्माण करना है। विद्यार्थियों के गुणों का विकास के लिए संस्था द्वारा 11 जिलों 5 वरिष्ठ माध्यमिक 56 माध्यमिक, 87 उच्च प्राथमिक 67 प्राथमिक कुल 215 विद्यालयों में 2,632 आचार्य, आचार्याओं द्वारा 73,386 छात्रों को अध्यापन कार्य कराया जा रहा है। वनवासी एवं पिछड़े वर्ग के छात्रों को नि:शुल्क शिक्षा एवं संस्कारित करने के लिए 210-एकल विद्यालय तथा 137- संस्कार केन्द्र प्रांत में चलाए जा रहे हैं।

प्रांत में दो अर्द्ध आवासीय विद्यालय चलते हैं जिसमें से एक कोटा में है, इसमें 122 भैया रहते हैं, दूसरा अर्द्ध आवासीय विद्यालय कोठारा (बांसवाडा) में नि:शुल्क चलता है। इस विद्यालय में 145 छात्रों को 6 आचार्यों द्वारा अध्यापन कराया जाता है।

कक्षा 10 बोर्ड राज्य की वरीयता सूची में भैया नवीन सांखला, विद्या निकेतन फतहनगर ने 16 वां स्थान प्राप्त किया। एवं जिला वरीयता सूची में अजमेर-10, चित्तौड़-7, उदयपुर-4, डूंगरपुर-1, बांसवाड़ा-1, कोटा-1 भैया बहिनों ने स्थान प्राप्त किया।

प्रो रमेश चन्द्र शर्मा — अध्यक्ष

राम प्रकाश बंसल — मंत्री

तारानी हॉस्पिटल

सर्जिकल एवं यूरोलोजिकल सेन्टर

डॉ. ईश्वर दास तारानी

(सर्जन व यूरोलॉजिस्ट)

उपलब्ध सुविधाएं

- ऑपरेशन, दूरबीन द्वारा प्रोस्टेट व पथरी का सफल इलाज
- सभी प्रकार के दन्त रोगों का इलाज
- नाक, कान, गला रोग विशेषज्ञ
- मेडिकल स्टोर
- डिलीवरी, टीकाकरण
- लेबोरेट्री जाँच, एक्सरे, ई.सी.जी. प्राइवेट व डीलक्स रूम
- 24 घण्टे एम्बूलेंस सुविधा

122/69, 122/218-219, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर

फोन: 0141-2781256, मो. : 93146 26599

पाथेय कण पाक्षिक के

सभी पाठकों का

सिन्धुपति महाराजा

दाहिरसेन विशेषांक

के प्रकाशन पर

हार्दिक अभिनन्दन

ज्ञानदेव आहूजा

विधायक (रामगढ़) अलवर

मो.9414 387274

आज के पाकिस्तान में स्थित हिन्दू श्रद्धा स्थल

 ओंकार सिंह लखावत

पैंसठ वर्ष पूर्व पाकिस्तान भारत का ही हिस्सा था। विभाजन के साथ ही देशभर में फैले हिन्दू आस्था केन्द्र भी विभाजित हो गये। पाकिस्तान में रह गये इन धार्मिक स्थलों को वहाँ की सरकार ने उपेक्षित कर दिया। अधिकांश को तो नष्ट कर दिया गया किन्तु अब भी कुछ हिन्दू आस्था केन्द्र जीर्ण-शीर्ण हालत में पाकिस्तान में हैं। शक्तिपीठ हिंगलाज, कटासराज मंदिर, ननकाना साहिब, तक्षशिला, साधुबेला, दरबार साहिब हालानी, खारोड़ा की देवल माँ एवं टीला जोगियान सहित अन्य हिन्दू आस्था केन्द्रों पर अब भी तीर्थ यात्री जाते हैं। इनकी संक्षेप में जानकारी इस प्रकार है-

कटासराज

पंजाब प्रान्त में स्थित कटास गाँव में यह ऐतिहासिक हिन्दू आस्था केन्द्र स्थित है। यह चकवाल जिले में आता है। ऐसी मान्यता है कि महाभारत काल में पांडवों ने अपना अज्ञातवास

काल यहीं व्यतीत किया था। यहाँ पर भगवान शिव का मंदिर है जो प्राकृतिक दृष्टि से भी एक मनोरम स्थान है। यही कारण है कि पाकिस्तान सरकार इस स्थान को विश्व धरोहर के रूप में सूचीबद्ध करवाने का प्रयास कर रही है।

ननकाना साहिब

'राय भाई दी तलवंडी' गाँव में नानक देव जी का सन् १६६९ में जन्म हुआ था। यह स्थान लाहौर से ७५ कि.मी. दूरी पर स्थित है। सिख पंथ के प्रथम गुरु नानक देव जी के कारण इस स्थान का नाम अब ननकाना साहिब है। यहां का गुरुद्वारा भी ननकाना साहिब गुरुद्वारे के नाम से प्रसिद्ध है। मई २००५ में जिला शेखुपुरा का नाम बदल कर ननकाना साहिब के नाम पर जिला ननकाना साहिब कर दिया गया है। इस क्षेत्र में अनेक गुरुद्वारे हैं।

पेशावर का पंजा साहिब

मक्का-मदिना की यात्रा के बाद गुरु नानक देव लौटते समय पेशावर के पास हसन अब्दाल की पहाड़ी के नीचे रुके थे। यहाँ उन्होंने अपने मुस्लिम शिष्य मरदाना को पानी लेने भेजा किन्तु मुस्लिम वली ने पानी नहीं दिया और गुरु नानक जी को चुनौती दी। गुरु नानकदेव ने एक पत्थर हटवाकर वहाँ जल का नया स्रोत बनाया, वली ने चट्टान का बड़ा हिस्सा गिराकर उसे दबाने का प्रयास किया तो गुरु जी ने उसे अपने हाथ से रोका था। वही स्थान पंजा साहिब के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

साधुबेला

साधुबेला, सिंधु नदी के प्रवाह से घिरे हुए सक्खर के एक मनोरम टापू पर सफेद संगमरमर से बना हुआ धार्मिक और ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है। स्वामी वनखण्डी महाराज उदासीन ने १८२३ में इसकी स्थापना की थी। लोक मान्यता के अनुसार देवी अन्नपूर्णा की कृपा से वनखण्डी महाराज का कमण्डल चमत्कारिक रूप से अन्न की पूर्ति करता था। साधुबेला में २४ घण्टे धूणी प्रज्वलित रहती है और श्रद्धालु उसकी परिक्रमा कर अपनी मन्नत की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। वर्षभर देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु साधुबेला के दर्शन करने आते हैं।

दरबार साहिब हालानी

जिला नवाब शाह के 'हालानी' गांव में दरबार साहिब हालानी गुरुद्वारे की स्थापना सन् १७८७ में बाबा सुखदेव साहिब द्वारा की गई। हालानी दरबार में वैशाखी और चाँद के दिन विशाल मेले का आयोजन होता है। यहाँ

प्रतिदिन लंगर वितरण होता है। खैरपुर मीर के सोराब खां हालानी दरबार के दर्शन कर अत्यधिक प्रभावित हुये। उन्होंने श्रद्धा से ३० एकड़ भूमि हालानी दरबार को भेंट कर निवेदन किया कि उससे होने वाली उपज से श्रद्धालुओं के निःशुल्क लंगर की व्यवस्था की जावे। हालानी दरबार की गद्दी पर बाबा किशनदास साहिब, बाबा हरिदास साहिब, बाबा मेहर बक्ष साहिब बैठे थे।

तक्षशिला

तक्षशिला पंजाब राज्य की राजधानी इस्लामाबाद से ३२ किलोमीटर दूर है। तक्ष्य भगवान राम के छोटे भाई भरत के पुत्र थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार महाभारत का प्रथम वाचन

तक्षशिला में वेद व्यास के शिष्यों ने किया था। जन्मेयजय द्वारा लगातार १२ वर्ष तक किये गये सर्प-सत्र यज्ञ के आयोजन के अवसर पर महाभारत पारायण का उल्लेख मिलता है।

तक्षशिला विश्व की पुरामहत्व की प्राचीनतम धरोहर और शिक्षा के प्रमुख केन्द्र के रूप में जानी जाती है। वहाँ तक्षशिला विश्वविद्यालय स्थापित है। प्राचीन काल में तक्षशिला व्यापार के ३ प्रमुख मार्गों का केन्द्र बिन्दु रहा है, जो पाटलिपुत्र, पेशावर, कश्मीर और मध्य एशिया में श्रीनगर, मनसहरा एवं हरिपुर घाटी के मध्य से गुजरता था।

तक्षशिला के प्राचीन बौद्ध स्तूप आज भी विश्वभर के श्रद्धालुओं के दर्शन और आस्था के केन्द्र बने हुये हैं।

गुरुद्वारा देहरा साहिब

यह गुरुद्वारा लाहौर में रावी के किनारे पर स्थित है। पांचवें पातशाह गुरु अर्जुन देव को विदेशी मुगल बादशाह जहाँगीर के आदेश पर लाहौर में भयंकर यातनाएं दी गई थीं। उन्हें गाय की खाल में सिलने का राक्षसी कृत्य किया जाने वाला था अतः यहीं पर उन्होंने रावी में जल समाधि ले ली थी। उसी स्थान पर गुरुद्वारा देहरा साहिब बना हुआ है।

लक्ष्मी नारायण मन्दिर

कराची के समुद्र किनारे विशाल घाट पर लक्ष्मीनारायण मन्दिर स्थित है। घाट के मुख्य द्वार पर अंग्रेजी में 'This Ghat is reserved for Hindu Men' का शिलालेख लगा हुआ है।

इस घाट पर हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ व चित्र लगे हुए हैं। मंदिर एवं घाट का उपयोग हिन्दू समाज के लोग अपने धार्मिक क्रिया-कर्म के लिए करते हैं।

खारोड़ा की देवल माँ

उमरकोट जागीर व उमरकोट शहर के बीच स्थित है चारणों का गाँव - खारोड़ा। यहाँ तीन हजार बीघा के विशाल ओरण (गोचर भूमि) के बीच लोक पूजित देवल माँ का 'थान' है। देवल माँ को आवड़ आशापुरा माता का अवतार माना जाता है। इस सम्बन्ध में एक दोहा लोक प्रचलन में है-

बहचर बूट जिसी खट बेटी, आप प्रतख आवड़ अवतार।
'दुलौ' सकव कहै मां देवल, परवाड़ा पावै कुण पार ॥

रत्नेश्वर महादेव मन्दिर

कराची में रत्नेश्वर महादेव मन्दिर है। इसका भव्य मुख्य द्वार जोधपुर के पत्थर का बना हुआ है। इस मन्दिर में शेषनाग पर विराजमान भगवान विष्णु, लक्ष्मीजी, गणेश जी, सीताराम जी, चामुण्डा माता एवं शिव परिवार आदि की मूर्तियां स्थापित हैं। अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी यहां हैं।

टीला जोगियान

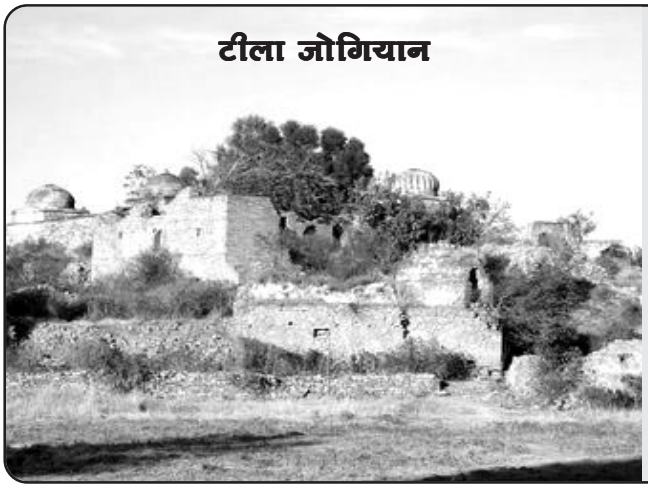

समुद्र तल से ३२०० फुट ऊँचाई पर स्थित टीला जोगियान पंजाब (पाकिस्तान) में है। झेलम शहर से पश्चिम में २५ किलोमीटर दूरी पर स्थित यह स्थान लगभग ४००० वर्षों से हिन्दुओं द्वारा सूर्य उपासना के लिये उपयोग होता आया है। गुरू गोरखनाथ जी वहाँ गये थे। कनफट नाथ संप्रदाय का यह प्रमुख केन्द्र रहा है। यह स्थान कनफटा जोगियों द्वारा गुरु गोरखनाथ के आदेश से पूजित होता है। यहाँ गुरुनानक देव जी ने भी ४० दिन साधना की थी। इसकी स्मृति में महाराजा रणजीत सिंह के शासन काल में एक बावड़ी भी निर्मित की गई। बादशाह जहाँगीर एवं पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भी वहाँ अपनी आस्था प्रकट करने गये थे।

पंचमुखी हनुमान मन्दिर

यह मन्दिर अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य पंचमुखी हनुमान जी की मूर्ति से सुशोभित है। सैकड़ों श्रद्धालु प्रतिदिन इस मन्दिर के दर्शन करने आते हैं।

थान मंदिर

सिन्धु नदी के तट पर झूलेलाल के दिव्य चमत्कारों का प्रतीक यह मंदिर ठट्टा में है। मान्यता है कि यहीं पर झूलेलाल भव्य मंदिर में बैठे हुए प्रकट हुए थे।

नसरपुर मंदिर

सिन्ध के नसरपुर में वरुणावतार झूलेलाल का जन्म हुआ था तथा यहीं पर उन्होंने सबसे पहले जल एवं ज्योति की उपासना का दिव्य संदेश दिया था। यहां झूलेलाल का एक भव्य एवं सुन्दर मंदिर है। यह दरियापंथ के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है।

मनोराद्वीप का झूलेलाल मंदिर

हिंगलाज शक्तिपीठ के दर्शन कर कराची की ओर लौटते समय झूलेलाल 'मनोरा' नामक द्वीप पर ठहरे थे। इसी कारण वहां झूलेलाल का मंदिर बनाया गया। यहां चैत्र एवं आश्विन के चन्द्रोदय पर उत्सव आयोजित होते हैं।

श्री उडेरोलाल मंदिर

यह मंदिर उडेरोलाल नामक स्थान पर स्थित है दरिया पंथ की स्थापना कर यहां एक मुसलमान की भूमि पर झूलेलाल ने मंदिर बनवाया था। यहीं पर झूलेलाल की मजार भी है। हिन्दू एवं मुसलमान सम्मिलित रूप से यहां उत्सव मनाते हैं। चेटीचंड पर झूलेलाल को नमन करने हेतु यहां सिन्ध, कच्छ एवं पंजाब के दरियापंथी बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं।

स्वामी नारायण मन्दिर

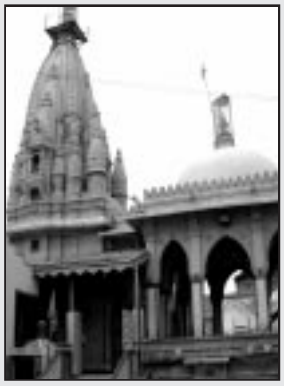

कराची में हिन्दू समाज की सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र **स्वामी नारायण मन्दिर** है। नित्य प्रति सैकड़ों श्रद्धालु स्वामी नारायण मंदिर में दर्शन करने आते हैं। मंदिर परिसर में गुरूद्वारा एवं शिव मन्दिर भी स्थापित हैं। यहाँ धर्मशाला, आवास व समारोह के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध है। 'पाकिस्तान हिन्दू कौंसिल' स्वामी नारायण जयंती, रामनवमी, जन्माष्टमी, दशहरा, होली एवं दिवाली समारोह सम्पन्न कराती है। इसी मंदिर से प्रतिवर्ष हिंगलाज यात्रा प्रारम्भ होती है। यहीं पर हिंगलाज सेवा मंडली का कार्यालय भी स्थित है।

इनके अतिरिक्त **भगवान शंकर** के आदम तीर्थस्थल, शिकारपुर का शिवमंदिर, कराची के पास झिमपिर का हेमकोट महादेव मंदिर तथा **माँ दुर्गा** के लक्की गुफा का महाकाली, रोहड़ी की पहाड़ी गुफाओं में भगवती काली एवं हैदराबाद का काली मंदिर प्रसिद्ध हैं। सिन्ध प्रान्त का 'मेथेहेन' भी प्रमुख तीर्थ स्थल है जो सिन्धु नदी के तट पर है। इसी जगह वेद की अनेक ऋचाओं का आविर्भाव हुआ था। □

सुशिक्षा !! सुसंस्कार!! सुस्वास्थ !!

आदर्श विद्या मन्दिर समिति, भरतपुर

दूरभाष – 222568, 226928

(विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान एवं भारतीय शिक्षा समिति जयपुर से सम्बद्ध)

नव संवत्सर 2069 एवं महाराजा दाहरसेन के 13 वॉ शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनायें।

बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास एवं संस्कार युक्त शिक्षा के लिए आदर्श विद्या मन्दिर में प्रवेश दिलावें ।

लक्ष्मीनारायण गुप्ता
अध्यक्ष

डॉ. यू.एस. जूरैल
व्यवस्थापक

आदर्श विद्या मन्दिर समिति परिवार, भरतपुर

।।ॐ।।

केशव विद्यापीठ समिति द्वारा संचालित

शंकर लाल धानुका उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर

जामडोली, जयपुर-302031 (राजस्थान)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर से मान्यता प्राप्त (हिन्दी माध्यम पूर्ण आवासीय शिक्षण संस्थान)

फोन नम्बर: 0141-2680932,2680680, Email-sldavmjamdoli@gmail.com

(पूर्ण आवासीय शिक्षण संस्थान, केवल छात्रों के लिए)

हमारी विशेषताएं

शैक्षिक उन्नयन

1.गुणवत्तापूर्ण शिक्षण 2. कैरियर काउंसिलिंग
3. विषय विशेषज्ञों द्वारा शिक्षण 4. वैदिक गणित प्रशिक्षण
5. सुसज्जित प्रयोगशालाएं 6. सामान्य ज्ञान प्रश्नमंच
7. समृद्ध पुस्तकालय-वाचनालय।

व्यक्तित्व निर्माण

1. भारतीय जीवन मूल्यों का समावेश 2. सौहार्दपूर्ण वातावरण
3. अनुशासित दैनिक दिनचर्या 4.गुरू-शिष्य सद्‌भाव
5 .रामायण प्रश्नोत्तरी 6. व्यक्तित्व विकास की कार्यशालाएं
7. श्री मद्‌भागवत् गीता का पठन-पाठन।

छात्रावास

1. हराभरा एवं आकर्षक परिसर 2. सुन्दर एवं व्यवस्थित आवास
3. बालकों की रूची अनुसार भोजन
4. अभिभावक-छात्र सम्पर्क सुविधा 5. आचार्यो द्वारा परिवार सम्पर्क
6. आपसी स्नेहपूर्ण भावना का विकास 7. पर्याप्त चिकित्सा व्यवस्था

रूचिकर प्रशिक्षण

1. योग एवं प्राणायाम प्रशिक्षण 2. पर्याप्त खेल मैदान
3. संस्कारक्षम शिक्षा 4. वाद्ययंत्रों का प्रशिक्षण
5. हैण्ड बॉल खेल में विशेषज्ञता 6. घोष प्रशिक्षण
7. एन.एन.सी. की एयरविंग

प्रवेश सूचना

कक्षा- VI से XII में प्रवेश अप्रैल, 2012 से प्रारम्भ

(विषय-कक्षा XI व XII में विज्ञान-गणित/जीव विज्ञान, वाणिज्य (कॉमर्स)

प्रवेश की जानकारी निम्न स्थान एवं दूरभाष से प्राप्त करें।

क्र.सं.	जिला	दूरभाष	क्र.सं.	जिला	दूरभाष	क्र.सं.	जिला	दूरभाष
1.	जोधपुर	**0291–2546174**	12.	भीलवाड़ा	01482-250822	23	सीकर	**015712–270501**
2	बाड़मेर	**0298–232753**	13	डूंगरपुर	02964-230341	24	चुरू	**01562–258072**
3	जैसलमेर	**02992–253766**	14	कांकरोली	02952-230948	25	झुंझूनूं	**01592–233321**
4	पाली	**0293–3332287**	15	टोंक	01432-248153	26	सवाई माधोपुर	**07462–220779**
5	सिरोही	**02972–220490**	16	बीकानेर	0141-2545965	27	कोटा	**0744–2361544**
6	जालोर	**02969–220514**	17	श्रीगंगानगर	0154-2466828	28	बांरा	**07453–236075**
7	नागौर	**01582–240723**	18	हनुमानगढ़	01552-224707	29	बूंदी	**0747–2444899**
8	उदयपुर	**0294–2660984**	19	भरतपुर	05644-260320	30	झालावाड़	**07432–230080**
9	बांसवाड़ा	**02962–242927**	20	दौसा	01427-223833	31	करौली	**07464–250221**
10	चित्तौड़	**01472–251599**	21	धौलपुर	96608 95738	32	जयपुर	**0141–2680932**
11	अजमेर	**0145–2690895**	22	अलवर	0144-2341009			**0141–2680680**

आग्नेय तीर्थ हिंगलाज

सदाजीवत लाल चन्दू लाल

सिन्ध (पाकिस्तान) में स्थित हिंगलाज तीर्थ देवी के ५१ शक्तिपीठों में से एक है। इसका महत्व इसलिये है कि यहाँ 'सती' का ब्रह्मरंध्र कट कर गिरा था। प्रस्तुत लेख में हिंगलाज माता की रोमांचक यात्रा का वर्णन है। यह उस समय का है जब कराची से हिंगलाज तक सड़क मार्ग नहीं था और ऊँटों पर यात्रा करनी पड़ती थी। वर्तमान में तीर्थ-स्थल तक पक्की सड़क है तथा वाहनों से एक दिन से भी कम समय में हिंगलाज पहुँचा जा सकता है।-सं.

यह तीर्थ २५.३० अक्षांश उत्तर तथा ६५.३१ देशान्तर पूर्व के मध्य फैला हुआ है। सिंधु नदी के मुहाने से ८० मील पश्चिम तथा अरब सागर से १२ मील उत्तर में यह स्थित है। पहाड़ पर एक अंधेरी गुफा में, गुफा मंदिर है, वहीं महामाया हिंगलाज देवी विराजती हैं। पाकिस्तान के मुसलमान भी देवी को 'नानी' और वहां की तीर्थ-यात्रा को 'नानी का हज' कहते हैं।

तंत्रचूड़ामणि और वृहन्नीलतंत्र में यह तीर्थस्थान 'हिंगुला' तथा शिवचरित नामक तंत्र-ग्रन्थ में भी 'हिंगुला' नाम से वर्णित है। उक्त तन्त्र-ग्रन्थों के मत से हिंगलाज ५१ शक्तिपीठों में से एक पीठ है।

सती का शव कन्धे पर लादे हुये शिव इतस्तः घूमते जब वहां पहुंचे तो भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शव का छेदन किया था। हिंगलाज में सती का ब्रह्मरन्ध्र गिरा था, अतः इक्यावन शक्ति पीठों में से यह एक प्रमुख शक्तिपीठ है। त्रेता में श्रीराम ने जब रावण का वध किया था, तो ब्रह्म हत्या के पाप से वह यहां पर ही मुक्त हुए थे।

हिंगलाज में भैरव का नाम 'भीमलोचन' भैरव है।

नानी माँ का हज

कराची बन्दरगाह से उत्तर-पश्चिम में २४० कि.मी. दूर हिंगलाज देवी का स्थान है। बलूचिस्तान की लासबेला क्षेत्र की सम्माकतर तहसील में मकरान पर्वत माला के बीच हिंगोल नदी के किनारे हिंगलाज शक्तिपीठ है।

जब पाकिस्तान का जन्म नहीं हुआ था और भारत की पश्चिमी सीमा अफगानिस्तान और ईरान थी, उस समय हिंगलाज तीर्थ हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ तो था ही, बलूचिस्तान के मुसलमान भी हिंगलादेवी की पूजा करते थे उन्हें नानी कहकर। मुसलमान भी लाल कपड़ा, अगरबत्ती-मोमबत्ती, इत्र-फूलेल और सिरनी चढ़ाते थे। हिंगलाज शक्तिपीठ हिन्दुओं और मुसलमानों का संयुक्त महातीर्थ था।

कराची से ऊंट की यात्रा चन्द्रकूप होकर २५ दिन में हिंगलाज पहुंचती है और लौटते समय चन्द्रकूप न जाने से ५ दिन की बचत हो जाती है। इस तरह ऊंट की गति के पैमाने से कराची से हिंगलाज तक जाने-आने में ४५ दिन लगते हैं, कोई-कोई एक महीना में भी आते-जाते रहे हैं (अब कराची से हिंगलाज तक पक्की सड़क बन गई है और एक दिन में यात्रा पूरी हो जाती है)

हिंगलाज यात्रा और देवी दर्शन कराने वाला तीर्थ-पुरोहित या पण्डा छड़ीदार होता है। यह एकाधिकार नागनाथ के अखाड़ा के पास बसे हुए कुछ परिवारों को वंश परम्परा से प्राप्त है।

कराची से छः सात मील चलकर ''हाव'' नदी पड़ती है।

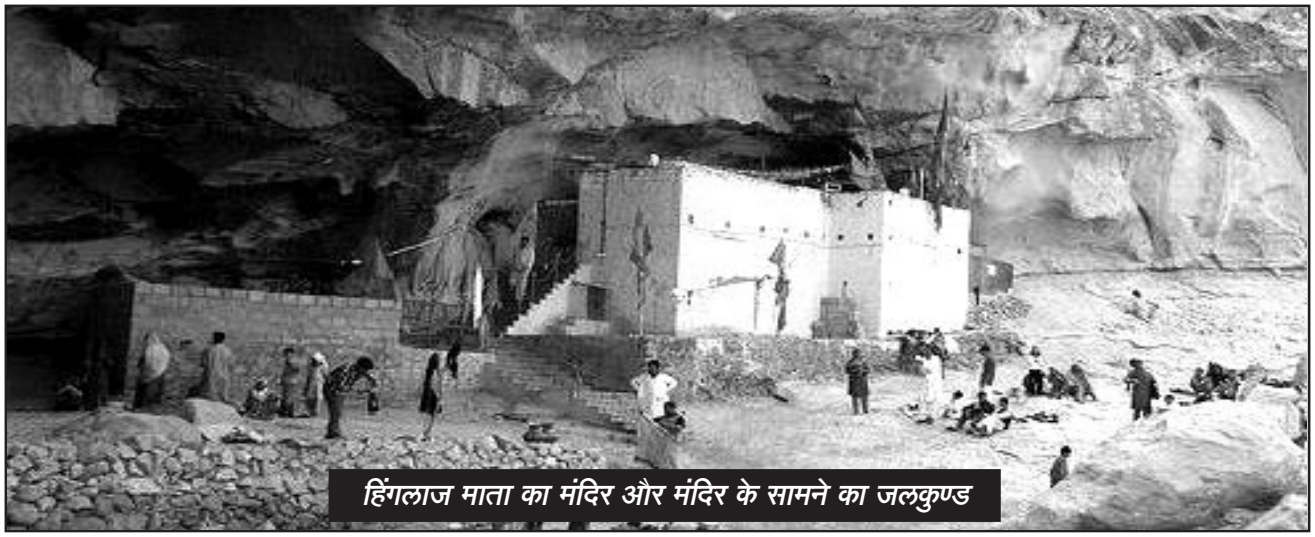

हिंगलाज माता का मंदिर और मंदिर के सामने का जलकुण्ड

यही से हिंगलाज की यात्रा प्रारम्भ होती है। यहीं पर शपथ ग्रहण की क्रिया यात्रियों द्वारा सम्पन्न होती है, यहीं पर लौटने तक की अवधि तक के लिए संन्यास ग्रहण किया जाता है और यहीं पर छड़ी का पूजन होता है और यहीं पर रात में विश्राम कर प्रातःकाल 'हिंगलाज माता की जय' बोलकर मरुतीर्थ की यात्रा प्रारम्भ की जाती है। 'हाव' नदी के इस पार सिन्ध प्रदेश की सीमा समाप्त होती है और नदी पार करने पर बलूचिस्तान के लासबेला राज्य की सीमा प्रारम्भ हो जाती है।

इस यात्रा में ऊंट का बड़ा ही महत्व है। रेगिस्तान में ऊंट ही पथ-निदेशक होते है, ऊंट वाले नहीं। कहां जाना है, कौन-सा रास्ता है यह तो ऊंट वाले नहीं, ऊंट ही जानते हैं। हां, रात में यदि आसमान साफ रहा तो ऊंट वाले सप्तर्षि और ध्रुव तारा की पहचान से पथ दिशा पहचानते हैं किन्तु दिन में नहीं। और ऊंट दिन हो या रात हो जहां उसे जाना है, जिधर पानी मिलने की सम्भावना रहती है, उधर का ही रास्ता वह पकड़ता है।

ऊँट वाले इतने ईमानदार, दयानतदार होते हैं कि अपनी जान को खतरे में डालकर यात्रियों की रक्षा करते हैं। सही सलामत नानी की हज तक ले जाना और वापस कराची पहुंचा देना वह अपना धर्म समझते हैं। सच पूछा जाय तो यात्रियों को जीवन और मरण के रहस्य का बोध भगवती हिंगलाज की तीर्थ यात्रा बहुत ही स्वाभाविक ढंग से करा देती हैं। इस क्षेत्र में वर्षा नाम मात्र को होती है। यदि यहां आठ-दस बरस में पानी बरस जाये तो खुशकिस्मती समझें।

चन्द्रकूपतीर्थ

बहुत ही वीभत्स और भयानक दृश्य है यहां का, चारों ओर मिट्टी की पहाड़ियों के बीच में एक पर्वत के शिखर से निकलता हुआ धुआं। यही है अनवरत धुआं उगलता हुआ चन्द्रकूप सरोवर जो धूम्रवाहन, या धूम्रमुख प्रेत की तरह भयानक, अति भयानक नजर आता है।

यही है वह चन्द्रकूप, जहाँ सबके पापों का क्षय होता है और यदि लोगों में से किसी ने पाप छिपाने की कुचेष्टा की तो चंद्रकूप उसे अपने करालगाल में भरकर उसका क्षय कर देता है। किसी कापालिक की धूनी है चन्द्रकूप या भौम नरक है। यह देव तीर्थ है या कराल मुख मृत्यु का द्वार है।

पहाड़ियों से घिरा हुआ ऊंचा पहाड़ ही ''चंद्रकूप'' है। भोर में ही यात्रीगण उस पहाड़ पर चढ़ते हैं। चढ़ाई कठिन नहीं है, लेकिन पैर फिसला करते हैं। वहां जाकर सब लोग चन्द्रकूप भगवान की महिमा, उनके प्रत्यक्ष चमत्कार अपनी आंखों से देखते हैं। वहाँ जो धुआं है, वह चंद्रकूप से ही उठता है। चंद्रकूप एक सरोवर है लेकिन पानी नहीं है सिर्फ बादल ही बादल हैं। सरोवर के अंदर धधकती हुई आग मिट्टी को ऊपर उछालती है। बड़े-बड़े बुल-बुले निरंतर उठते रहते हैं, इतने बड़े कि अनाज भरने वाले बड़े-बड़े टोकरे भी छोटे पड़ जाते है। चन्द्रकूप का कीचड़ आग से इतना उबलता और खौलता है कि ऊपर उठकर फैल जाता है। ये जो छोटी-छोटी पहाड़ियां दिखती हैं, सबकी सब उसी दल दल की कीचड़ से बनी हैं। लाखों करोड़ों वर्षो से चंद्रकूप भगवान की यह लीला चली आ रही है।

पापों का उल्लेख

वहां जाकर यात्रीगण अपने किय हुये पापों को चिल्ला-चिल्लाकर कबूल करते हैं। अगर किसी ने पाप किया है और वहां जाकर वह अपने पाप को छिपाता है तो तत्काल उठते हुये विशाल सरोवर से आग उठना बन्द हो जाती है। जो अपने पाप कबूल

कठोर प्रतिज्ञा

यात्रियों को यात्रा प्रारंभ करने से पूर्व निम्नलिखित कठोर प्रतिज्ञा करनी पड़ती हैः-

जब तक माता हिंगलाज के दर्शन कर पुनः हम यहां नहीं लौटेंगे, तब तक हम लोग संन्यास धर्म के नियमों का पालन करेंगे। एक दूसरे की यथा शक्ति सहायता करेंगे, ईर्ष्या-द्वेष-निंदा के भाव हृदय में नहीं रखेंगे किंतु किसी भी हालत में अपनी सुराही का पानी किसी दूसरे को नहीं देंगे, यहां तक कि पति-पत्नि को, पत्नी-पति को, पुत्र-पिता को, पिता-पुत्र को, माँ-बेटे को, बेटा-मां को भी अपनी सुराही का पानी नहीं देगा, जो इस नियम का उल्लंघन करेगा उसकी मृत्यु निश्चित होगी।

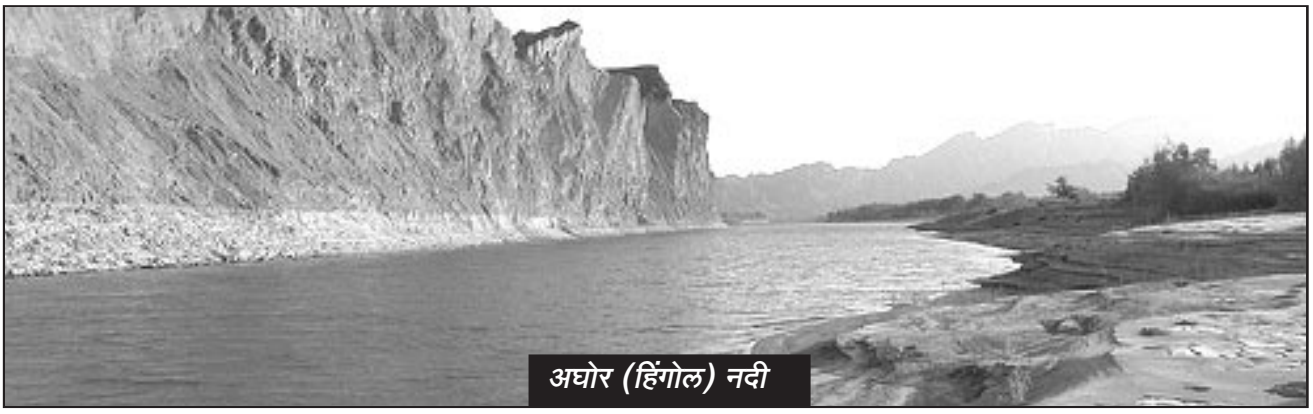

अघोर (हिंगोल) नदी

करते हैं उनका नारियल गांजा का भोग चन्द्रकूप बाबा तुरन्त स्वीकार करते हैं।

हिंगोल नदी

चन्द्रकूप से चलकर पांच दिनों तक चलते-ठहरते छठे दिन यात्रीगण सूर्यास्त के समय एक छोटे से गांव में पहुंचते हैं। यहां के मकान कंटीले झाड़-झंखाड़ों से नहीं बल्कि लकड़ी के बने हुये होते हैं। गाय, मुर्गी, ऊंट, गधे आदि जानवर भी दिखने लगते हैं।

हिंगलाज माता का विग्रह

माई की गुफा तक पहुंचने का यह आखिरी पड़ाव है। अगले दिन सूर्योदय से पूर्व चलकर चार पांच घंटे में अघोर (हिंगोल) नदी के किनारे पहुंचना पड़ता है। रात भर वहां रहकर बड़े भोर माई की ज्योति के दर्शन होते हैं।

उस दिन निराहार रहना पड़ता है। बाद में माई के दर्शन के बाद अन्न ग्रहण करने का विधान है।

रेत के समुद्र में चलते-चलते यात्री अघोर नदी के बालुकामय तट पर पहुंचते हैं , मां हिंगलाज। अघोर नदी का एक किनारा पाषाणमय ऊंचा बहुत ऊंचा कगार का है। हिंगलाज महापीठ के पीठाधिपति अघोरी बाबा को दान-दक्षिणा देकर नदी के उस पार माई के महल को पार कर झरने के किनारे रात में फिर विश्राम करना पड़ता है।

कराची में नागनाथ के अखाड़े के लोग इन्हें अघोरी बाबा कहते हैं और इधर के लोग ''कोठरी के पीर'' कहते हैं। इनमें योग बल की अद्‌भुत शक्तियां हैं, मुरदा आदमी को जिंदा कर देते हैं। लासबेला राज्य से इन्हें हर महीना वृत्ति दी जाती है और यह हिंगलाज पीठ के श्रीमहन्त हैं।

दर्शन का विधान

भीगे कपड़ों से चलो। कपड़े निचोड़कर माता हिंगलाज के महल के अन्दर पहुंचो। छड़ीदार ने बताया कि यह महल आदमी द्वारा निर्मित नहीं हैं, इसे यक्षों ने बनाया है। सचमुच यह अमानवीय शिल्प था, वह एक निराली रहस्य नगरी थी। पहाड़ पिघलाकर वह महल बनाया गया था । संकीर्ण मार्ग से दाहिनें-बायें मुड़ते हुए चल रहे थे। हवा नहीं, रोशनी नहीं, रंग-बिरंगे पत्थर लटके हुये थे। पिघले हुये पत्थरों की चारदीवारी थी, छत थी और नीचे भी रंगीन पत्थरों का फर्श था।

मुख्य मंदिर पर्वत की कटाव में सात फीट ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है, जिसकी नाप २५×२५ फीट है। इस मंदिर के पिछवाड़े में पर्वत की दीवार है और ऊपर भी पर्वत की प्राकृतिक छत है। मंदिर के अग्रभाग में, पत्थरों की बनी दीवार छत से जुड़ी हुई नहीं है , इसलिये मन्दिर में पर्याप्त वायु और प्रकाश रहता है। मंदिर में प्रवेश हेतु थोड़ी चढाई के उपरान्त बारह-तेरह सीढ़ियां हैं। आगे एक संकड़ी गली प्रारंभ होती है, जिसके दाहिने हाथ पर एक छत बनी हुई है। कमरा सम्भवतः पुजारी के रहने के काम आता है।

इस संकड़ी गली को लांघ कर दर्शनार्थी मंदिर में प्रवेश करते हैं। अन्दर मंदिर का फर्श दो भागों में बंटा हुआ है। एक निचला हिस्सा जिसके एक तरफ शिवलिंग स्थापित है, उसके पास दीपक जलते रहते हैं। दूसरा भाग लगभग चार फीट ऊंचा चबूतरा है। इसी चबूतरे पर हिंगलाज माता की मूर्ति है। मूर्ति के पास ही लकड़ी के कटघरे में एक छोटा अग्नि कुंड बना हुआ है।

हिंगलाज मूर्ति आस्थान

मंदिर के अन्दर चबूतरे पर कोने से डेढ़ फुट की ऊंचाई पर छोटी गुफा बनी है जिसके पीछे और एक तरफ से पर्वत की दीवार है। उसके दूसरी तरफ अग्नि कुंड है।

सामने वाला भाग खुला है, जहां पर यात्री बैठकर पूजा करते हैं और सिर झुकाते हैं । इसी स्थान पर दीपक जलते रहते हैं, कुछ शंख भी यहां पर रखे हुए हैं। अगरबत्तियां जलाने हेतु अलग से स्थान बना हुआ है। वहां पर अग्नि जलाने का भी स्थान है। इस गुफा के पीछे पर्वत वाली दीवार, जिसको मंदिर की पीठ भी कहा जा सकता है, वहां पर माता की मूर्ति रखी हुई है। यह लगभग तीन फीट लम्बा व एक फीट चौड़ा, त्रिशूल जैसा पत्थर है। इसको गेरूये रंग से रंगा गया है। ऐसा भी कह सकते हैं कि इसकी आकृति मूसली जैसी है, यही हिंगलाज माता की मूर्ति है, इस पत्थर के बारे में कहा जाता है कि जमीन पर आसमान से दो पवित्र (मुकद्‌दस) पत्थर गिरे थे, एक पत्थर काबेअलाह में स्थापित है और दूसरा पत्थर यह है। इस मूर्ति के नजदीक एक फीट से थोड़ा सा कम गोल पत्थर रखा हुआ है, जिसको गेरू (सिंदूर) लगाया हुआ है। इस पत्थर को 'सदा शेवा' कहते हैं।

गेरू रंग के और भी दो पत्थर यहाँ पड़े हुए हैं, जो माता के सेवक हैं। इनमें से एक का नाम 'भैरूं भीम' और दूसरे का नाम ''भैरूं लोचन'' है।

शक्तिपीठ हिंगलाज के सामने नैसर्गिक सौन्दर्य का विहंगम दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। सामने की ओर विशाल उत्तंग पर्वत श्रृंग की सुन्दरता मन मोह रही थी। बायीं ओर सुनहरा पर्वत प्राकृतिक रूप से अत्यधिक सुन्दर लग रहा था। उसको देखने से लग रहा था मानो हिंगलाज माता के महल के रूप में इसे हजारों साल के परिश्रम से अत्यधिक कुशलता के साथ यक्षों ने बनाया हो। आकर्षक पहाड़ एक विशाल एवं भव्य महल का स्वरूप प्रकट कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति ने सारी शांति, सौन्दर्य एवं सुरम्यता यहीं लुटा दी हो। □

जय झूलेलाल

लेखराज लालवानी

सिन्धुपति महाराजा
दाहिरसेन के 1300 वें
बलिदान दिवस
पर शत शत नमन

102 नवकार अपार्टमेन्ट ,
सिटी लाइट रोड, सूरत
0261-2253431
9825115081

कार्यालय नगरपालिका मालपुरा जिला टोंक (राज.)

नगर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने हेतु नगर वासियों से अपील

- नगर को स्वच्छ एवम् सुन्दर बनायें रखने में पालिका का सहयोग करें।
- सड़कों पर अतिक्रमण नहीं करें।
- जल ही जीवन है, पानी व्यर्थ न बहायें।
- रोड लाईट नागरिकों की सुविधा हेतु है, इसे हानि न पहुँचाये।
- अपने घर एवं मोहल्ले में अधिक से अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण सुधारने में अपनी भागीदारी निभायें और प्रकृति का सहयोग करें।
- पोलीथिन थैली का उपयोग बंद करें।
- जन कल्याणकारी योजनाओं में आम आदमी को राहत प्रदान कर राष्ट्र के विकास में भागीदार बनिये।
- गेप सागर झील को प्रदुषण से मुक्त कराने में सहयोग करें।

नियोजित विकास .... स्वच्छ शहर।
आपकी शान .... हमारी शान।

पार्षदगण नगरपालिका, मालपुरा

प्रसाद
बकदावनहावर

श्री राजेन्द्र जी कोठ्यारी उपाध्यक्ष नगरपालिका मालपुरा, श्री महेन्द्र सिंह जी, श्री रामदेव जी, श्रीमति सम्पत्ति जी, श्रीमति नाजिमा जी, श्री नजरूलहक जी, श्री मरगुब अहमद जी, श्री नन्दकिशोर जी, श्री मनोहरलाल जी , श्री हनुमान जी, श्रीमति मुन्नी देवी जी, श्रीमति आशा देवी जी, श्री मनिश कुमार जी, श्री चम्पालाल जी, श्री विनय कुमार जी, श्री अब्दुल माबूद जी, श्री मो. हनीफ जी, श्री राजेन्द्र जी सदस्य, श्रीमति हसीना जी, श्रीमति कंचन जी, श्री कल्याणमल जी , श्री राजकुमार जी , श्रीमति सुनिता जी, श्री पुरुषोतम जी, मालपुरा, श्री विनोद कुमार जी, श्री सुरेश जी सुराशाही मनोनीत सदस्य नगरपालिका मालपुरा, श्री सुनील जी वर्मा मनोनीत , श्री शाहबुद्दीन जी मनोनीत , श्रीमति गीता जी वालिया मनोनीत।

राजस्थान की सबसे तेज़ बढ़ती डेयरी

लोटस
डेयरी

पाश्च्युरीकृत दूध

घी

पनीर

दही

छाछ -लस्सी

फ्लेवर्ड मिल्क

लोटस की शॉप ऐजेन्सी या पार्लर लेने हेतु संपर्क करें-9928013983, 9928015621, 9829258065

मार्केटिंग ऑफिस : ओम श्री टॉवर, लालकोठी सब्जी मंडी के पास, सहकार मार्ग, जयपुर
फोन : 0141-4078700 Email : info@lotusdairy.com

अमरवीर–झूलेलाल

 गोवर्धन कृष्णानी

भारत के इतिहास में छत्रपति शिवाजी महाराज,महान गुरु गोविन्दसिंह तथा प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रतापसिंह का नाम जिस प्रकार बड़े आदर, सम्मान और श्रद्धा से लिया जाता है, उसी प्रकार सिन्धप्रदेश के वीर झूलेलाल को भी सम्मान और श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है। इन महापुरुषों ने हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा करते हुए उसे वह संजीवनी प्रदान की, कि हजारों वर्षों के पश्चात भी आज हिन्दू जाति और धर्म विश्व रंगमंच पर अपनी महान विशेषता लिए हुए जीवित हैं।

क्षात्र एवं ब्रह्म तेज का समन्वय

आज से लगभग १०६२ वर्ष पूर्व सम्वत् १००७ में सिन्धु नदी के किनारे एक ऐसे महापुरुष ने जन्म लिया था, जिसने यवन काल में जहां सिंध के हिन्दुओं को संगठित कर उनके धर्म की रक्षा की, वहीं अध्यात्म की शांत और रसदायिनी धारा प्रवाहित कर हिन्दू जन-जन को इतना प्रभावित किया कि वीर झूलेलाल की गणना आज अवतारों में की जाती है। प्रति-वर्ष नये वर्ष के प्रारम्भ में उनका जन्म दिन सारे भारत में झूलेलाल, उदयचन्द, उदेरोलाल, अमरलाल, वरुण देवता, जलदेवता की स्मृति में 'सिन्धियत दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

क्षात्र और ब्रह्म तेज के अद्भुत समन्वय वीर उदेरोलाल का जन्म सिन्धु नदी के तट पर स्थित नसरपुर ग्राम में ठाकुर रतनराय के यहां पर उस समय हुआ, जब हिन्दू जनता मुस्लिम आतताई मिरख बादशाह के नृशंस अत्याचारों, हठधर्मी एवं दुष्ट प्रवृति से त्रस्त थी। दसवीं शताब्दी में सिंध के ठट्टा में मुस्लिम बादशाह बरकत खाँ का शासन था। बरकत खाँ मिरख बादशाह के नाम से जाना जाता था। वह राजमद में मस्त होकर मुल्ला-मौलवियों के भड़काने पर हिन्दुओं को बलात मुसलमान बनाने के लिए सब कुछ कर गुजरने पर उतारू हो गया । दमन और अत्याचार की पराकाष्ठा हो जाने के कारण सिन्ध में हिन्दुओं के धर्म रक्षार्थ श्री झूलेलाल का जन्म हुआ।

वीर उदेरोलाल का चरित्र और शैशव-भगवान श्री कृष्ण के शैशव की घटनाओं के समान ही अनेक स्थानों पर वर्णित है। कहा जाता है कि उनकी माता देवकी (भगवान श्री कृष्ण की माताजी का भी यही नाम था) ने जब दुग्ध

वरुणावतार झूलेलाल की गोभक्ति

झूलेलाल जी ने गाय एवं बछड़े की अत्यंत युक्तिपूर्ण उपयोगिता बताई । उन्होंने कहा कि जन्म देने वाली माता तो केवल हमें बचपन में दूध पिलाती है जबकि गौमाता हमें आजीवन अपना दूध पिलाती है। गौमाता का दूध एवं इससे बने दही एवं घी अमृत तुल्य हैं। बछड़ा बैल बनकर रहट आदि से पानी की व्यवस्था कर कृषि कार्य का आधार बनता है। बैल ही खेतों में अन्न उत्पत्ति का माध्यम है। सनातन परम्परा में गाय की रक्षा ही ईश्वर के अवतारों का हेतु रहा है। वेद भी गाय को सर्वदेवमयी स्वीकार करते हैं। अतः वैदिक मान्यताओं के संरक्षक, सनातन धर्म के उद्धारक, वरुण के अवतार झूलेलाल की गौमाता में आस्था होना स्वाभाविक ही था। उनकी गौ भक्ति का एक प्रसंग 'अमर कथा' में इस प्रकार है -

एक अत्यंत निर्धन ब्राह्मण के पास एक कपिला नाम की गाय थी। एक बार वह मर गई। कोई दुष्ट चाण्डाल उसका मांस व चमड़ा प्राप्त करना चाहता था। वह चाण्डाल ब्राह्मण से बलपूर्वक मृत गाय लेने का प्रयास करने लगा। उसी समय वहां झूलेलाल को आते देखा तो ब्राह्मण ने उन्हें अपनी विपदा बताई। ब्राह्मण की व्यथा सुनकर झूलेलाल का हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने चाण्डाल को डांटकर वहां से दूर कर दिया। ब्राह्मण को सान्त्वना देकर झूलेलाल ने ऊँचे स्वर में आवाज लगाई- कपिला । झूलेलाल की पुकार सुनकर तत्काल कपिला जीवित होकर उठ खड़ी हुई। इस दृश्य को देखकर सभी चकित हो गए और झूलेलाल के चरणों में बार-बार नमन करने लगे।

वरुण संप्रदाय अर्थात् दरियाह पंथ

हिन्दू समाज को संगठित कर उसमें स्वाभिमान एवं गौरव का भाव बनाये रखने के लिए संत झूलेलाल ने वरुण संप्रदाय (दरियाह पंथ) की स्थापना की। दरियाह पंथ के गुरुओं को 'ठकुर' नाम से सम्बोधित किया जाता है । ये ही झूलेलाल के मंदिरों में पूजा-अर्चना करते हैं। झूलेलाल ने अपने प्रिय शिष्य पगुर राय को 'ठकुर' की उपाधि दी और कहा- तुम लोगों की सेवा करना, दुखियों की मदद करना। जल-ज्योति की पूजा एवं प्रचार प्रसार करना। उन्होंने जनता को जटिल कर्मकाण्डों के स्थान पर भगवान की उपासना की सरल विधि बताई तथा इसके कुछ नियम एवं प्रतीक भी तय किये । इन प्रतीकों का आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर समन्वय भी उन्होंने किया । ये प्रतीक एवं इनका विवरण इस प्रकार है -

ज्योति- वरुण संप्रदाय में ज्योति के रूप में निराकार परमेश्वर की साकार उपासना का विधान है। अज्ञान रूपी अधंकार से बचकर व्यक्ति को ज्ञान रूपी ज्योति से साक्षात्कार का संदेश ज्योति की उपासना में है।

कलश (जल पात्र)- जल के अधिष्ठाता वरुण देव हैं और उन्हीं के अवतार माने जाते हैं झूलेलाल। इसलिए वरुण संप्रदाय में जलपात्र अर्थात कलश या झारी का विशेष महत्व है। जल ही जीवन का आधार है, इसे आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है। जल में पवित्र करने की अद्‌भुत शक्ति है। इसीलिए दरियाहपंथ में जल की पूजा का विधान है।

वस्त्र- मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध रहे इसके लिए निर्मल एवं स्वच्छ कपड़े पहनने का विधान दरियाहपंथ में है। इससे व्यक्ति में सात्विक एवं शुद्धभाव जाग्रत होते हैं।

तलवार-यह शक्ति की उपासना की प्रतीक है। अवतारी पुरुषों के पास कोई न कोई शस्त्र अवश्य रहता है। दरियाह पंथ के संस्थापक झूलेलाल ने हिन्दुओं की रक्षा तलवार धारण करके ही की थी। उनके पराक्रम का स्मरण समाज को रहे तथा हिन्दू समाज भक्ति के साथ शक्ति को याद रखे इसीलिए इस पंथ में तलवार भी एक प्रतीक मानी गई है।

देग- यज्ञ-शेष अर्थात् 'सेसा' का वरुण संप्रदाय में विशेष महत्व है। सेसा बनाने के लिए एक विशेष प्रकार के कड़ाहे का उपयोग होता है जो 'देग' कहलाती है। इसमें पकाये गये 'सेसा' (चावल छोले आदि) सभी में बांटकर ग्रहण किया जाता है। ऊँच-नीच का भाव भूल कर समाज में एकात्मता उत्पन्न करने की दृष्टि से इसका महत्व है।

छेज- पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक विशेष प्रकार का नृत्य छेज नृत्य कहलता है। छल्ले की भांति गोलाकार वृत्त में हाथों में डंडिया बजाते हुए यह नृत्य किया जाता है, साथ में ढ़कला (वाद्ययंत्र) भी बजाया जाता है। यह नृत्य वीर उदय चन्द के मिरख बादशाह पर आक्रमण के समय की 'युक्ति' की याद दिलाता है।

दर्भ (दूब या कुश)- धर्म एवं विज्ञान की समन्वित सनातन परंपरा में दूब एवं कुश का विशेष महत्व है। इसीलिए इसे भी वरुण संप्रदाय में एक प्रतीक के रूप में स्थान दिया गया है।

पान कराने के लिये उनका मुंह खोलना चाहा तो उन्होंने अपना मुंह नहीं खोला। माता द्वारा काफी प्रयास करने के बाद जब उन्होंने मुंह खोला, तो माता देवकी को उनके मुंह में सिन्धु नदी बहती हुई दिखाई दी और एक श्वेत वस्त्रधारी व्यक्ति सिन्धु नदी की धारा का पान उदेरोलाल को कराता हुआ दिखाई दिया। तत्काल सिन्धु का जल मंगवाकर शिशु को उसका पान करवाया गया ; उसके बाद ही उसने माता के दूध का सेवन किया।

जब उदयचन्द की आयु पांच वर्ष की हुई तो उन्हें विद्यार्जन के लिए गुरु-गृह भेजा गया। अल्प प्रयास में ही उदयचन्द न्याय, सिद्धान्त, मीमांसा, वेद-पुराण एवं वेदान्त आदि की शिक्षा ग्रहण कर ज्ञान-विज्ञान के अद्वितीय विद्वान बन गये थे। उनके आध्यात्मिक गुरु श्री गोरक्षनाथ माने जाते हैं।

शस्त्र विद्या और संगठन

गुरुकुल में विद्याध्ययन के समय ही उदयचन्द को देश, काल और परिस्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान होने लग गया था। उनके प्रादुर्भाव से लगभग ढाई सौ साल पहले मोहम्मद बिन कासिम का सिन्ध पर आक्रमण हुआ था। उस समय पहली बार अरब हमलावरों को भारत के सीमा-क्षेत्र में पैर जमाने का अवसर मिला। यद्यपि कासिम के हमले के कुछ वर्षों बाद ही आक्रान्ताओं का सफाया कर दिया गया , फिर भी सिन्ध का कुछ भू-भाग जिहादियों के कब्जे में चला गया । कलियुग संवत की इकतालीसवीं तथा ईसा की दसवीं सदी के मध्य में कमो-बेश यही स्थिति थी। सिन्ध का कुछ क्षेत्र खलीफा के नुमाइन्दों के अधिकार में था, जिसमें ठट्‌ठा भी शामिल था जिसका शासक उस समय बरकत खान अर्थात् मिरख बादशाह था। मुस्लिम शासन वाले क्षेत्र में हिन्दुओं का सम्मान-पूर्वक जीना दूभर हो गया था। मिरख बादशाह पूरी हिन्दू जनता को मुसलमान बनाना चाहता था और उसके लिये जबर्दस्त अत्याचार हिन्दुओं पर किये जा रहे थे।

हिन्दू धर्म और संस्कृति पर लगातार हो रहे आघातों ने उदयचन्द को परिस्थितियों का गहन चिन्तन करने को प्रेरित किया। विद्यार्जन करते-करते किशोर उदयचन्द को समझ में आने लगा कि समाज की दुरावस्था का मुख्य कारण परतंत्रता है और

इस परतंत्रता का कारण संगठन एवं एकात्मता का अभाव है। उदय चन्द अपने मित्रों एवं सहपाठियों से भी समाज की दुःखद स्थिति के बारे में चर्चा करते थे और इस स्थिति को बदल देने का संकल्प भी दृढ़ से दृढ़तर करते जाते थे। धीरे-धीरे उनके साथियों का एक अच्छा समूह बन गया। अब वे अन्य नौजवानों को भी प्रेरित कर उनमें संगठन व राष्ट्रीयता का भाव भरने लगे। गुरुकुल के कुछ शिक्षक भी इन संकल्पित विद्यार्थियों के साथ हो गये। ठट्टा रियासत के जंगलों में गुप-चुप उनको शस्त्र-विद्या भी सिखाई जाने लगी। फलस्रूप कुछ ही समय में एक लक्ष्य से प्रेरित ध्येय-निष्ठ युवकों का एक शक्तिशाली समूह उदयचन्द के नेतृत्व में गठित हो गया।

मिरख को सन्धि करनी पड़ी

मिरख बादशाह के अत्याचारों से त्रस्त ठट्टा की हिन्दू जनता तो किसी तारणहार की प्रतीक्षा कर ही रही थी। उधर बरकत खान को भी उदय चन्द की गतिविधियों की भनक लग गई थी। बताया जाता है कि मिरख ने अपने वजीर को टोह लेने नसरपुर भेजा था। उदयचन्द ने बड़ी चतुराई से वजीर को संतुष्ट कर वापस भेज दिया। मिरख के दिल में फिर भी एक खुटका सा बना रहा। अब उसने वीरवर उदयचन्द को चुनौती देने का विचार किया और मुनादी करवा दी कि एक निश्चित अवधि में सभी हिन्दू मुसलमान बन जायें अन्यथा सभी का कत्ले-आम कर दिया जायेगा। इस घोषणा से घबराये ठट्टा नगर के प्रमुख लोगों ने विचार विमर्श के बाद नसरपुर के ठाकुर रतनराय के युवा पुत्र उदयचन्द के पास संदेश भेजकर रक्षा की गुहार की। उदयचन्द अपने साथियों की फौज लेकर मच्छ के आकार की युद्ध नौकाओं में सवार होकर सिन्धु नदी के जल मार्ग से नसरपुर से ठट्टा पहुँचे। देखने वालों को लगा कि उडेरो लाल मच्छ पर बैठकर नदी में यात्रा कर रहे हैं।

जब वे नौकाओं से उतरे तो उन्होंने सैनिकों को आदेश दिया कि वे घातक हथियार तलवार आदि तो छिपा लें और हाथों में डांडिया लेकर नाचते हुए चलें और समय व स्थान आने पर अपने-अपने हथियार निकाल कर अचानक मिरख के सिपाहियों पर धावा बोल दें,सैनिकों ने वैसा ही किया।

यही कारण है कि भक्त-गण आज भी चैती चांद के दिन डांडियां अपने हाथों में लेकर नाचते, गाते-बजाते हुए झूलेलाल के बहराणे के साथ चलते हैं।

वीर उदेरोलाल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने हिन्दू समाज के दुश्मन मिरख बादशाह को परास्त करने के बाद भी उसे अपनी शरण में पाकर उसे जीवनदान देकर क्षमा कर दिया। मिरख उनका शिष्य बन गया और सारी बुराइयाँ उसने त्याग दी। उसके पश्चात् उन्होंने नगर-नगर जाकर सद्भाव, एकता, अखण्डता चालीसा नियमों एवं दरियाह पंथ का प्रचार किया।

कई रूपों में पूजा

मिरख की चुनौती का सामना झूलेलाल ने अपनी सेना का सफल संचालन करते हुए किया। उन्होंने बादशाह को उसके ही महल में जाकर परास्त किया। उदेरोलाल की जलज्योति का उल्लेख तथा उन्हे 'वरुण देवता' का नाम दिया जाना इसी बात का प्रमाण है कि झूलेलाल ने मिरख बादशाह का पतन अपनी नौ शक्ति एवं थल शक्ति के सहारे किया था। इसीलिए उन्हें हिन्दू समाज द्वारा मछली पर बैठे हुए संत के रूप में तथा साथ ही घोड़े पर सवार योद्धा के रूप में पूजा जाता है।

अपने परम मानवीय और उदार दृष्टिकोण के कारण उन्हें जो कीर्ति प्राप्त हुई, उसी का परिणाम था कि उसके बाद सारे सिन्ध में वीर उदेरोलाल को देवता का महत्व प्राप्त हो गया। जगह-जगह उनके मन्दिर स्थापित करके उन्हें पूजा जाने लगा। देशभर में स्थित लगभग झूले लाल के दस हजार मंदिरों में से अधिकांश में अखण्ड ज्योति प्रज्ज्वलित है। कुछ मंदिर तो ऐसे भी हैं जहां विभाजन के दौरान सिंध से लाई हुई ज्योति निरन्तर प्रज्ज्वलित है।

उनके अनुयायी सिंधी मुसलमान भी हैं जो झूलेलाल को पूजते हैं। नसरपुर से दस मील की दूरी पर झंजन गांव में झूलेलाल ने भेमण मुसलमान को वरदान दिया था । इसी कारण मुसलमान उन्हें जिंदापीर के रूप में पूजते हैं।

अधर्म पर धर्म की विजय

मिरख बादशाह पर उदेरोलाल की विजय नृशंसता पर मानवता की, दानवी शक्तियों पर दैवी शक्ति की, अभारतीयता पर भारतीय संस्कृति की तथा अधर्म पर धर्म की महान विजय थी। यही कारण है कि प्रतिवर्ष सम्पूर्ण सिन्धी समाज चैत्रमास की नवरात्रि में देवी शक्ति के आह्वान के समय झूलेलाल के जन्म-दिवस को धूमधाम से मनाता है।

स्थान-स्थान पर पूरे भारत में भगवान झूलेलाल की झांकिया और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। विजय की खुशी में प्रसाद बांटा जाता है। अमरलाल का 'बहराणा' जिसमें अखण्ड ज्योति होती है निकालते हैं, और छेज और ढोकलों के साथ 'आयोलाल-झूलेलाल' के नारे लगाए जाते हैं।

चेटीचण्ड पर्व से समाज में उत्साह, उमंग और हिम्मत जगती है तथा अत्याचारों से निर्भीकतापूर्वक मुकाबले की शक्ति मिलती है। झूले लाल के अनुयायी माफ करने की भावना भी रखते हैं ताकि व्यक्ति स्वयं अपना सुधार कर सके। □

वीर शिरोमणी, राष्ट्रप्रहरी,
धर्मवीर, दानवीर, युद्धवीर

सिन्धुपति महाराजा दाहरसेन

1300 वां बलिदान दिवस – 16 जून 2012 पर

!! शत् शत् नमन !!

प्रो. वासुदेव देवनानी

Vedant

College of Engineering & Technology

Approved by AICTE, New Delhi and Affiliated to RTU,Kota

• Civil • Computer Science • Electrical • Electronics & Communication
• Mechanical • Electrical & Electronic • Information Technology

Salient Features:

❖ Special emphasis on Hindi medium students. ❖ Distinctly Qualified and Dedicated faculty. ❖ Regular Feed-back of student's performance to their Parents through ERP software. ❖ Regular meeting of Mentor (By a Senior Faculty) with a group of 30 students to solve their problems. ❖ Hostel facilities / Canteen within campus. ❖ Transportation facilities, almost from all major locations of Kota & Bundi. ❖ Un-interrupted Power supply by Generator. ❖ C.C. TV camera. ❖ State of Art Laboratories. ❖ Enriched Library with DELNET Facility. ❖ Well Caring Training & Placement Cell. ❖ Smart classes through Sharp ege Software (Particularly designed for Engineering Students) ❖ Virtual Classes by IIT faculty. ❖ Seminar/Workshops for better performance of students.

For more detail, please contact at -

City Office :-	Campus :-
Sethiea Complex, Near V-Mart, Dadabari Main Road, Kota	Tulsi, Post- Jakhmund, Distt. Bundi -323021(Raj.)

0744-2501034, 9414037511, 9414055557

Visit us at : www.vcetbundi.org E-mail : vcetbundi08@yahoo.com

सिन्ध के प्रमुख संत एवं समाज सुधारक

मातादीन सिंह

यह तो सत्य है कि सिंध अर्थात् सिंधु नदी का समस्त क्षेत्र देवभूमि रहा है। उसका वर्तमान में भी उतना ही महत्व है जितना पूर्वकाल में था। इसमें कोई संशय नहीं कि सिन्ध की पावन भूमि पर महान कवि, सन्त, विद्वान, विचारक, साहित्यकार तथा स्वयं देवताओं ने जन्म लिया। सिन्ध भूमि पर बहुत से ऐसे महान संत पैदा हुए जिन्होंने जनमानस में धर्म का प्रचार प्रसार किया। सिन्ध के कुछ महान संतों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः-

संत रोहल :-१७३० में उमरकोट नगर में जन्मे संत रोहल ने हिन्दी, सिन्धी तथा पंजाबी भाषा में काव्यों की रचना की। संत रोहल को संसार से विरक्ति हो गई तत्पश्चात् वे प्रभु भक्ति में लीन हो गये।

सामी साहब :-सन् १७४३ में जन्मे सामी साहब एक महान वेदान्ती संत व कवि थे। इन्होंने भी काव्यों की रचना की। इनका जन्म स्थान शिकारपुर था। सामी जी के श्लोक वेदान्त की व्याख्या से परिपूर्ण हैं।

संत दलपतराय :- सन् १७६९ में जन्मे दलपतराय ने सिंधी व हिन्दी भाषाओं में अपने काव्यों की रचना की। आपने भारतीय रागरागनियों के आधार पर पद एवं दोहे लिखे।

दीवान सूरत सिंह :- सन् १८३२ में हैदराबाद सिंध में जन्मे दीवान सूरतसिंह भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अपने काव्य में भगवान कृष्ण के बालरूप की लीलाओं का अच्छा वर्णन किया है ।

संत थाहिरीया सिंध :- सन् १८२७ में कंघरनि गांव में जन्मे संत थाहिरीया सिंध भगवान की भक्ति करते-करते सिद्ध पुरुष हो गये थे। आप श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी की वाणी का अमृत रस लोगों को पिलाया करते थे।

संत साईं हरिचूराम :- संत हरिचूराम संतोषी व त्यागी संत थे। वे सदैव हरिनाम शब्द ही दोहराते रहते थे।

राजऋषि दयाराम गिदूमल :- सन् १८४७ में जन्मे दयाराम गिदूमल ने 'श्रीमद् भगवत् गीता' व 'श्री जपुजी साहिब' की सिन्धी भाषा में विद्वतापूर्ण टीका लिखी। आप समाज सुधारक, शिक्षा शास्त्री तथा साहित्यकार थे।

स्वामी धर्मदासः- स्वामी धर्मदास का जन्म सन् १८५४ में हुआ। इन्होंने सिन्धी भाषा में भक्ति काव्य लिखा।

साधू हीरा नंदः- सन् १८६३ में जन्मे साधू हीरा नंद साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षा शास्त्री तथा समाज सुधारक थे। इस महापुरूष को सिन्ध का **विवेकानंद** भी कहा जाता है।

स्वामी वनखण्डीजी महाराज :-पटियाला शहर में एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए वनखण्डी जी महाराज उदासीन सम्प्रदाय के महान योगी, संत तथा आध्यात्मिक पुरूष थे।

संत बाबा नेभराम :- सन् १८६० में रोहड़ी नगर में पैदा हुए संत जी एक आध्यात्मिक पुरुष थे। आजकल इनका स्थान दिल्ली में मजनूं का टीला नामक स्थान पर है।

स्वामी केशवदास महाराज :-वैरागी संत केशवदास का जन्म सन् १८६३ में हुआ था। ये गौ-भक्त तथा परोपकारी संत थे। वर्तमान में इनकी धर्मपीठ दिल्ली में है ।

महाराज बसंतरामः- विक्रमी संवत् १९२६ में जन्मे बसंतराम ने ''कृष्णायन' जैसे महाकाव्य की रचना की। इनकी अन्य कृतियाँ हैं 'प्रेम रसायन', 'बसन्त दोहावली', 'मोक्षमार्ग

संत स्वामी टेऊंराम जी महाराज

सन् १८८७ ईस्वीं में क्षत्रिय कुल में जन्मे स्वामी टेऊंराम जी दार्शनिक, संगीतज्ञ, कवि तथा आध्यात्मिक पुरुष थे। उन्होंने मांसाहार के विरुद्ध प्रचार किया। बुद्ध हिन्दू उस समय मुसलमान बन रहे थे स्वामी जी ने उन्हें जाग्रत कर पुनः हिन्दू बनाया तथा मुसलमान बनने से रोका। स्वामी जी का मूल मंत्र था ''ॐ श्री सतनाम साक्षी''। इन्होंने ही प्रेम प्रकाश संप्रदाय शुरू किया था। वर्तमान में अमरापुर स्थान (जयपुर में) स्वामी सद्गुरू टेऊंरामजी का भव्य मंदिर तथा उपासना-स्थल है। जयपुर के अलावा पुष्कर, कोटा, अजमेर, इंदौर, थीरथल, दिल्ली, मुम्बई, बड़ौदा, उल्हासनगर, पूना, अहमदाबाद, आगरा, ग्वालियर तथा हरिद्वार आदि स्थलों पर भी स्वामी टेऊंरामजी महाराज के प्रेमप्रकाश नाम के आश्रम हैं। स्वामी सद्गुरू टेऊंरामजी के भक्तों ने मनीला, सिंगापुर, जकार्ता तथा हांगकांग जैसे अन्य देशों में भी स्वामीजी के मंदिर बना रखें हैं तथा वहाँ अखण्ड ज्योति जला रखी है। सद्गुरू टेऊंरामजी ने भारतीय राग-रागनियों में काव्य रचना की तथा उनका सबसे बहुमूल्य ग्रंथ प्रेमप्रकाश ग्रंथ है। इस ग्रंथ के पठन पाठन से तथा श्रवण मात्र से अपार आनन्द की प्राप्ति होती है।

भजनामृत', 'श्री राधेश्याम कीर्तन', 'श्रीकृष्ण सहस्र नाम' तथा 'श्री भक्तिपथ'।

संत प्रभाराम:–आप गृहस्थ संत थे। इनका मन सदैव सत्संग तथा परहित में ही लगता था। इन्होंने अधिकतर समय प्रभुनाम स्मरण में ही बिताया।

स्वामी रामानंद:–सन् १८७६ में जन्मे स्वामी रामानंद भगवत भजन में तल्लीन रहते थे। आप प्रकाण्ड विद्वान थे तथा उत्तम प्रवचन देते थे।

संत स्वामी हरनामदास उदासीन:–सन् १८८१ में जन्मे स्वामी हरनामदास 'श्री साधुबेला' तीर्थ स्थान के महान महंत तथा कर्मयोगी संत थे। आपने सिन्ध क्षेत्र में सनातन धर्म तथा **हिन्दी व संस्कृत भाषा का बहुत प्रचार-प्रसार किया।** देश विभाजन के पश्चात् वे भारत में आ गये। वाराणसी में हिन्दी संस्कृत पाठशाला की स्थापना उन्होंने ही की थी।

स्वामी लीलाशाह महाराज:–आजीवन ब्रह्मचारी रहे कर्मयोगी संत स्वामी लीलाशाह का जन्म सन् १८८१ में हुआ था। स्वामी जी तेजस्वी, तत्वज्ञानी, समाज सुधारक तथा वेदान्त ज्ञाता थे। आपने 'आत्मदर्शन' नामक आध्यात्मिक पुस्तिका का सम्पादन कार्य भी किया।

संत बाबा गोविन्ददास:–गृहस्थ संत गोविन्ददास जी ने देश विभाजन के पश्चात् अजमेर में हालानी दरबार की स्थापना थी। 'हालानी दरबार' में श्री गुरुग्रंथ साहब का पाठ होता है। उनका जन्म १८८० में हुआ था।

स्वामी बोधराज:–सन् १८९७ में जन्मे महान संत-कवि स्वामी बोधराज जी ने स्वामी परमानंद चिदाकाशी जी से दीक्षा ली। इन्होंने 'सच्चो साथी' नामक पुस्तक भी लिखी।

संत स्वामी सर्वानंद:–इनका जन्म १८९८ में हुआ। स्वामी सर्वानंद जी ने टेऊंराम जी महाराज से ही गुरुदीक्षा ली। विभाजन के पश्चात् स्वामी सर्वानंद जी ने जयपुर में 'स्वामी टेऊंराम प्रेमप्रकाश आश्रम' (अमरापुर दरबार) की स्थापना की। स्वामीजी ने देश विदेश के कई नगरों में भारतीय संस्कृति पर प्रवचन दिये तथा हिन्दी व सिन्धी में भक्ति-काव्य लिखा।

स्वामी बसंतराम जी :- सन् १९२३ में जन्मे स्वामी बसंतराम सदैव हरेकृष्ण की धुन में मग्न रहते थे। आप भी स्वामी टेऊंरामजी के शिष्य थे।

स्वामी चरणदास:–सन् १८९५ में जन्मे स्वामी चरणदास ने देश विभाजन के बाद मुम्बई के उल्हास नगर में मंदिर की स्थापना की थी। आप वेदान्ती तथा सनातन धर्म का प्रचार करने वाले संत थे।

संत हरिदास राम:–सन् १९०४ में जन्मे संत हरिदास राम, संत कँवरराम जी से बहुत प्रभावित थे तथा उन्होंने भी अपाहिजों की सेवा को श्रेष्ठ माना। इन्होंने जलगांव (महाराष्ट्र) में वृद्ध आश्रम की स्थापना की।

स्वामी अमरदास जी:–इनका जन्म १८९४ में हुआ। देश विभाजन के पश्चात् इन्होंने उल्हासनगर में मंदिर बनवाया जो कि वर्तमान में 'अमरधाम' के नाम से प्रसिद्ध है।

स्वामी प्रेमदास:–सन् १९१० में जन्मे स्वामी प्रेमदास स्वामी अमर दास के छोटे भाई थे। उन्हें ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था। स्वामी अमरदास जी के पश्चात् उनकी गद्दी आपने सम्भाली थी।

संत जीवनराम:–इनका जन्म १९२० में हुआ। संत जीवनरामजी ने संत हरिचूराम तथा संत धर्मूराम साहब की बहुत सेवा की। विभाजन पश्चात् संत हरिचूराम धाम की स्थापना उल्हास नगर में की गई। ये सांई हरिचूराम की गद्दी पर बैठे।

स्वामी चंदन राम:- इनका जन्म सन् १९१३ में हुआ। ये

साधु टी.एल. वासवानी

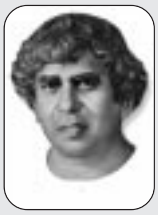

सदैव भक्ति में समर्पित रहने वाले साधु टी. एल. वासवानी ज्ञान की अपेक्षा प्रेम को अधिक महत्व देते थे। आपका जन्म सन् १८७९ में हैदराबाद (सिंध) में हुआ था। उन्हें दादाजी कहा जाता था। दादाजी महान कर्मयोगी, औजस्वी लेखक तथा उच्चकोटि के कवि थे। सिन्धी में दादाजी का 'नूरी ग्रंथ' एक अद्‌भुत काव्य है। २९ वर्ष की आयु में बर्लिन में विश्व धर्म सम्मेलन में उन्होंने व्याख्यान दिया और विदेशियों को भी वेदों और उपनिषदों का संदेश दिया। वे ६ माह बर्लिन में रहे। विभाजन के बाद भारत आये तथा यहां कैंपों में रहे सिंधी भाइयों की देखभाल की। उनकी आदर्श मीरा थी तथा वे गिरधर गोपाल के अनन्य उपासक थे। साधु वासवानी ने दहेज रूपी कुप्रथा को दूर कर सादगी का जीवन जीने के लिए लोगों को प्रेरित किया। स्त्री शिक्षा के प्रचार के लिए मीरा स्कूल की स्थापना की तथा देश विभाजन के बाद उन्होंने पूना में लड़कियों के लिए मीरा कॉलेज की स्थापना की। दादाजी की प्रेरणा से मीरा बाल मंदिर, राधाकृष्ण दया दवाखाना, मीरा कॉलेज, मीरा स्कूल, मथुरीबाई मेहबूबानी छात्रावास, मंघाराम खेमनानी दवाखाना, शान्ति क्लिनिक, होम्योपैथिक दवाखाना, नारीशाला, जीवदया आदि सेवा कार्यों के साथ ही उच्च कोटि के साहित्य का प्रकाशन चल रहा है। वे इतने बड़े सामाजिक तथा साहित्यिक पुरुष थे कि इनकी राष्ट्रीय सेवाओं के कारण भारत सरकार ने इनकी स्मृति में २५ नवम्बर १९६९ को डाक टिकट जारी किया।

संत कँवरराम

संत कँवर राम का जन्म १३ अप्रेल १८८५ को सिन्ध के जाखरन गांव में भाई ताराचन्द के घर हुआ था। गरीबी के कारण बाल्यावस्था में ही उन्हें उबले चने बेचकर घर की आजीविका में हाथ बटाना पड़ा। एक दिन प्रसिद्ध संत संतराम साहब भजन करने जाखरन आये थे। उन्होंने ८ वर्षीय बालक कँवरराम को सुरीली आवाज में चने बेचते देखा तो उन्हें पास बुलाया और उसी समय उन्हें अपना शिष्य बना लिया।

इस प्रकार योग्य गुरु को योग्य शिष्य मिला। बड़े होकर कँवर संत कँवरराम कहलाये। गायन एवं नृत्य कला में पारंगत होकर कँवरराम ने गुरु की आज्ञा से विवाह किया। गृहस्थ होते हुए भी वे निर्लिप्त रहे। भगत-भजन में जो कुछ मिलता उसे वे गरीबों, अनाथों, विधवाओं एवं गरीब कन्याओं के विवाह आदि पर खर्च कर देते थे। अपाहिजों के प्रति उनका विशेष स्नेह रहता था। अपनी गायकी एवं साधना के बल पर वे वर्षा करवाने एवं रुकवाने तक के आश्चर्य कर दिखाते थे। उन दिनों सिन्ध में वर्षों से चले आ रहे मतांतरण का बोलबाला था। संत कँवरराम ने मुसलमानों के मतान्तरण अभियान को रोका तथा मुस्लिम बन गये बन्धुओं की पुनः हिन्दू समाज में वापसी की। वे भली भांति जानते थे कि इस कार्य के कारण मुसलमान उन्हें मारने तक का प्रयास कर रहे हैं, फिर भी संत जी निर्भीकता से अपना कार्य करते रहे तथा धर्म कार्य हेतु उन्होंने अपनी शहादत भी स्वीकार की। १९३९ में रेलगाड़ी में सवार होते समय मुसलमानों ने गोलियां चलाकर उनकी हत्या कर दी। भारत सरकार ने उनके सेवा कार्यों के कारण २६अप्रेल २०१० को संत कँवरराम पर डाक टिकट जारी किया।

बचपन से ही संसार से विरक्त होकर स्वामी टेऊँरामजी की शरण में आ गये। स्वामी चंदनराम जी ने नासिक में गोदावरी किनारे प्रेमप्रकाश भवन बनवाया।

स्वामी माधवदासः–माधवदास प्रेम प्रकाश मण्डल के महत्वपूर्ण संत थे। स्वामी टेऊँरामजी से इन्होंने गुरुदीक्षा ली। विभाजन पश्चात् उन्होंने अजमेर में प्रेमप्रकाश आश्रम की स्थापना की।

इन संतों के अलावा कुछ अन्य संत भी हुए हैं जिन्होंने मानव कल्याण में अपना जीवन व्यतीत किया। इनमें संत अचल प्रसाद जी, आत्माराम, संत रामकृष्ण, संत गोपालदास तालिब, ग्वालानंद, संत आशाराम (बापू), संत शिवभजन महाराज, संत गोबिन्दराम तथा संत स्वामी गणपतिप्रसाद जी शामिल हैं। □

जय झूलेलाल

प्रो. हीरालाल आहूजा, मो. 98281-13696

सत्गुरू फोटोस्टेट

फोटो स्टेट, फैक्स, लेमिनेशन, बाइन्डिंग, रंगीन फोटो स्टेट, मोबाईल रिचार्ज, कूपन टाटा स्काई, Dish T.V., Airtel, Big T.V.

जी-1 रॉयल प्लाजा, आम्रपाली सर्किल, वैशाली नगर, जयपुर

फोनः 2352933,5100728 फैक्सः 0141-2357552

सतगुरू मेडिकोज

हर प्रकार की अंग्रेजी दवाईयों के मिलने का विश्वसनीय स्थान

जी-3, रॉयल प्लाजा, आम्रपाली सर्किल, वैशाली नगर, जयपुर

ॐ

महाराजा दाहिरसेन बलिदान दिवस पर

शत शत नमन

हितेश कुमार द्विवेदी 09929279875 दूर: 02960-222279,

देवेन्द्र द्विवेदी 94600 88779 02960-2222179

शिव एग्रो इण्डस्ट्रीज

an ISO 9001:2000 certified co.

सोनामुखी क्रय-विक्रय एवं उत्पादनकर्ता

14th औद्योगिक क्षेत्र, प्रथम चरण, सोजत सिटी जिला पाली (राज)

पिन 306104 Email: info@shivagroindustries.com

Web. shivagroindustries.com

अशोका इण्डस्ट्रीज

फाइबर कूलर के निर्माता

15th औद्योगिक क्षेत्र, प्रथम चरण, सोजत सिटी जिला पाली (राज) पिन 306104

वीर शिरोमणी, राष्ट्रप्रहरी,
धर्मवीर, दानवीर, युद्धवीर

सिन्धुपति महाराजा दाहरसेन

1300 वां बलिदान दिवस – 16 जून 2012 पर

!! शत् शत् नमन !!

सिन्धुपति महाराजा दाहरसेन

के गौरवपूर्ण इतिहास को जन जन तक पहुचार्ने
एवं अजमेर में उनके स्मारक के विकास हेतु
माननीय प्रो. वासुदेव जी देवनानी
विधायक एवं पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री द्वारा
भाजपा शासन (2003–08) के दौरान किये गये प्रयास

के लिए हार्दिक आभार

–स्मारक पर अष्ठधातु की घोड़े पर सवार
प्रतिमा स्थापित हुई।
–राजस्थान शिक्षा बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों में
महाराजा दाहरसेन के अध्याय को शामिल
किया गया।

प्रो. वासुदेव देवनानी

Satyam
Institute of Technology
(Polytechnic College)
(Approved by AICTE New Delhi & Affiliated to BTER, Jodhpur)
Branches Civil, Computer Science, Electrical, ECE, Mechanical
Sanwa, NH-8, Beawar, Distt. Ajmer, Cont. - 9413344500

स्वतंत्रता संग्राम में सिंध का योगदान

हीरो ठकुर

प्रारम्भ का १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम हो या कांग्रेस द्वारा चलाया गया होम रूल वाला आंदोलन, महात्मा गाँधी द्वारा चलाया गया अहिंसक नागरिक असहयोग आंदोलन हो या नमक सत्याग्रह और डांडी मार्च जैसी हलचल हो, लोकमान्य तिलक का गर्म रास्तें वाला आंदोलन हो या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार बंद हमले की तैयारियाँ, आर्य समाज के आंदोलन हो या मुसलमानों की खिलाफत की हलचल, मतलब कि देश को स्वतंत्र कराने की प्रत्येक गतिविधि में सिन्ध ने पूर्ण जोश-खरोश के साथ भाग लिया।

देशप्रेम की भावना सिन्धियों को बचपन में घुट्टी के साथ मिलती है। महाभारत के समय की शूरवीर माता **रानी विदुला** जिसने अपने पुत्र संजय को गुलामी का प्रतिरोध करने के लिए पांडवों, कौरवों से मुकाबला करने की प्रेरणा दी वे सिन्ध प्रदेश की ही थीं।

इस विषय में जब भारत में अंग्रेजों के दौर पर दृष्टि डालते हैं तो देखने में आता है कि १८४३ में अंग्रेजों द्वारा सिन्ध में अधिकार की नींव डालते समय ही सिन्धियों ने उनका विरोध किया था। सिन्ध के वीरों ने भियानी के मैदान में संघर्ष किया और उनके प्रवेश का विरोध किया। जिस जाबांज युवा ने अटल होकर अंग्रेजों का मुकाबला किया वह था **होशू सैयद**, जिसने कुल्हाड़ी उठाकर देश के शत्रुओं के सिर काटे। लड़ते हुए वह स्वयं तो शहीद हो गया परन्तु सिन्ध और 'कुल्हाड़ी' को ऐसा सम्मान दे गया कि सिन्धियों को आज भी उस पर गर्व है। कुल्हाड़ी आज भी सिन्धियों की शूरता और स्वतंत्रता की निशानी मानी जाती है।

अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगाकर देश को आजाद करने के लिए हिन्दुस्तान में अलग-अलग समय पर जो भी लड़ाइयाँ लड़ी गई और आंदोलन चलाए गये, उनमें सिन्ध ने भरपूर भाग लिया।

प्रथम स्वातंत्र्य समर

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता सग्राम की सिन्ध में तुरन्त प्रतिक्रिया हुई। शिकारपुर, सक्खर और हैदराबाद में सिन्धी सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र उठा लिये। अंग्रेजों ने जब सिन्ध में प्रेस पर सेंसरशिप लागू की तब 'सिन्ध कासिद' नाम के अखबार ने अपने जुलाई १८५७ वाले अंक में अंग्रेजों के इस आदेश का विरोध करते हुए एक लेख लिखा। उसमें अंग्रेज सरकार को चेतावनी दी गई थी कि यह कदम आगे जाकर खुद अंग्रेजों के लिये हानिकारक सिद्ध होगा।

शहादत की होड़

सक्खर के १९ वर्षीय जवान हेमू ने अंग्रेजों की बारुद से भरी गाड़ी (ट्रेन) को उड़ाने की योजना बनाई। परन्तु बदकिस्मती से उसमें सफल नहीं हुआ और उसे फांसी की सजा सुनाई गई, जिसे उसने गर्व के साथ स्वीकार किया। आजादी के परवाने हेमू ने मौत स्वीकारी परन्तु अंग्रेजों से माफी नहीं मांगी। १९४३ में फांसी देते समय उस १९ वर्षीय नौजवान से उसकी आखिर इच्छा पूछी गयी तो उसने जेल अधिकारी से कहा कि मेरी आखिरी इच्छा यह है कि तुम मेरे साथ मिलकर 'इन्कलाब जिंदाबाद' और 'भारत माता की जय' का नारा लगाओ।

मेघराज लुला भी १७ वर्ष का जवान था जो १९३० में कराची में आजादी के आंदोलन में भाग लेते हुए अंग्रेजों की गोली का शिकार हुआ। इसी समय ही १७ वर्षीय दत्तात्रेय ने अपनी जान की आहूति दी। रोहिड़ी का वीर हांसाराम पमनानी १९२१ में अपनी अच्छी नौकरी त्याग कर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ा। १९४० में वह शहीद हो गया। मुस्लिम भाइयों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी कुर्बानी दी। अल्लाह बक्श सूमरो एक राष्ट्रवादी मुसलमान था और अपनी योग्यता से सिन्ध का मुख्यमंत्री बना था। इस भद्र पुरुष ने भी हर कदम पर अंग्रेजों की खिलाफत की,जिसकी कीमत मार्च १९४३ में देनी पड़ी। शिकारपुर में उन्हें गोली मारकर शहीद कर दिया गया। हरचन्दराय विशनदास वैसे तो एक बड़े सेठ थे परन्तु उन्होंने अपने आप को राष्ट्रीय आंदोलन में समर्पित कर दिया था। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध कांग्रेस के हर आंदोलन में भाग लिया। आखिर में अपना जीवन भी राष्ट्र कार्य में दे दिया।

भारत में जब 'साइमन कमीशन' आया तो कांग्रेस ने उसका विराध किया। राष्ट्रीय असेम्बली में उसकी सिफारिशों और कमीशन का बायकॉट करने के लिये मतदान होना था, उसमें सिन्ध का वोट निर्णायक था। हरचन्दराय उस समय बहुत अस्वस्थ चल रहे थे, परन्तु उस स्थिति में भी वह आवश्यक मत देने के लिए पहुँचे। मत देने के बाद दिल्ली में ही उनका देहान्त हो गया।

स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नाना साहब एवं तात्या टोपे की सिन्ध-यात्रा के बाद माहौल और गर्म हो गया। शिकारपुर में सरदार अलिफ खान के नेतृत्व में भारतीय सैनिकों ने शस्त्र उठा लिये। बाद में अलिफ खान पकड़े गये और उन्हें तोप से उड़ा दिया गया। थरपारकर के राजा ने भी स्वतंत्रता का ध्वज थाम लिया, परिणामस्वरूप उन्हें और उनके मंत्री को आजीवन काले पानी भेज दिया गया।

मशहूर काकोरी केस से प्रभावित होकर सिन्ध में परची विद्यार्थी और जेठानन्द गिहानी ने क्रातिकारी कार्रवाइयों के लिए धन इकट्ठा करने हेतु अंग्रेजों की बैंकों में डकैतियां डालने के प्रयत्न किये। वे पकड़े गए और जेल की सजा हुई। इस क्रम में गुलराजा ब्रादर्स वाला बम बनाने का मामला और पिंजरापोल बमों वाला मामला खास हैं।

इसके बाद १४ सितम्बर १८७६ के दिन कराची में तैनात मुम्बई नेटिव इन्फ्रेंटी की २४ वीं रेजीमेंट के जवानों ने अंग्रेजों पर बन्दूकें तान दीं। यह कोशिश भी सफल नहीं हुई। ५ जवान तोप से उड़ा दिये गये, १२ को फाँसी हुई और बाकी अन्दमान भेज दिये गये।

कामागातामारु मामला

कांग्रेस का पहला सम्मेलन १८८५ में मुम्बई में हुआ। उसमें सिन्घ से दो कार्यकर्ताओं (प्रतिनिधि) जेठमल दयाराम और उधाराम मूलचन्द ने भाग लिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दो अधिवेशन १९१३ और १९३१ में सिन्ध में आयोजित किये गये। रेशमी रुमाल वाले मामले में सिन्ध के मौलवी उबेदुल्ला और अब्दुल रहीम सिन्धी (आचार्य कृपलानी के भाई जो मुसलमान बन गये थे) का सम्बन्ध तथा कामागातामारु जहाज मामले में चौहरमल मनसुखाणी, नारायणदास तथा स्वामी गोविन्दानन्द का भाग लेना बताता है कि आजादी की लड़ाई में सिन्ध ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सिंध के राजनैतिक नेता जिन्होंने शहर-शहर और ग्राम-ग्राम जाकर अंग्रेजों के खिलाफ आग को हवा दी और आजादी की रोशनी फैलाई, उनमें कराची के दुर्गादास आडवानी, हैदराबाद के हरीराम माड़ीवाला, जयरामदास दौलतराम, चोइथराम गिदवाणी, आचार्य कृपलानी, नारायण दास मलकानी, आनन्द हिंगोरानी, आसूदोमल गिदवाणी, घनश्याम शिवदासाणी,जेठी सिपहमलाणी, गंगादेवी और कमला हीरानन्द के नाम प्रमुख हैं।

१९२०-२१ के 'असहयोग आंदोलन' में भाग लेने के कारण सिन्ध के लगभग २०० व्यक्तियों को जेल की सजा हुई। १९३० के 'नमक सत्याग्रह' में छःसौ सिन्धवासियों को और 'अवज्ञा आंदोलन' के सम्बन्ध में १२०० से अधिक सिन्धियों को जेल की सजा हुई। सिंधियों का सबसे बड़ा योगदान १९४२ के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में रहा, जिसमें लगभग २६०० सिन्धियों को जेल भेजा गया।

क्रांतिकारी आन्दोलन

सिन्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई केवल आंदोलन, भाषणों, प्रचार और नारों तक सीमित नहीं थी । एक ओर बेशुमार व्यक्तियों

आठ संपादक गिरफ्तार

आजादी के संघर्ष में सिन्धी पत्रिकाओं और पत्रकारों ने जो भूमिका अदा की वह मामूली नहीं, बल्कि सुनहरी अक्षरों में लिखने योग्य है। सिन्धी का एक दैनिक पत्र 'हिन्दू' १९१६ में प्रारम्भ हुआ, जो आगे जाकर 'हिन्दुस्तान' नाम से सन् २००३ तक प्रकाशित होता रहा। उसने जिस निडरता और वीरता से अंग्रेजों से मुकाबला किया उसकी मिसाल सिन्ध में तो क्या, पूरे भारत में और भारत के सभी भाषाओं के पत्रों में मिलना कठिन है। १९२१-२२ के असहयोग आंदोलन के समय 'हिन्दू' अखबार के एक के बाद एक आठ सम्पादक गिरफ्तार हुए और जेल भेज दिये गये। ये थे विष्णु शर्मा, जयरामदास दौलतराम, घनश्याम शिवदसानी, चनू नथराम गिदवानी, लोकराम शर्मा, झमटमल लखा सिंह, हीरानन्द करम चन्द और जोइथराम वलेच्छा। जब हिन्दू अखबार के मुद्रण पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो चोरी-छिपे यह छपता रहा। जब प्रेस पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो दूसरी प्रेसों से छपवाया गया। यहाँ तक कि 'साइक्लो स्टाइल' भी करवा कर बाँटा गया।। टिफिन बॉक्स और ब्रेड के बक्सों में छिपा कर अखबार का प्रसारण किया गया।

एक अन्य सिन्धी पत्र की आजादी की हलचल में भूमिका भी सुनहरी अक्षरों में लिखने योग्य है। यह था 'हिन्दूवासी' जो बाद में 'भारतवासी' के नाम से पुकारा जाने लगा। उसके सम्पादक जेठमल परसराम थे। साहित्यकार परसराम अपने आप में एक अद्‌भुत व्यक्तित्व थे। सन् १९१७ में हैदराबाद (सिन्ध) से 'हिन्दूवासी' प्रारम्भ किया गया।

१९१९ में अंग्रेजों ने रोलट एक्ट लागू किया, जिसके तहत अंग्रेज अधिकारी किसी को भी गिरफ्तार कर बिना मुकदमा चलाए नजरबंद रख सकते थे। ऐसी स्थिति में जेठमल ने जलियांवाला बाग में हुए कत्लेआम की आलोचना करते हुए- 'कलाल के हाट कुसण (कटने) का भय बहे' शीर्षक से सम्पादकीय लिखा था। उस पर कार्रवाई करते हुए जेठमल को दो वर्ष के कारावास की सजा दी गई। अन्य सिन्धी पत्रकार जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वे थे, सक्खर से 'सिन्धी' नाम के पत्र के सम्पादक वीरूमल बेगराज; 'देशमाता', सिन्धसेवक' और 'सदाइसिंध' के संपादक और प्रकाशक तोलाराम नालाणी तथा 'उन्नति' पत्रिका की सम्पादिका कमला हीरानन्द।

ने जेल की यातनाएं भुगतीं तो दूसरी ओर हजारों व्यक्तियों ने लाठियां और गोलियां खाईं और कम से कम छः व्यक्तियों ने अपनी जान देकर शहादत पाई।

सिन्ध में आजादी की देवी को अपनी जान कुर्बान कर शहीद होने वालों में हेमू कालाणी, मेघराज लुला, दत्तात्रेय, अल्लाहबक्श सूमरा, हासाराम पमनानी और हरचन्दराय विशनदास के नाम भी भुलाए नहीं जा सकते हैं।

गाँधीवादी सिन्धी नेता जयरामदास दौलतराय के जाँघ में गोली लगी थी और वे मरते मरते बचे थे। गांधी जी उन्हें सिन्ध का खरा सोना कह कर पुकारते थे। जब उनको गोली लगी तो गांधी ने उनको तार दिया, *'' खुशी हुई है कि तुमको गोली लगी है। जेल जाने से गोली का लगना अच्छा है और जांघ में गोली लगने से दिल और सीने में गोली लगना ज्यादा बेहतर है।''*

साहित्यकार भी पीछे नहीं

सिन्ध में समाज के हर वर्ग के लोगों, विद्यार्थियों, साहित्यकारों, पत्रकारों, व्यापारियों, औरतों, बूढ़े-बच्चों तथा हर जाति के लोगों ने आजादी के युद्ध में भाग लिया। विदेशों में रहने वाले सिन्धियों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान किया।

इस राष्ट्रीय हलचल में सिन्धी साहित्यकारों में राष्ट्रकवि हुंदराज दुखायल का नाम मुख्य है। इन्होंने न सिर्फ देशभक्ति और आजादी के गीतों की रचना की परन्तु मन-वचन और कर्म से अपना सम्पूर्ण जीवन देश को अर्पित कर दिया। आजादी के आंदोलन से सम्बन्धित उनकी कविताओं की पुस्तकों में 'फाँसी गीतमाला' और 'आजादी अलाप' विशेष उल्लेखनीय हैं। अंग्रेज सरकार ने अपने लिए अहितकर समझकर इनके प्रकाशन और ब्रिकी पर प्रतिबन्ध लगा दिया था । हुंदराज दुखायल ने ग्राम-ग्राम में जाकर झांझ और ढफली द्वारा आजादी के गीत गाकर सिन्धी समाज में आजादी की अलख जगाई।

कविता के क्षेत्र में पं. कालिदास की 'गांधीमाला', मोहनदास उधाराम की 'गांधी गुलशन' और जयराम मूलचन्दानी की 'स्वराज्य का स्नेह' पुस्तकें भी उल्लेखनीय हैं, जिनको अंग्रेज सरकार ने प्रतिबन्ध योग्य समझा।

साहित्यकारों ने अपनी कहानियों, उपन्यासों और नाटकों के जरिए भी स्वतंत्रता के कार्य को बल प्रदान किया। इस दिशा में ए.जी.आत्मा, हशू केवलरामाणी, लक्ष्मण राजपाल, कीरत बाबाणी, के.एन.वासवाणी, राम अमर लाल पंजवानी, शेख अयाज, चन्द्रा आडवाणी उल्लेखनीय हैं।

उपन्यासकारों में दादा सेवक भोजराज का 'आशीर्वाद', गुल सदारंगानी का 'इतिहास' और तीरथ सुभाणी का अनुवाद किया हुआ उपन्यास 'देशभक्त' विशेष उल्लेख योग्य हैं।

सिन्धी में आजादी के विषय पर मौलिक उपन्यास अपेक्षाकृत कम लिखे गये परन्तु दूसरी भाषाओं जैसे बंगाली, गुजराती, उर्दू और अंग्रेजी के इस विषय से सम्बन्धित कई उपन्यास सिन्धी में अनुवाद कर छापे गए। बंकिमचन्द्र चटर्जी का 'आनंद मठ', टैगोर का 'गोरा', अंग्रेजी उपन्यास 'अंकल टाम्स केबिन' का सिन्धी में अनुवाद तथा 'गोलन जा गूंदर' इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। नाटक और एकांकी के क्षेत्र में खान चन्द दरियानी का 'मुल्क जा मुदबर देश जे सदि के' (देशभक्ति), मंघाराम मलकानी का 'एकता जो आलाप', 'कौमी एकता', पं. द्वारका प्रसाद का 'वीर अभिमन्यु' और मेलाराम वासवाणी का 'देश का दुश्मन' जैसे नाटकों का उल्लेखनीय योगदान रहा।

छात्र आन्दोलन

उस समय के सिन्धी विद्यार्थियों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में जोश-खरोश के साथ भाग लिया और उन्होंने इस आंदोलन को बल प्रदान किया। सिन्ध के कालेज तथा विश्वविद्यालय के छात्रों

मातृशक्ति की हुंकार

महिलाएं किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। समाज की उन्नति और उत्थान में उनका बड़ा हाथ रहता है। स्वतंत्रता के आंदोलन में सिन्धी महिलाओं का भी बड़ा योगदान रहा। गांधी जी के द्वारा देश की आजादी के लिये किये गये आह्वान पर सिन्ध से हजारों महिलाएं स्वतंत्रता-संघर्ष में कूद पड़ीं। उन्होंने घर-घर जाकर जनता में राष्ट्रीय चेतना का भाव जगाने, प्रभात फेरियाँ निकालने, चरखा व खादी का प्रचार और स्वदेशी के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सिन्ध में महिलाओं में आजादी की लौ जगाने का श्रेय महाराष्ट्र की बहन सरस्वती देवी को जाता है। (सरस्वती ताई आप्टे बाद में राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका बनीं) बाद में सिन्ध की महिलाओं में इतनी भावना जगी कि वे ज्वालामुखी बन कर इस संघर्ष में कूद पड़ी। १९२०-२१ के असहयोग आंदोलन से सिन्धी औरतों में जागृति पैदा हुई। शिकारपुर की गंगादेवी और लक्ष्मीदेवी ने १९३० और १९३२ में गिरफ्तार होकर महिलाओं में संघर्ष की शुरुआत की। बाद में जेठी सिपहमलानी, कमला-हीरानन्द, गंगा गिदवानी आदि कई बहनें स्वतंत्रता की गतिविधियों में चमकते सितारे बनीं तथा कितनी ही बहिनें अपनी गोद में छोटे बच्चों सहित जेल गईं।१९३० के नमक सत्याग्रह के समय कराची में सिन्धी बहनों ने तो जैसे आकाश सर पे उठा लिया। लगभग तीन-चार हजार महिलाओं ने समुद्र पर एकत्र होकर अपनी मटकियां समुद्र के पानी से भरकर हर गली में खारे पानी से नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा। उस समय ऐसा लगा जैसे ब्रिटिश राज्य हवा हो गया।

ने १९०५ में बंगाल विभाजन के समय हुए आंदोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

'असहयोग आंदोलन' के समय हजारों छात्र अपनी पढ़ाई छोड़कर, कालेजों को अलविदा कह स्वतंत्रता संघर्ष में कूद पड़े। १९३० के 'नमक सत्याग्रह' में भी सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया। स्वदेशी आंदोलन के दौरान हजारों छात्रों ने रैलियां और प्रभात फेरी निकाली, विदेशी माल का बहिष्कार कर स्वदेशी को प्रोत्साहित किया, शराब पीने का विरोध तथा खादी और चरखे के प्रति चाहत पैदा करने का संदेश फैलाया। १९४२ के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सैकड़ों छात्रों ने गिरफ्तारियां दी। सक्खर, शिकारपुर और साहती के नौजवानों तथा कराची के डी.जे. सिन्धी कालेज और हैदराबाद के नेशनल कालेज के छात्रों की इन गतिविधियों में अग्रिम भूमिका रही।

पहला सिन्ध स्टूडेन्ट कनवेन्शन (सम्मेलन) १९१८ में सक्खर में श्री जयरामदास के मार्गदर्शन में हुआ। दूसरा सम्मेलन दूसरे वर्ष कराची में आचार्य आसुदोमल गिदवानी के मार्गदर्शन में हुआ। १९२१ में इसका विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता सरदार विट्ठल भाई पटेल ने की।

सिन्ध में आजादी की लड़ाई में छात्रों के आंदोलन में जो अग्रसर रहे उनमें देव नाथाणी, कीरत बाबानी, हीरानन्द करमचन्द, राम पंजवाणी, शेख अयाज, सेवकराम कर्मचन्द, आजम गिंदवाणी, केसोमल झांगियानी, राम मोटवानी, निहचलदास, हिमत संघाणी के नाम उल्लेखनीय हैं। केवल नौजवान नहीं अपितु धर्मदास लखानी और नारायण जैसे १२ वर्ष के बालकों ने भी इसमें भाग लिया।

सिंध के भामाशाह

कोई भी जंग केवल मैदान पर ही नहीं लड़ी जाती है। मैदान से दूर नैपथ्य में भी कई लोग अपना महत्वपूर्ण योगदान करते हैं जिसके बगैर लड़ाई को जारी रखना कठिन हो जाता है। ऐसा ही योगदान सिन्ध के कितने ही व्यापारियों, सेठों और कारखानेदारों ने दिया।

व्यापारियों और सेठों में हरचन्द बिशनदास, दौलतराम मंगनानी, नानक मुवाणी, आसूदोमल हूलचन्द, आसनदास वगैरह और कारखानेदारों में जे.बी.मंघाराम कम्पनी के नाम एकदम स्मृति में आ जाते हैं, जिन्होंने जरूरत के समय आजादी की गतिविधियों के लिये धन उपलब्ध कराया, जो जेलों में गये थे उनके परिवारों को सहायता पहुँचाई तथा सिन्धी अखबारों और पत्रिकाओं को मदद की। सुभाष चन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज के लिए धन की जरूरत हो या कामागातामारु मामले में धन की आवश्यकता हो अथवा क्रांतिकारियों को छिपाने और उनको शरण देने का कार्य हो, जकार्ता के सेठ तेजूमल और दक्षिण पूर्व एशिया में व्यापार चलाने वाले सेठ होतचन्द ने हमेशा अपना हाथ आगे बढ़ाया।

स्पष्ट है कि भारत की आजादी के आंदोलन में सिन्ध क्षेत्र का योगदान देश के दूसरे किसी भी क्षेत्र से कम नहीं रहा। स्वयं महात्मा गांधी ने १९१६ में सिन्ध के पहले प्रवास के बाद मुम्बई में प्रेस कान्फ्रेंस में पत्रकारों को बताया था- *''मैंने सिन्ध के लोगों में आजादी के आंदोलन के लिये जो उत्साह देखा वह मुम्बई में फैले उत्साह से भी अधिक था।''* ❑

अमर शहीद हेमू कालाणी

फांसी की खबर से जिसका वजन बढ़ गया

 सरल ज्ञाप्रटे

सिन्ध प्रदेश के पुराने सक्खर (लुकमान) में पेसूमल कालाणी के घर २३ मार्च १९२३ को वीर हेमू कालाणी का जन्म हुआ था। हेमू बचपन से ही बहुत वीर और साहसी था। वह हमेशा अपने साथियों के साथ टोली बनाकर रहता था और उसके समवयस्क साथी उसे बहुत प्यार करते थे और अपना मुखिया मानते थे। सात वर्ष की नन्हीं उम्र में ही वह अपने दोस्तों के साथ हाथ में तिरंगा झण्डा लेकर मुहल्ले में अंग्रेज फिरंगियों के खिलाफ नारे लगाया करता था। हेमू तब 'लुकमान हायर स्कूल' में पढ़ता था। तैराकी उसका प्रिय शौक था। वह सात नदियों के संगम सिन्धु में 'लैंस डाउन' नामक पुल पर से छलांग लगाकर घण्टों पानी में तैरता रहता था।

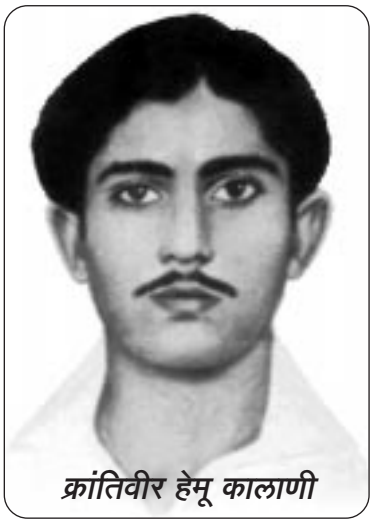

क्रांतिवीर हेमू कालाणी

अल्पायु में ही बना क्रांतिकारी

वह समय तीसरे दशक का अन्तिम दौर था और ब्रिटिश हुकूमत से भारत माँ को आजाद कराने की भावना से पूरा जनमानस उद्वेलित था। गांधी जी, तिलक, गोखले, आदि सत्याग्रह व अन्य अहिंसावादी रास्तों के जरिये स्वाधीनता आन्दोलन छेड़ चुके थे। आजादी की लडाई के ये सभी आधार-स्तम्भ हेमू के जीवन के प्रेरणा स्रोत बने। सन् १९३२ में जब हेमू के चाचा डॉक्टर मंघाराम कालाणी ने स्वतंत्रता आन्दोलन को सफल बनाने के लिए **स्वराज्य सेना मण्डल** की स्थापना की तो नवयुवकों एवं विद्यार्थियों ने उसकी सदस्यता ग्रहण की। इसी बीच भगतसिंह व उसके साथी असेम्बली बम केस में हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर झूल गये थे। इस बलिदान से हेमू अत्यधिक प्रभावित हुआ और उसके अन्तर्मन में अंग्रेज फिरंगियों के विरुद्ध घृणा की भावना और भी तीखी हो गयी। वह अपने सहपाठियों के साथ स्वराज्य सेवा मण्डल में शामिल हो गया और अनेक अवसरों पर मण्ड़ल के सदस्यों के साथ विलायती कपडों तथा अन्य विदेशी वस्तुओं का खुलकर बहिष्कार करने लगा। उसने अग्रेंजों की कई गाड़ियों को आग लगा दी।

अल्पायु में उसके अपार साहस को देखते हुए उसे मण्डल के अगुआ कार्यकर्ताओं में शामिल कर लिया गया। अब उसे विचार गोष्ठियों व अन्य महत्वपूर्ण बैठकों में भी बुलाया जाने लगा। क्रांतिकारी ज्वार के इस दौर में उसने एक बार रूक्कन रेलवे स्टेशन पर एक जोरदार प्रदर्शन आयोजित किया और लगभग डेढ घण्टे तक रेलगाडी को रोके रखा। इसी रेलवे स्टेशन पर महान सिंधी सन्त कंवरराम की गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी।

सन् १९४२ में महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो का आह्वान किया,इससे हेमू पहले की अपेक्षा अधिक सक्रिय हो गया। उसने 'भारत छोड़ो' का उद्घोष पूरे सिन्धु क्षेत्र में गुंजा दिया। इससे वहां की सैनिक छावनी में बगावत फैल गयी क्योंकि उस समय वहां की सेना में लगभग ८० प्रतिशत भारतवासी थे। तेजी से फैलती जा रही इस बगावत को कुचलने के लिए अंग्रेजों को अपनी यूरोपीय फौज बुलानी पड़ी।

रेल रोकने की योजना

२३ अक्तूबर १९४२ सोमवार सायं लगभग ४ बजे हेमू को एक साथी से खबर मिली कि रात १२ बजे और १ बजे के बीच यूरोपीय सेना और बारूद से भरी एक विशेष रेलगाड़ी क्वेटा-बलूचिस्तान से आ रही है जो सक्खर शहर से गुजर कर करांची की ओर जायेगी। इस वीर सपूत ने तत्काल शपथ ली कि मैं इस बारूद भरी रेलगाडी को अपने शहर सक्खर पहुँचने से पहले ही ध्वस्त कर दूंगा। वह अपने दोस्त नन्द व किशन के घर गया और उन्हें अपने कार्यक्रम से अवगत कराया। तीनों ने मिलकर फैसला किया कि नये सक्खर व पुराने सक्खर के बीच इकहरी रेलवे लाइन का जो एक छोटा पुल है उसके पास ही इस विशेष गाड़ी को नष्ट किया जायेगा। हेमू ने कहा कि *'हम लोग रात आठ बजे तुलसी दास पार्क में मिलेंगे और मैं रेल-पटरी के नट बोल्ट खोलने के लिए औजारों का प्रबन्ध करता हुआ आऊंगा। '*

हेमू समय से पहले ही पार्क में पहुँचा और वहाँ की स्थिति का अनुमान लगाने लगा। चांदनी रात में उसने देखा कि पुल में आवागमन जारी है। फिर वह टहलता हुआ पुल के दूसरी ओर पहुँचा। उसने यहां देखा कि पुल से तीस-पैंतीस गज की दूरी पर सक्खर बिस्कुट का कारखाना है जिसके मुख्य द्वार पर एक नेपाली

चौकीदार खड़ा है और लगभग २०० गज की दूरी पर एक पुलिस चौकी है। हेमू जब वापस पार्क में आया तो वहां नन्द और किशन उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। हेमू ने उन्हें स्थिति की पूरी जानकारी दी और बताया कि औजार के नाम पर उसे एक पाना (रिंच) और साथ में नारियल की रस्सी के टुकड़े ही मिल पाये हैं।

दोनों मित्रों ने शंका व्यक्त की कि इस डेढ़ फुट के पाने से हम क्या कर पायेंगे। हेमू ने उन्हें हिम्मत न हारने को कहा और पुल की ओर बढ़ चले। रेल की पटरी के निकट खड़े वे योजना बनाने में संलग्न थे कि तभी बिस्कुट कारखाने के चौकीदार की नजर उन पर पडी। चौकीदार ने हांक लगाई - 'कौन है?' हेमू ने आवाज दी- 'हम रेल कर्मचारी हैं।' और फिर काम में लग गये। परन्तु उस नेपाली चौकीदार को उनकी गतिविधियों पर शक हुआ और वह पुलिस चौकी में जाकर सूचना दे आया।

अभी वे नट बोल्ट ही खोल पाये थे कि उन्हें भारी भरकम बूटों की आहट सुनाई दी, पलट कर देखा कि चार-पांच टोपीधारी आ रहे हैं। हेमू ने बिल्कुल करीब आ गये सिपाहियों पर पाना फेंक मारा और अपने साथियों के विपरीत दिशा में चल दिया। गति धीमी होने के कारण पुलिस वालों ने कुछ दूर जाकर ही उसे पकड़ लिया।

'भारत माता की जय' और **'इंकलाब जिंदाबाद'** के नारे लगाते हुए पुलिस चौकी में उसने अपने इस जुर्म का इकबाल कर लिया कि *'' मैं पुलिया पर रेल लाईन को उखाड़ रहा था, जिससे उस रात विदेशी बारूद से भरी हुई रेलगाड़ी गुजरने वाली थी।''*

साथियों को बचाया

हेमू ने अपने अन्य साथियों के नाम बताने से इन्कार कर दिया। पुलिस ने उसे कठोर यातनाएं दीं लेकिन वीर सिन्धु सपूत ने बार-बार यही कहा कि मेरे साथ और कोई नहीं था। रात भर उसे बर्फ की सिल्ली पर नंगे लिटाये रखा गया और बेरहमी से पीटा गया पर उसने मुँह नहीं खोला। मिलिट्री कोर्ट में 'मार्शल लॉ' के अन्तर्गत मुकदमा चला और १७ दिसम्बर १९४२ को उसे दस साल की सजा सुनायी गयी। चाचा मंघाराम ने मेजर जनरल रिचर्डसन के पास हैदराबाद में अपील दायर की लेकिन २१ दिसम्बर को १० साल की सजा के बजाय फांसी पर लटकाने का हुक्म सुनाया गया। फांसी की सजा देने के लिए २१ जनवरी सन् १९४३ का दिन निश्चित हुआ।

माँ तुम्हें गर्व होना चाहिए

इस फैसले को सुनकर पूरा सिन्धु प्रदेश शोक में डूब गया। क्रांतिकारियों में खलबली मच गयी और सबने मिलकर अंग्रेजों के इस निर्दयतापूर्ण फैसले का खुलकर विरोध किया। हेमू के चाचा और अन्य रिश्तेदारों ने दिल्ली में गवर्नर जनरल लार्ड माउण्ड बेटन से क्षमा (मर्सी) की अपील की। लेकिन निर्दयी अंग्रेजों ने सभी अपीलें नामंजूर कर दीं। हेमू की माता जब अन्तिम बार उससे मिलने गयी तो हेमू को गले लगाकर फूट-फूट कर रो पड़ी । हेमू ने हंसते हुए अपनी मां को तसल्ली दी- *''तुम्हीं ने तो मुझे यह ज्ञान दिया है कि आत्मा अमर है, वह कभी नहीं मरती, यह शरीर तो नाशवान है फिर माँ नाशवान शरीर को त्यागने में दुःख कैसा! माँ तुम्हें तो गर्व होना चाहिये कि तुम्हारा बेटा वतन पर शहीद हो रहा है।''*

जब १९ वर्ष के हेमू को फांसी के तख्ते की ओर ले जाया जा रहा था तो उसके होठों पर मुस्कराहट थी। जेल कर्मचारियों ने उसका वजन तोला तो पहले की अपेक्षा वह ७ पौण्ड अधिक था। जेल अधिकारी ने जब उससे अन्तिम इच्छा के बारे में पूछा तो फांसी का फंदा गले में पहने हेमू ने गर्व के साथ सीना चौड़ा करके कहा- *''मुझे कुछ नारे लगाने की आजादी दी जाये''*। अनुमति मिलते ही हेमू की बुलन्द आवाज जेल परिसर में गूंज उठी-***''इन्कलाब जिन्दाबाद''। भारतवर्ष आजाद हो''। ''भारत माता की जय''।***

सुबह ७ बजकर ५५ मिनट पर इन नारों की आवाज के बीच फांसी का तख्ता खींच लिया गया और हेमू का शरीर हवा में झूल गया।

अमर शहीद हेमू कालाणी के पार्थिव शरीर का सिन्धु प्रदेश के हजारों नागरिकों द्वारा अन्तिम संस्कार किया गया। उस दिन सिन्धु प्रदेश के सभी कार्यालय, व्यापारिक प्रतिष्ठान एवं सिनेमाघर बन्द रहे। नव कुसुमित सुमन की तरह हेमू राष्ट्र के चरणों में समर्पित होकर अमर हो गया, उसका अनुपम बलिदान हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा। □

सिंध में संघ

हर सिन्धी को संघी माना जाता था

 नवलराय बचाणी

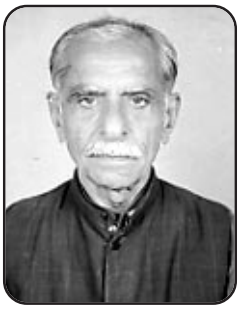

मई १९३२ के प्रथम सप्ताह में 'अखिल भारतीय तरुण हिन्दू परिषद' ने कराची में एक सम्मेलन का आयोजन किया । श्री बाबा राव सावरकर (वीर सावरकर के अग्रज) ने संघ-संस्थापक डा. हेडगेवार जी को लिखा कि वे अवश्य आकर इस सम्मेलन को सम्बोधित करें। भाई परमानन्द ने भी श्री बाबाराव जी को कहा कि इस अवसर पर डाक्टरजी को अवश्य बुलावें। डाक्टरजी ने भी अखिल भारतीय तरुण सम्मेलन को देशभर के नौजवानों को संघ की जानकारी देने का अच्छा अवसर माना। अतः डाक्टरजी ने कराची में उपस्थित रहने की स्वीकृति दे दी।

पहली शाखा

डाक्टरजी कराची में छह दिन रहे । उन्हें मालूम था कि सिंध और पंजाब प्रांतों में देश विभाजन की मनोवृत्ति हावी है अतः उन्होंने हिन्दुओं को संगठित होने की जोरदार अपील की। डाक्टरजी ने संघ की शाखा लगाने की पद्धति भी बताई और शाखा चालू करवा दी। डी. जी. चौधरी को संघचालक बनाया गया। कुछ कार्यकर्ता शाखा में जुट गये।

डाक्टरजी ने जाते समय कहा कि शाखा चालू रहनी चाहिये। उस शाखा को खीर शाखा कहा जाता था क्योंकि शाखा समाप्ति के बाद स्वयंसेवक दूध पीते थे। वह शाखा कुछ समय बाद बन्द हो गई। कुछ समय के बाद सिंध में एक प्रचारक भेजा गया। १९३९ में सिंध के कुछ स्वयंसेवक नागपुर ओ.टी.सी. में गये। १९४० में नागपुर में प्रथम वर्ष के कुछ स्वयं सेवक ये थे - श्री लाल आतिरे, कृष्णानन्द जेटले, आसूदो मोत्याणी, देवन मोटवाणी, ऐ. बुलन्द। इन्होंने डाक्टरजी को कहते हुए सुना, कि आज लघु भारत मेरे सामने है। सब प्रान्तों के प्रतिनिधि आये हुए हैं , खुशी की बात है । बीमारी के कारण डाक्टरजी लम्बा बौद्धिक नहीं दे पाए थे। उनके मार्मिक शब्द युवकों के हृदय पटल पर छाप छोड़ गये।

शिकारपुर कॉलोनी बम केस

सिंध और पंजाब में बहुत स्थानों पर मुसलमानों ने बेहथियार हिन्दुओं पर हमले किये। कराची के कुछ नौजवानों ने श्री तोताराम हिंगोराणी के खाली मकान में बचाव के लिये बंदूकें, पिस्तौल,बम आदि बनाने की योजना बनाई, पर ९ सितम्बर १९४७ को बम का ऐसा विस्फोट हुआ कि आधी कराची तक आवाज पहुँची । श्री प्रभु बाबला का वहीं निधन हो गया तथा बुरी तरह घायल वासुदेव बाबा ने दूसरे दिन अस्पताल में दम तोड़ दिया।

१७ से भी अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया,सभी को काफी कष्ट दिये गये। श्री झमटमल वाधवाणी और राधाकृष्ण तुलसियाणी को केस का पीछा करने और संभाल की जिम्मेदारी दी गई थी। बन्दी बनाये गये कार्यकर्ता इस प्रकार हैं - सर्व श्री, खानचंद गोपालदास, नंद बदलाणी, गोबिंद अजवाणी,दौलत साजनाणी, नारायण मीरचंदाणी, टीकमदास वजीराणी,अर्जन भोजवाणी, लेखराज वजीराणी, राम हिंगोराणी, मुरली छुगाणी, नारायण वाधवाणी, नारायण वाधवाणी, हरगोबिंद गिदवाणी, संतो गिदवाणी, विष्णु जगेशिया, नानक रामरखियाणी, धनराज ओझा, मंघाराम झूराणी।

इस धमाके के बाद किशन माटा, गोविन्द छंगाणी और लालकृष्ण आडवानी दूसरे दिन हवाई जहाज द्वारा कराची से बच कर भारत पहुँच गये।

श्री खानचन्द, गोपालदास और कई नामी वकील यह केस लड़ने में लग गये। इधर भारत में जिन्ना के परम मित्र डा. कुरैशी कई खूनों के गुनाह में गिरफ्तार हुए थे। जिन्ना ने कुरैशी को आजाद कराने की गुहार लगाई। आखिरकार सरदार पटेल की सूझ बूझ से एक साल बाद १३ अक्तूबर १९४८ को अदला-बदली में दिल्ली में सरसंघचालक श्री गुरुजी और हजारों की उपस्थिति में कराची के शिकारपुर कालोनी बम केस में गिरफ्तार लोग दिल्ली पहुँचे और बाद में डा. कुरैशी को कराची में जिन्ना को सुपुर्द किया गया। नवम्बर १९४८ में श्री झमटमल वाधवाणी सब को भारत में भिजवाकर स्वयं भारत पहुँचे।

सिंधी याने संघी

सिन्ध का नया इतिहास जब लिखा जाएगा तो श्री राजपाल पुरी का नाम सुनहरी अक्षरों में लिखा जाएगा। वे त्याग, सेवा, सादगी तथा अटल इच्छा शक्ति की प्रतिमूर्ति थे। उनके कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का काम सिंध तथा बलोचिस्तान तक फैला। स्थिति ऐसी थी कि जब कोई बाहर का व्यक्ति सिंध में आता तो ऐसा कहता कि '' सिंधी माना संघी '' अर्थात १२ वर्ष के बालक से लेकर बड़ी आयु तक स्वयंसेवक सिंध के प्रत्येक जिले में फैले हुए थे और प्रचारकों का भी जाल फैला हुआ था। आज भी सिंधी कार्यकर्ता उनके कार्य करने के तरीके और कला को बड़ी श्रद्धा से सिर नवाते हैं।

राजपाल पुरी

श्री राजपाल का जन्म पंजाब के सियालकोट नगर में (आजकल पाकिस्तान में) वीर हकीकत राय की समाधि के सामने वाले मकान में १८ अगस्त १९१८ को हुआ था। इनके पिता श्री विशम्भर नाथ प्रसिद्ध वकील थे। राजपाल ११ वर्ष के थे तभी उनके पिता का निधन हो गया। उनको पिता के निधन का बड़ा सदमा लगा।

संघ निर्माता डा. हेडगेवार ने १९३७ में के. डी.जोशी को संघ कार्य के लिये सियालकोट भेजा था । उन दिनों संघ की आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि कार्यकर्ताओं को अपने रहने खाने की व्यवस्था भी स्वयं करनी पड़ती थी। श्री के.डी. जोशी जी ने क्रिश्चियन कालेज में प्रवेश लिया। वहाँ उनका राजपाल जी से सम्पर्क हुआ। परिणामस्वरुप १९३८ में नागपुर में वार्षिक 'शिक्षण वर्ग' (ओ.टी.सी.) में राजपाल जी ने ४० दिनों तक प्रशिक्षण लिया। वहीं उन्होंने देश के लिये जीवन समर्पित करने का संकल्प ले लिया।

नौकरी छोड़ी

१९३९ में दिल्ली में सुरक्षा विभाग (डिफेन्स) में नौकरी मिली, किसी रिश्तेदार के पास रहने लगे, लेकिन मन नौकरी करने में नहीं लग रहा था। एक महीने का वेतन लिया और नौकरी से त्याग पत्र दे दिया। उसी रात दिल्ली से निकल कर वे कराची पहुँच गये, वहाँ बाबा साहिब आप्टे ने उन्हें हैदराबाद में कार्य करने के लिये कहा । वहाँ वे 'नवलराय हीरानन्द अकादमी हाई स्कूल' में अध्यापक बने। इसी के साथ संघ का काम भी शुरु हो गया। विद्यार्थियों ने व्यायाम, संचलन, लाठी सीखने में रुचि दिखाई और संघ की शाखाएँ बढ़ने लगीं।

१९४२ में मुस्लिम नेता 'पीर पागारे' के लगभग एक लाख अनुयाइयों ने सिंध में खून खराबा मचा रखा था। क्योंकि अंग्रेज सरकार ने मार्शल लॉ के अन्दर पीर पागारे को फांसी दे दी थी। संघ के सक्रिय कार्यकर्ताओं श्री राजपाल पुरी, लोकमान्य जेटले और देवन् मोटवाणी को भी मार्शल लॉ के अन्दर बन्दी बनाया था।

विभाजन पूर्व सिंध में संघ के प्रचारक

१. राजपाल पुरी
२. लोकनाथ जेटली
३. अर्जुन मीरचंदाणी
४. अर्जन आनंदाणी
५. भगवान हिंगोराणी
६. छत्रसाल मुक्ता
७. गिरधारी रामचंद छाबड़िया
८. गिरधारी छाबड़िया बी.ई
९. गोबिंद मोटवाणी
१०. हरीसिंग मंघनाणी
११. हरी आत्माराम सामताणी
१२. हासो मीरचंदाणी
१३. हशू आड्वाणी
१४. हीरो मलकाणी
१५. हीरो मलकाणी
१६. किशन मंशारामाणी
१७. किशन कानोगा
१८. खेमन मोतियाणी
१९. किशन मुरारी
२०. करसन भाई
२१. लाल कृष्ण आडवाणी
२२. लछमण टहिल्याणी
२३. लाल अत्रे
२४. लछमण मटाई
२५. मुरली मूलचंदाणी
२६. मोहन आडवाणी
२७. नरेन्द्र नरसेन
२८. नारायण वासवाणी
२९. नाराइण भावनाणी
३०. नानिक रामरखियाणी
३१. प्रताप शर्मा
३२. प्रभु बाबलाणी
३३. राम कोटवाणी
३४. राम रामनाणी
३५. राम नागराणी
३६. रवि बलवाणी
३७. रमेश बासवाणी
३८. रमण लाल बोधा
३९. राजकुमार
४०. राम ज्ञानी
४१. सुरेश आडवाणी
४२. शम्भूराम चांदी
४३. शिवो माटा
४४. साधु बिजाणी
४५. थांवर पंजाबी
४६. तीरथ बिदीचंदाणी
४७. टेकू मीरपुरी
४८. टीकम बाधवाणी
४९. ठाकुरदास टंडन
५०. विजय कुमार
५१. प्रताप रामचंदाणी
५२. वासुदेव गाबा
५३. वासुदेव माटा
५४. हरेश मनसुखाणी

हैदराबाद के कुछ मशहूर वकीलों ने बड़ी चतुराई से मुकदमा लड़ा और तीनों को जेल से छुड़ा लिया। मार्शल लॉ के कारण संघ का कार्य गुप्त रूप से चलता था। फुटबाल , वालीबॉल, गिल्ली-डंडा, कबड्डी आदि खेल होते थे। महात्मा गांधी ने १९४२ में अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया था तो अंग्रेजों ने भी सख्ती की और कइयों को जेलों में रखा। इन तकलीफों के होते हुए भी संघ का कार्य बढ़ता रहा।

झमटमल वाधवाणी

शाखा पर हमला

मुसलमानों को यह सहन नहीं हुआ, इसलिए उन्होंने संघ को हानि पहुँचाने के लिये षड्यंत्र रचने शुरु किये । हैदराबाद में मई १९४५ में सिंध के मुस्लिम पहलवानों के तीन दिनों के दंगल का कार्यक्रम बनाया गया। चौथे दिन किले की बाल शाखा पर उन पहलवानों ने लाठियाँ, तलवारें, चाकू लेकर आक्रमण कर दिया । उस समय वहाँ ५०-६० बाल स्वयंसेवक थे, प्रत्येक को कुछ न कुछ चोट लगी । अंधेरे में श्री नेणूराम शर्मा को पेट में खंजर घोंप दिया गया। वे सेन्ट्रल अस्पताल में भर्ती कराये गये और दूसरे दिन वे शहीद हो गये। इस घटना से पूरे सिंध में रोष फैल गया। मुसलमानों ने महीनों तक घरों से निकलने की हिम्मत नहीं की। अब सिंध के प्रत्येक छोटे-छोटे गांव में भी संघ शाखा खोलने के लिये पुरी जी के पास चिठ्ठियाँ आने लगी।

दुर्भाग्य से कायर कांग्रेस ने १९४७ में विभाजन की स्वीकृति दे दी और पूरा सिंध पाकिस्तान को दे दिया। तत्कालीन सरसंघचालक श्रीगुरूजी ५ और ६ अगस्त १९४७ को कराची और हैदराबाद में पूर्ण गणवेश में स्वयंसेवकों का बड़ा एकत्रीकरण कर आम सभा को सम्बोधित कर कह आये थे कि कुछ सख्ती होगी लेकिन हिम्मत करके रहें। कई कांग्रेसी नेता काफी पहले ही सिंध खाली कर गये थे। जिन्होंने कहा था पाकिस्तान हमारी हड्डियों पर बनेगा, घुटने टेक बैठे। नोआखली, पंजाब, मुलतान आदि में झगड़े बढ़ते गये। सिंध से भी पहले चुन चुन कर लबाणे सिखों को निकाला गया। भारत से गये मुसलमान जबरदस्ती घरों, बाजारों, स्कूलों में घुस कर लोगों को निकालने लगे। कराची से जोधपुर पहुँचने वाली ट्रेन को शाहपुर स्टेशन पर रोककर हिन्दुओं का कत्लेआम किया गया।

राजपाल जी धोती कुर्ते में सीना चौड़ा करके महाराजाओं की चाल चलते थे। स्वयंसेवकों ने सोचा कि पाकिस्तान सरकार और गुण्डों की आँखों का कांटा बने राजपाल जी का यहाँ अधिक रहना उचित न होगा। सो कराची से मुम्बई हवाई जहाज के रास्ते वासुदेव मंघनानी नाम की टिकट बनवाई गई । राजपाल जी जहाज में बैठ गये । इस बीच पाकिस्तानी सरकार को खबर लग गई। उन्होंने वायरलैस पैगाम देकर जहाज को वापस उतारना चाहा लेकिन खुशनसीबी से हवाई जहाज पाकिस्तानी सीमा से बाहर निकल चुका था।

भारत विभाजन के बाद राजस्थान में प्रचारक के नाते कई दायित्व निभाकर १९८७ से राजस्थान भारतीय सिंधु सभा के प्रभारी रहे श्री ठाकुरदास टण्डन ने लेखक को बताया-*''मैं १९४४ में हैदराबाद सिंध में नवलराय हीरानन्द अकादमी में पढ़ाई करते हुए मैट्रिक के बाद, इन्टर साइन्स के दौरान श्री राजपाल पुरी के सम्पर्क में आया, उनका समय समय पर मार्गदर्शन मिलता रहता था। १९४५ में एक दिन किले पर लगने वाली शाखा पर आक्रमण हुआ। इस आक्रमण में श्री नेणूराम शर्मा की शहादत हुई थी, मुझे भी ठोडी पर चोट लगी।''*

१९४५ में अहमदाबाद की ओ.टी.सी, १९४६ में मेरठ के शिक्षण वर्ग, १९४७ में अहमदाबाद के शिक्षण वर्ग में सिंधी स्वयंसेवकों की अच्छी संख्या प्रशिक्षण लेने आई थी। राष्ट्र सेविका समिति की शीला कृपलानी एवं जेठी डेवाणी ने कई कमाल के कार्य किये। १९४७ में मुम्बई से सेविका समिति की प्रमुख मौसीजी अर्थात लक्ष्मी बाई केलकर ने भारी खतरा उठा कर कराची और हैदराबाद में कई स्थानों की महिलाओं और कंवारी कन्याओं को हिम्मत और उत्साह से मुम्बई पहुँचाया। वहाँ स्वयंसेवकों के परिवारों में आवास भोजन की व्यवस्था और सुरक्षा करवाकर उनको अपने-२ परिवारजनों तक पहुँचाने का कठिन कार्य शानदार और धैर्य पूर्ण तरीके से सम्पन्न किया गया। □

सिन्ध की वर्तमान स्थिति

 ज्ञानदेव आहूजा

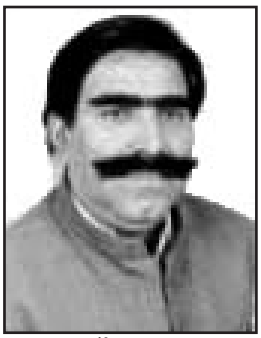

कभी भारत का हिस्सा रहे पाकिस्तान में इस समय ६ प्रान्त हैं। इनमें से एक सिन्ध प्रान्त की आबादी लगभग ३ करोड़ १० लाख है। इस ३ करोड़ में सिन्धी भाषा-भाषी लगभग २ करोड़ हैं, जिनमें हिन्दू सिन्धी लगभग ३० लाख एवं शेष सिन्धी मुसलमान हैं।

लगभग सभी सिन्धी हिन्दुओं के द्वारा आजीविका हेतु व्यापार किया जाता है। २० प्रतिशत सिन्धी हिन्दुओं के पास अपनी खेती-बाड़ी भी है। सन् १९४७ में भारत के बटवारे के बाद पाकिस्तान से भारत आये सिन्धी हिन्दुओं के पास जो जमीन जायदाद थी, उस पर अधिकांशतः भारत के विभिन्न प्रान्तों से गये मुसलमानों का कब्जा है। इन मुसलमानों को वहाँ की तत्कालीन सरकार द्वारा क्लेम देकर कब्जा करवाया गया था। इन्हें आज भी वहाँ मुहाजिर कहा जाता है। मुहाजिर का अर्थ शरणार्थी या रिफ्यूजी है।

सिन्ध में कुल २३ जिले हैं जो इस प्रकार हैं-१. कराची, २.जामशोरो, ३.हैदराबाद सिन्ध, ४. टन्डो मोहम्मद खान, ५. टन्डो अल्लहयार, ६. ठट्टो, ७. बदीन, ८. मीरपुर खास, ९. उमर कोट, १०. मिट्ठी, ११. सांघर, १२. बेनजीराबाद, १३.नौशौरो १३. फिरोज़, १४. खैरपुर, १५. सक्खर, १६. लाडकाना, १७. कम्बज़ शहज़ाद कोट, १८. जैकमाबाद, १९. दादू, २०.शिकारपुर, २१. कशमीर, २२. घोटकी, २३. मटियारी।

विभाजन से पूर्व कराची और हैदराबाद जहाँ हिन्दू रहा करते थे, वहाँ अब भारत से गये मुहाजिर मुसलमान रहते हैं। वहाँ की सरकार ने हिन्दुओं के व्यापारिक प्रतिष्ठान, दूकानें एवं मकान इन मुसलमान मुहाजिरों को आवंटित कर दिये थे। अतः सिन्ध के बड़े शहरों में मूल सिन्धी बहुत कम और मुहाजिर ज्यादा रहते हैं। यहाँ का सारा थोक एवं खुदरा व्यापार इनके हाथ में ही है। यहाँ तक कि कराची बन्दरगाह से सम्बद्ध मर्चेन्ट नेवी पर भी मुहाजिरों का कब्जा है।

मुहाजिरों का आतंक

यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि भारत के बटवारे के समय पाकिस्तान के पंजाब, पख्तूनिस्तान, बलूचिस्तान आदि में हिन्दुओं को लूटा गया, मारपीट हुयी, बहन बेटियों की इज्जत लूटी गयी, किन्तु सिन्ध प्रान्त में ऐसा बहुत कम हुआ। सिन्ध के मूल सिन्धी मुसलमानों ने हिन्दुओं को बहुत परेशान नहीं किया। थोड़ी बहुत घटनायें अगर हुई भी तो यहाँ से गये मुहाजिरों के कारण हुईं। हाँ संपत्ति अवश्य छोड़कर आनी पड़ी।

सिन्ध में मुहाजिर अभी भी लुटेरों जैसा रूप बनाये हुये हैं। मूल सिन्धी एवं मुहाजिरों का सामन्जस्य वहाँ आज भी नहीं है। इसके विपरीत भारत में आये सिन्धी हिन्दू जो शरणार्थी बन कर आये थे, सब जगह ही बाकी हिन्दू समाज के साथ समरस हो गये हैं। पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में सिन्धी मुसलमानों एवं मुहाजिरों का संघर्ष, लड़ाई, झगड़े आज भी जारी हैं। कभी-कभी तो बड़े-बड़े गुटों में भारी मात्रा में खून-खराबा भी हो जाता है।

मूल सिन्धी अब हिन्दुओं को याद करते रोते हैं। भारत से सिन्धी हिन्दू, सन्त, महात्मा या साहित्यकारों, लेखकों, दर्शनार्थियों का प्रतिनिधिमण्डल जब पाकिस्तान जाता है तो सिन्ध में उनका भव्य स्वागत ही नहीं किया जाता अपितु उनके लिये

हैदराबाद किला

मोहन जोदड़ो की मुख्य गली

पलक पावंड़े बिछाये जाते हैं।

समान पूर्वज

वहाँ का सिन्धी मुसलमान सिन्ध के आखिरी महाराजा सम्राट दाहिर सेन को अपना पूर्वज एवं आदर्श मानने लगा है। शहीद हेमू कालानी, सन्त कंवर राम, सांई टेऊंराम आदि सन्तों और शहीदों को अपना सन्त और शहीद मानने लगा है। इनकी जयन्ती एवं बलिदान दिवस इत्यादि अनेक कार्यक्रम बहुत ही श्रद्धा एवं उल्लास के साथ सिन्धी मुसलमानों के द्वारा मनाये जाने लगे हैं। इससे भी आगे बढ़कर अनेक सिन्धी-मुसलमान भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण को अपना देवता, पैगम्बर या भगवान मानने लगे हैं।

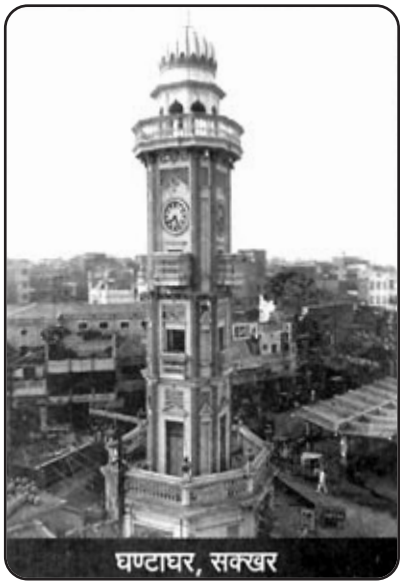
घण्टाघर, सक्खर

वहाँ स्थित मुख्य मंदिरों जैसे साधुबेला, कालकादेवी, वरुण देव मंदिर, झूलेलाल या जिन्दापीर मंदिर इत्यादि की सुरक्षा का भार सिन्धी मुसलमान ही वहन करते हैं। वैसे पूरे सिन्ध प्रान्त में वर्तमान में लगभग ३०० मंदिर हैं जिनकी सुरक्षा व्यवस्था सिन्धी मुसलमान ही संभाले हुए हैं। वहाँ के मंदिरों की हिन्दू-सिन्धी समितियों ने सुरक्षा व्यवस्था का भार सिन्धी मुसलमान को सौंपा हुआ है।

सिन्ध के सीमान्त पर स्थित हिंगलाज माता, जो पूरे सिन्ध प्रान्त की सभी जातियों, समाजों की कुल देवी है, के दर्शनों के लिए अब मुसलमान भी जाने लगे हैं।

जीये सिन्ध आन्दोलन

सिन्ध के सिन्धी मुसलमानों ने जीये सिन्ध कौमी मूवमेण्ट (J.S.Q.M.) चला रखा है। इनके मुख्यनेता श्री बशीर अहमद खान कुरैशी हैं। इनकी बड़ी बड़ी सभाएं होती हैं। कई-कई बार तो चार-पाँच लाख तक की जनता इन कार्यक्रमों में इकट्ठा हो जाती है। पहले 'जीये सिन्ध' का आन्दोलन श्री गुलाम मोहम्मद सैयद एवं श्री रमेश भट्टी ने चलाया था पर अब श्री बशीर अहमद खान कुरैशी चलाते हैं।

श्री बशीर अहमद खान कुरैशी का कहना है कि अगर भारत सरकार उनको सहयोग करे तो वे सिन्ध को भारत में मिला दें या पाकिस्तान से बांग्लादेश की तर्ज पर इसे अलग कर दें। पर भारत सरकार द्वारा इनका सहयोग करना तो दूर उल्टे पाकिस्तान की सिन्ध-विरोधी केन्द्रीय सरकार को सहयोग किया जाता रहा है। सिन्ध प्रान्त में पाकिस्तानी सरकार द्वारा विशेष ध्यान भी नहीं दिया जा रहा है। अभी कुछ दिनों पहले १३ फरवरी को ही सिन्धी हिन्दुओं की लड़की रिंकल कुमारी का अपहरण कर मुहाजिरों द्वारा जबरन निकाह एवं धर्मान्तरण कराया गया, जिसके विरोध में सिन्ध के हिन्दुओं से ज्यादा जीये सिन्ध कौमी मूवमेंट (J.S.Q.M.) के नेतृत्व में आन्दोलन इत्यादि किये गये।

उमर कोट किला

जागे भारत सरकार

सारांश यह है कि पाकिस्तान में सिन्ध प्रान्त की स्थिति बड़ी ही खराब एवं दयनीय है। सिन्ध प्रान्त आजादी के समय जैसा था, आज उससे भी अधिक दयनीय एवं पिछड़ा हुआ है। सिर्फ मुहाजिरों की कालोनियों एवं शहरों में ही विकास हुआ है। सिन्ध का मुसलमान गांव, कस्बे, नगर एवं बस्तियों में अब भी भारी पिछड़ी एवं बेहद खराब स्थिति में है। पाकिस्तान की केन्द्र सरकार भी इनको पिछड़ा ही रखना चाहती है। पाकिस्तानी सरकार मुहाजिरों को पूरा समर्थन दे रही है एवं सिन्ध के मुसलमानों एवं हिन्दुओं के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है, जिसके चलते सिन्धी मुसलमानों में सरकार के प्रति भारी आक्रोश है।

वैसे भी सिन्ध की सीमाएं जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर एवं बीकानेर से लगती हुई हैं। जरूरत इस बात की है कि भारत सरकार बारूद के ढेर पर बैठे हुए पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त एवं वहाँ की जनता के प्रति मानवता का दृष्टिकोण रखते हुए 'जीये सिन्ध आन्दोलन' को पूर्ण समर्थन दे ।

भारत में रहने वाले हिन्दू समाज को भी सिन्ध में छटपटाने वाले सिन्धी भाइयों को नैतिक एवं आर्थिक, सहयोग करना चाहिये ताकि भारत के राष्ट्रगान में सम्मिलित 'सिन्ध' शब्द की व्यावहारिकता सिद्ध हो सके। ***जय सिन्ध, जय भारत, जय हिन्दुस्थान।*** □

-विधायक,
रामगढ़ (अलवर)

भारतीय सिन्धु सभा

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता,
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्रविड उत्कल बंग....

हमारे राट्रगान की उपरोक्त पंक्तियों को गौर से पढ़ेंगे तो पायेंगे कि हमारे राष्ट्र की संकल्पना का कुछ हिस्सा हमारे देश की भौगोलिक सीमा में नहीं है । तो स्वाभाविक रूप से मन में प्रश्न उठता है कि क्या यह राष्ट्रगान गलत है? इसका जवाब है, नहीं। १९५० में संविधान सभा ने जब जन गण मन को हमारे राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया था, तब भी हमारे नेताओं के मन में यह कल्पना थी कि स्वाभाविक रूप से सिंध भारत का हिस्सा होना चाहिये । परन्तु देश के विभाजन के बाद जो लोग सत्ता में आए, उन्होंने सत्ता के नशे में देश की भौगोलिक परिस्थितियों के साथ समझौता किया ।

विभाजन की त्रासदी

विभाजन के समय भारत आये सिन्धी अपना सब कुछ लुटा आये थे। तन पर कपड़े और मन में विस्थापन की कसक लिये सिंधी समाज ने भारत में अपनी जगह बनानी शुरू की और आज पूरे भारत में सिंधियों को सम्मानित और व्यावहारिक उद्यमियों के रूप में जाना जाता है। परन्तु, अपने अस्तित्व की इस जद्दोजहद में सिंधियों से कुछ छूट रहा था, वो था उनकी संस्कृति, उनकी भाषा, उनका वैशिष्ट्य ।

परिवार की आर्थिक हालत को मजबूत करते-करते कब उनसे संस्कृति, सभ्यता पीछे छूटती गई, यहां तक कि जिस सिन्धी भाषा (जो नौ लिपियों वाली थी) को साथ लेकर आये थे, वो भी भूलने लगे । समाज के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग गया कि जिस सिन्धु से हिन्दू की उत्पत्ति हुई थी, जो सनातन-धर्म के अग्रसर थे वो पंक्ति में पीछे खिसक गये। सिन्धी सभ्यता का क्या होगा? सिन्धी भाषा व सिन्धी बोली का क्या होगा? बिना जमीन (प्रान्त) भाषा को कब तक जीवत रख पाते । पूरे भारत वर्ष में अलग-अलग रहने के कारण नित्य नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था । पूरे समाज में अपना प्रान्त न मिलने की कमी को महसूस किया जाने लगा तथा विभाजन की पीड़ा का दर्द जो टीस बन कर बुजुर्गों के दिल में था, नई पीढ़ी को उसका ज्ञान भी नहीं रहा । नई पीढ़ी को अपने सन्तों, महात्माओं, दरवेशों, योद्धाओं, विद्धानों, लेखकों, कवियों, समाज सेवकों व शहीदों का ज्ञान भी नहीं रहा ।

विभाजन से पूर्व पूरी सिन्ध में पंचायतों का कार्य गांव-गांव, ढाणी-ढाणी तक फैला हुआ था और यही विशेषता विभाजन के बाद भी दिखी। जहां पर सिन्धी समाज के २५-३० घर होते हैं वहां मोहल्ला पंचायत का निर्माण हो गया परन्तु यह जिला या प्रान्त स्तर तक नहीं फैला । ऐसे में देशभर में एक ऐसे संगठन की आवश्यकता महसूस होने लगी जो सम्पूर्ण भारत के सिन्धियों को एक-जुट कर सके । इसीलिए विभाजित भारत में पैदा होने वाली नई पीढ़ी को उनकी जड़ों से जोड़े रखने के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहल पर १९७९ में 'भारतीय सिंधु सभा' की स्थापना मुंबई में हुई ।

राजस्थान में शुरुआत

१९८० में राजस्थान प्रान्त में बड़े शहरों में इसकी शुरुआत हुई, लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जो जाति प्रथा को कभी मान्यता नहीं देता है, के स्वयंसेवक भारतीय सिन्धु सभा का कार्य करने में हिचकिचाते थे। इसी दौरान २७, २८, २९ नवम्बर १९८१ को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का राजस्थान का शिविर ब्यावर शहर में लगा । इस शिविर में पूरे प्रान्त से आये हुए स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन करने के लिए तत्कालीन सरसंघचालक परमपूजनीय बाला साहब देवरस भी आये थे।उन्होंने घोषणा की कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सिंधी समाज में सिंध के प्रति जागरूकता और एकात्मता बनाये रखने के लिये भारतीय सिन्धु सभा का गठन किया है।

सिन्धी स्वयंसेवकों से बाला साहब जी ने आग्रह किया कि वे सिंधी समाज के बीच सिंधी सांस्कृतिक चेतना का कार्य आरम्भ करें ।

उद्देश्य

भारतीय सिन्धु सभा का मुख्य उद्देश्य अखण्ड भारत की नींव रखना, सिन्ध प्रदेश को सिन्धी हिन्दुओं के मन में जीवत रखना, नई पीढ़ी के मन में विभाजन की पीड़ा को जाग्रत रखना व सिन्धु संस्कृति को बचाने के साथ-साथ सम्पूर्ण सिन्धी समाज में एकता पैदा करना है । भारतीय सिन्धु सभा ने सिन्धु संस्कृति को बचाने के लिये ये नीतियां व कार्यक्रम बनाये हैं ।

कार्यकारिणी

राष्ट्रीय

अध्यक्ष :	*लक्ष्मण चन्दीरामानी*
महामंत्री :	*घनश्याम कुकरेजा*
संगठन मंत्री :	*वासुदेव वासवानी*
कोषाध्यक्ष :	*दिनेश टहिलियाणी*

राजस्थान

अध्यक्ष :	*लेखराज माधू*
महामंत्री :	*वासुदेव केसवानी*
संगठन मंत्री :	*मोहनलाल वाधवानी*
कोषाध्यक्ष :	*नोतनदास करमचंदाणी*

-नई पीढ़ी में सिन्धु संस्कृति के संस्कार भरना ।

-सिन्धी समाज को अन्य भारतीय समाजों से जोड़ना ।

-सिन्धी समाज को आदर्श समाज की भूमिका में प्रस्तुत करना।

-भारत में शिक्षण, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सेवाओं हेतु संस्थाओं का गठन करना एवं करवाना ।

-नई पीढ़ी में सिन्धीयत की चेतना एवं स्वाभिमान जगाना, उन्हें सिन्ध के गौरवमय इतिहास के बारे में जानकारी देना ।

-सिन्धी भाषा व साहित्य का प्रचार व प्रसार करना।

-सिन्धी पर्व, त्यौहार व मेले मनाना व आयोजित करना ।

-सिन्धी महिलाओं को एकत्रित कर धार्मिक व शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित करवाना ।

-सिन्धी स्वतंत्रता सेनानियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान करना ।

-स्वास्थ्य क्लब, रोग निदान केन्द्र, रक्तदान शिविर, पुस्तक बैंक, सामाजिक निर्देशन केन्द्र स्थापित करना ।

-निर्धन एवं पिछड़े सिन्धियों की सहायता करना ।

प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम

राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय सिंधु सभा वर्ष में चार प्रमुख कार्यक्रम आयोजित करता है।

सिन्धी भाषा दिवस– सिन्धी भाषा को १० अप्रेल १९६७ में संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया था। इस प्रकार सिन्धी भाषा को संवैधानिक भाषा का दर्जा मिला था। इसकी स्मृति में प्रतिवर्ष १० अप्रेल को सिन्धी भाषा दिवस मनाया जाता है।

महाराजा दाहिरसेन का बलिदान दिवस– सन् ७१२ में सिंधुपति महाराजा दाहिर सेन मुहम्मद बिन कासिम से संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये थे। उनकी स्मृति में यह दिवस प्रतिवर्ष १६ जून को मनाया जाता है।

सिन्धु स्मृति दिवस– १५ अगस्त १९४७ को भारत आजाद हुआ था किन्तु इसका विभाजन १४ अगस्त को हो गया था। पूरा सिन्ध प्रदेश पाकिस्तान में चला गया था। अतः सिन्ध प्रान्त की स्मृति में यह दिवस प्रतिवर्ष १४अगस्त को मनाया जाता है। सिन्धी समाज इसे पुनः प्राप्त करने का इस दिन संकल्प दोहराता है।

अमर शहीद हेमू कालानी बलिदान दिवस– भारत के स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने वाले १९ वर्षीय हेमू कालानी को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया था। शहीद हेमू कालानी की स्मृति में २१ जून को यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

सिन्धु सभा का मुख्य नारा है-

सिन्ध भारत में था।

सिन्ध भारत के राष्ट्रगान में है।

सिन्ध भारत में रहेगा। □

– गोविंद रामनानी

अखण्ड भारत–स्वप्न और यथार्थ

अखण्ड भारत महज सपना नहीं, श्रद्धा है, निष्ठा है। जिन आंखों ने भारत को भूमि से अधिक माता के रूप में देखा हो, जो स्वयं को इसका पुत्र मानते हों, जो प्रातः उठकर **''समुद्र वसने देवि पर्वत स्तनमण्डले, विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यम् पादस्पर्शम् क्षमस्वमे''** कहकर उसकी रज को माथे से लगाते हों, वन्देमातरम् जिनका राष्ट्रघोष और राष्ट्रगान हो, ऐसे असंख्य अंतःकरण मातृभूमि के विभाजन की वेदना को कैसे भूल सकते हैं, अखण्ड भारत के संकल्प को कैसे त्याग सकते हैं? किन्तु लक्ष्य तक पहुंचने के लिए यथार्थ को पूरा जानना-समझना ही होगा अन्यथा अंग्रेजी की यह कहावत ही चरितार्थ होगी- 'यदि इच्छाएं घोड़ा होती तो भिखारी भी उनकी सवारी करते।'

अतः हमारे सामने प्रथम प्रश्न आता है कि भारत क्या है? क्या वह भूगोल है? क्या इतिहास है या कोई सांस्कृतिक प्रवाह है? उत्तर में हिमालय की उच्च प्राचीर और दक्षिण में महासागर से घिरी यह भारत भूमि किसी दुरूह प्राकृतिक दुर्ग जैसी दिखती है। अनन्त काल तक यह दुर्ग अभेद्य रहा है । भरत खण्ड की बाह्य सीमाएँ प्रायः अलंघ्य हैं और वृहद् भारत के भीतर कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है, कोई विभाजन रेखा नहीं है। इसीलिये हमें खण्डित भारत की सीमाओं की सुरक्षा के लिए अप्राकृतिक बाड़ बनानी पड़ रही है। प्रकृति ने तो भरत खण्ड को अखण्ड ही सृजा है। महर्षि श्री अरविन्द ने अखण्ड भारत को अपना आराध्य माना है। उनके पांडिचेरी आश्रम में अखण्ड भारत का नक्शा आज भी विद्यमान है। भारत को तोड़ने का प्रयत्न करते समय अनेक विदेशियों ने भी इसका विरोध किया था। लार्ड वेवेल ने कहा ''गाड हैज क्रिएटेड दिस कन्ट्री एज वन' यू केन नाट डिवाइड इट इनटू टू।'' ब्रिटिश संसद में बहस करते हुए क्लीमेंट एटली ने कहा ''दिस इज ऐ डिवाइनली डिजाइण्ड ट्राइएंगल'। अतः भारत का विभाजन एक कृत्रिम विभाजन है। जिसे श्री अरविंद घोष के शब्दों में' किसी भी प्रकार से समाप्त करना चाहिए।'

प्राकृतिक समृद्धि व एकरूप संस्कृति- हिमालय एवं महासागर के मध्य व्याप्त यह अखण्ड भूमि अकूत प्राकृतिक समृद्धि से मंडित है। भारत खण्ड अपने में विश्व के सबसे बड़े कृषि क्षेत्र को संजोए हुए है। विश्व की सर्वाधिक सिंचित भूमि इस खण्ड में है। इस खण्ड का प्रायः प्रत्येक भाग किसी बड़ी जीवनदायी सभ्यता की दात्री नदी के जल से पूरित है। इसके प्रायः समस्त भाग मानसून की सघन वृष्टि से आप्लावित रहते हैं। प्रायः सब स्थानों पर वर्ष पर्यन्त धूप चमकती है। यह भूमि अकेले ही समस्त विश्व का भरण करने में सक्षम है। कदाचित इसीलिए इसे भारत कहा जाता है।

ऐसी एकरूप, अखण्ड एवं समृद्ध भूमि पर एकरूप, अखण्ड एवं समृद्ध संस्कृति का उदय होना सहज ही है। भारत भूमि पर व्याप्त संस्कृति इतनी सहज, एकरूप एवं पुरातन है कि लगता है जैसे विधाता ने इस अद्वितीय भूमि और यहाँ की अनन्य संस्कृति को एक साथ ही गढ़ा हो। हिन्दू संस्कृति की अनन्यता एवं एकरूपता का विशद वर्णन भरत खण्ड की जनसांख्यिकी के प्रथम आधुनिक किंग्सले डेविस ने भी किया है।

अखण्ड भारत एक सनातन सत्य- भरत खण्ड की यह एकरूप अखण्डता ही सनातन सत्य है। गत कतिपय शताब्दियों में अपने भूगोल, अपने इतिहास एवं अपनी संस्कृति के प्रति किंचित विमोह एवं विभ्रम के कारण हम इस अखण्डता को सुरक्षित नहीं रख पाये। परन्तु यह विखण्डन मात्र तात्कालिक तथ्य है, सनातन सत्य नहीं है। इस सनातन सत्य को सर्वदा अपने समक्ष रखते हुए हमें शेष विखण्डित भारत में अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को सुदृढ़ करना होगा। अपनी शेष बची भूमि, साधनों एवं जनसंख्या को हिन्दू संस्कृति के लिए सुरक्षित-संरक्षित करना होगा और उस सुदृढ़ आधार से सम्पूर्ण भरत खण्ड में एकरूप हिन्दू संस्कृति की स्थापना के प्रयास करने होंगे।

भारत की अखण्डता का आधार भूगोल से ज्यादा संस्कृति और इतिहास में है। खंडित भारत में एक सशक्त सूत्रबद्ध, तेजोमयी राष्ट्रजीवन खड़ा करके ही अखण्ड भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ना संभव होगा। एकरूप हिन्दू संस्कृति से व्याप्त अखण्ड भारत की पुनर्स्थापना असम्भव नहीं है। इसे साकार करने के लिये हमें अखण्ड भारत के स्वप्न को संजोये रखना होगा। तात्कालिक वास्तविकताओं के आतंक में हमने स्वप्न ही खो दिया, संकल्प ही छोड़ दिया, तो सनातन सत्य की पुनर्स्थापना का कार्य कठिन हो जायेगा। □

– कैलाश चन्द्र
बी-१५, भारती भवन, जयपुर